श्रीरामचन्द्रोविजयते तमाम्।



प्रिय प्रेमी पाठक! यह लीजिये, आज "श्रीरामचन्द्र भूषण" आपकी भेट क
रता हूं। "हाथके कङ्गनको कहा आरसी" आप स्वयं सुविज्ञ है, इसके प्रत्येक
रत्नकी बहुमूल्यता अवश्यही अनुमान करलेंगे। निवेदन केवल इतनाही
मात्र है कि यदि किसीकारणवश स्वकण्ठमें विभूषित करनेका अवकाश
न पाइये तो मन मन्दिरहीमे स्थान दान देकर मुझे कृतार्थ कीजियेगा।

श्रीरामचंद्रभूषणकी विषयानुक्रमणिका ।



इत्यनुक्रमणिका ।



॥ श्रीगणेशायनमः ॥



॥ अथ रामचन्द्र भूषण लिख्यते ॥

॥ मङ्गलाचरण ॥

॥ वरवै ॥

श्रीगुरु गणपति शारद गोरीनाथ ।
भरत लषन रिपुसूदन सियवर साथ ॥१॥

॥ कवित्त ॥

बेलि फलिगई कौशिला के कामना की कल, फैल्यो भाग नाग नर सूरज सुमन को । लछिराम जाग्यो दशरथ को अखण्ड ओज, मण्डित भुवन दल्यो दावा दुसमन को ॥ रामचन्द्र, भरत, लषन, शत्रुहन चारु, ब्रह्म अवतार भार भूतल दमन को । गाज्यो रघुवंश अवतंश अमरेश राज्यो, औधअंश ढेर में सुमेर त्रिभुवन को ॥२॥

जोग वल जागे भाग नाग नर देवन के, सन्तन सरोज

को समीर समुदै भयो। लछिराम राम अवतार के अतङ्गही में, असुर अरातिन अमान अमुदै भयो ॥ भासमान अवध अमन्द उदयाचल पै, परम प्रताप की प्रभा को प्रमुदै भयो। चौदहो भुवन अवतंश राजवंश मणि, ब्रह्मराशि कौशिला उदर सौं उदै भयो ॥३॥

शङ्ख सुधा शशि धेनु रम्भा कल्पतरु मणि, मालाकार महिमा नखन के चरन में। अंकुश गजेन्द्र बाजि कमला कमल धनु, खल दण्ड कुलिश गरल आचरन में ॥ लछिराम जन बन लाली अनुराग मद, बेप ध्वज वैद्यराज आनँद भरन में। शोभा सिन्धु मथि रच्यो मनमथ मानो चारु, चौदहो रतन रामचन्द्र के चरन में ॥४॥

कौशल कलश महाराज राम रघुवीर, महारानी मैथिली सनेह समुदै रहैं। लछिराम शारद महेश बरदानी बेस, चार्‍यो वेद बिरद बितान क्रमुदै रहैं॥ मणि-मञ्च गज-रथ पालकी अरिन्द मौलि, रतन सिंहासन प्रकाश प्रमुदै रहैं। चार्‍यो फल चौदहो रतन स्यौं सचिदु घन, चार्‍यो युग चार्‍यो चरणाम्बुज उदै रहैं ॥५॥

शारद सभाग अनुराग में रतन चारें, परम प्रकाशमान भान अश ओज की। चैन भार सरल तरंगैं परिमल सङ्ग, नैन रामचन्द्र चारु चञ्चरीक चोज की ॥ लछिराम नखन महावर प्रभाली लसैं, लाली तरवान राशि चार्‍यो-फल मोज की। भूपन बिशाल भाल चौदहो भुवन रज, मङ्गलीक मैथिली के चरण सरोज की ॥६॥

॥ दोहा ॥

मांगत वर करजोरि युग, सीस नमित लछिराम।
रामचन्द्र भूषण रुचिर, ग्रन्थ बनै सुखधाम ॥७॥
श्री सीतावर चरित मय, अलङ्कार शुभ रीत।
बरने पण्डित कवि यथा, वा पथ परखि पुनीत ॥८॥

॥ अथ अलङ्कारस्वरूप वर्णन—दोहा ॥

वचन छन्द वर व्यङ्ग में, बिलग चमक परिमान।
भूषन वत पद अर्थ में, अलङ्कार अनुमान ॥९॥
युगल भांति परमान तिहि, प्रथमर्थालङ्कार।
शब्दा फिरि दूजो कहत, मन प्राचीन बिचार ॥१०॥

॥ अथ अर्थालङ्कार तथा पूर्णोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

सम समता बाचक धरम, उपमेयऽरु उपमान।
चार्‍यो जहँ पद अर्थ में, तहँ पूरन उपमान ॥११॥

॥ यथा—छप्पै ॥

गुरु वशिष्ठ तप राशि, विदित रतनाकर से वर।
महाराज दशरत्थ, भुवन रबि से प्रताप कर॥
चार्‍यो फल से कुँवर, चारु सुर नर मन मोहैं।
कौशिल्या केकई सुमित्रा, छवि लों सोहैं॥
लछिराम सुधा सरि सीस रजु, वन प्रमोद तट लहि लहर।
अमरेश-पुरी लों जगमगै, अवध नगर आनन्द बर ॥१२॥

॥ कुण्डलिया ॥

सजल श्याम--घन से लसत, सिंहासन श्रीराम।
शुभग सची लों मैथिली, अङ्क वाम अभिराम॥

अङ्ग श्याम अभिराम, लषन सुरतरु से फूले।
भरत शत्रुघ्न सुमत, भ्रमर से विहरत भूले॥
वरनै कवि लछिराम, गुञ्जरत मन्दर से गज।
जयति कोशलाधीश, नवल गौरी घर से सज॥१३॥

॥ कवित्त ॥

सुरभि समीर मुकुलित वन बागन मैं, छीर सर सरिता समोज समुवै वयो। लछिराम रङ्ग राग नगर वगर घर, नाग नर देवन प्रकाश प्रमुवै वयो॥ गणपति गौरि शम्भु शारद असीसैं देव, इन्द्रहू तैं असुर अतङ्क अमुवै गयो। कौशल क लस रामचन्द्र वाल–सूरज लौं, ब्रह्मराशि कौशिला उदर सौं उवै भयो॥१४॥

॥ पुनः ॥

काछनी कमर लसे छोरैं पटुका की पीरे फहरैं वसन हीरे लाल गुन गथ के। लछिराम ललित हरीरे धनु–बान कर, लोचन विशाल भाल भाग समरथ के॥ रामचन्द्र भरत ल षन रिपुसुदन पै, वै रहे अपार ओज आनँद अकथ के। क रत विहार सङ्ग तीर सरयू पै चारौं–फल से कुमार महाराज दशरथ के॥१५॥

॥ पुनः ॥

कीरति अमन्द चारु चन्द चन्द्रिका सी फैली, चढ्यो दान दुनौं देवराज दरसन सौं। युगुल जसीले भुजदण्ड पै अखण्ड सांने, समर प्रचण्ड ब्योम खम्भ तरपत सौं॥ लछिराम नाग नर सागर मगन पीनैं, राजहंस वंस मिसिरी के सरयत सौं।

दूषन दुखद सुर सङ्कमी समाजैं राम, रघुवंश भूषन सुमेर परवत सों ॥१६॥

॥ पुनः ॥

सौरभित सीरे जागैं युगुल जसीले कर, मेंहदी चलित अरविन्द अरुनारे से। लछिराम चिन्तामणि आरसी से ओज दार, वदन समौज देवि रूप लों सँवारे से ॥ पांवड़े सुमन परिपूरन प्रकाशमान, ढारे सकुचनि गौन गज मतवारे से। मण्डित महावर चरन मैथिली के मंजु, मानिक महल खिलैं थलज हजारे से ॥१७॥

॥ पुनः ॥

शुभग सुरङ्ग नैन विरद वहाली सङ्ग, बिकसत मौज में सरोज मानसर से। वदन बिशाल भाल परम प्रकाश ओज, वगरि बिराजैं लछिराम बिज्जु वर से ॥ भुज फरकीले आंगुरीन में नवल नख, आबदार मंजु मुकताहल के लर से। राव रामचन्द्र के युगल कर दान बारि, बरसत बारहो महीने जलधर से ॥१८॥

॥ अथ तवकोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

अर्थ सदृश में जहँ परे, समता सम उपमान।
जहँ तहँ मिलि तवकोपमा, अलङ्कार परमान ॥

॥ यथा कवित्त ॥

शरद कलाधर सों बदन बिशाल जैसो, विहँसनि तैसी चारु चन्द्रिका उमङ्ग की। युगल जसीले जिमि अरविन्द से हैं नैन, लखनि तिरीछी तिमि आनँद प्रसङ्ग की ॥ लछिराम रामचन्द्र भुज फरकीले जैसे, तैसी वसीकरन सगुन मौज रङ्ग

की । सिरमोर मण्डलीक अवधपुरी है जैसी, तैसी धार तरल तरंगें रामगङ्ग की ॥२०॥

॥ पुनः ॥

लखन कुमार जैसो दाहिने लसत तैसो, वाम भाग शत्रुहन सुखमा समाजे है। भूपन भुअन जैसो सामुहे भरत पीछे, तैसोई सुमन्त गुणधीरता जहाजे है ॥ लछिराम जैसे वाजि वरही कुरङ्ग तैसी, बांक बरछेती रघुवंशिन वराजे है। विरद अखंड राम रघुवीर जैसो तैसो, वीर अमनेक महावीर सों विराजे है ॥२१॥

॥ अथ पूर्णोपमामाला वर्णन—दोहा ॥

जहँ अगनित उपमेय को, विरचि एक उपमान ।
अलङ्कार मालोपमा, वर्णनीय परमान ॥२२॥

॥ यथा कवित्त ॥

चन्द्रिका सी दीपति मदन की विराजे वर, विहँसनि वेस चन्द्रिका लों विलसति है। भाल स्योर चन्दन चमक चारु चन्द्रिका सी, चन्द्रिका सी हीरा मोती कलँगी बसति है ॥ चन्द्रिकी सी कर में नवल नख माला जोति, लछिराम चन्द्रिका कृपान हुलसति है। राव रामचन्द्र धीर चार्‌यो जुग रावरे की, चार्‌यो दिसि चन्द्रिका सी कीरति लसति है ॥२३॥

॥ अथ धर्म्मभिन्नमालोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

वर्णनीय एक धर्म्म पर, कल्पित बहु उपमान ।
धर्म्मभिन्न मालोपमा, प्राचीनन मत जान ॥२४॥

॥ यथा कवित्त ॥

आयकर फलकि फवीलो कीर चन्द्रिका सो, उन्नत अमल

हिमालय के हजारा सों। लछिराम बिलसत भूपर झलक भन्यो, छलकत हीरा गज गोहर के थारा सों॥ सौरभित सीरो मलयज सों मजेजदार, सातो दीप दीपति में थरकत पारा सों। चौदहो भुअन रामचन्द्र को सुजस फैल्यो, मङ्गलीक नवल धवल गङ्गधारा सों ॥२५॥

॥ अथ एकधर्म्ममालोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ उपमान अनेक रचि, एक धर्म्म की रीति।
एक धर्म्म मालोपमा, बरनै सुकवि सप्रीति ॥२६॥

॥ यथा कवित्त ॥

जेठ भान कर से कपिल कोप लर से हैं, माला सों दवानल त्यों गजब गहर से। काल बिकरारे से कुमार दामिनी से देव, दारुन कला से प्रलै सिन्धु की लहर से ॥ लछिराम जालिम जँजीरे जमजाल से ये, कालदण्ड ख्याल से कमालिया कहर से। कालिका कृपान मुण्डमाली के त्रिशूल से हैं, रामचन्द्र बान फनमाली के जहर से ॥२७॥

॥ अथ अनेकधर्म्म मालोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जबहिँ वहुत उपमेय को, सम सुबहुत उपमान।
सम अनेक मालोपमा, नव प्राचीन प्रमान ॥२८॥

॥ यथा सवैया ॥

भाल पै हीरन की कलँगी, लरकैं नषतावली के लर से हैं। आनन ओज कलाधर से, लछिराम हँसैं छटा श्री बरसे हैं॥ बाँहैं मृणाल सी कञ्चन से कर, मौज उमाहैं हरा हरसे हैं। सातऊ दीप में श्रीरघुबीर, प्रकाश प्रताप दिवाकर से हैं॥२७॥

॥ अथ धम्मलुप्तोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

वर्णनीय वाचक धरम, अरु उपमान सुवेस।
इनहि घटाये तीनिलौं, लुप्तोपमा सुदेस ॥२८॥

॥ अथ धम्मलुप्तोपमा,—यथा सवैया ॥

बाँहैं भुजङ्ग सी पल्लव से कर, आगुरी पै नख हीरक हार से। त्यों लछिराम घटान से रङ्ग, प्रभा विहँसे मुकताहल थार से ॥ ये भ्रमरावली लौं जुलफै, जुग भौंहैं कमान सी आनन मार से। बाल मयङ्क लौं भाल थली, रघुनाथ के लोचन खञ्ज कुमार से ॥२९॥

॥ अथ वाचकलुप्त,—यथा सवैया ॥

मृदु माधुरी हांसन ही मनमें, मुकतालर को बरसावत हैं। अति ओज प्रभाकर की महिमा, मिथिलापुर में दर सावत हैं ॥ लछिराम सुरूप मनोहर राज-कुमारन को तर सावत हैं। रघुनाथ कलाधर आनन की, परमा रस में सर सावत हैं ॥३०॥

॥ अथ उपमेय लुप्त,—यथा सवैया ॥

सांवरे गोरे घटा छटा से, विहरैं मिथिलेश की बाग थली में। दोने धरे अरविन्दन पै, अवलोकि रहे तरु की अवली में ॥ त्यों लछिराम सुरेस कुमार से, आनन की रुचि भांति भली में। ब्रह्म की राजसिरी सी दुहून के, चन्दन स्योर है भाल थली में ॥३१॥

॥ अथ उपमान लुप्त,—यथा सवैया ॥

आनन पै चढ़ी ऐसी प्रभा, चढ़ी लालिमा सी दृग पङ्क

सँवारे। त्यों फरकीले भुजा बलवन्त, उदार से हाथ लसैं गजरारे॥ धूम गोराई व स्यामता की, लछिराम लखैं मिथिलेस जो हारे। लक्खन राम से राज समाज में, राजत कौन महीप के बारे॥३२॥

॥ अथ धर्म्मवाचक लोप,—यथा सवैया॥

लोचन बान हैं भौंहैं कमान, कलाधर आनन भूषन तारे। भाल मसाल मरालिया गौन, मिले बिहँसै मुकताहल थारे॥ मङ्गल मूरति मंजु मनीन के, माल गरैं लछिराम हजारे। लक्खन राम सुरेस कुमार, सुरेस कुमार स्वयम्बर वारे॥३३॥

॥ अथ उपमान उपमेय लुप्त—यथा दोहा॥

बाल बेषधर ख्याल से, बिलसत वर बनमाल।
जनक स्वयम्बर जगत से, दरसत राज मराल॥३४॥

॥ सवैया॥

कान की छोरन मंजु मरोरन, लालिमा में भरे लोचन बाढ़े। चन्दन ख्योर पै स्वेद के बुन्द, चढ़ीं चल भौंहैं गरूर में गाढ़े॥ बाहैं बली फरकैं लछिराम, सही रघुबीर यों बीरता माढ़े। श्री मिथिलेस मुनीस के सौंहैं, सरासन शम्भु को हेरत ठाढ़े॥३५॥

॥ अथ उपमेय धर्म्म लोप,—यथा सवैया॥

त्यौर तिरीछी किये मुनि सङ्ग में, हेरत शम्भु सरासन मार से। त्यों लछिराम दुहू कर बान, कमान लौं भौंहैं सुब्रह्मवतार से॥ सामुहे श्री मिथिलापति के, अभिराम सही

रस बीर सिंगार से । नीलम चम्पक हार से कौन, स्वयम्बर में मृगराज कुमार से ॥३६॥

॥ अथ वाचक उपमेय लुप्त,—यथा बरवै ॥

सरद कलाधर बिहरत मञ्जुल साज ।
बीथिन अवध बिराजत नृप सिरताज ॥३७॥

॥ अथ उपमान धर्म्मलोप,—यथा बरवै ॥

रघुबर सों को त्रिभुअन भुज बलवन्त ।
धनु सो भयो कहा कर गिरजा कन्त ॥३८॥

॥ अथ उपमानवाचक धर्म्मलुप्त—यथा बरवै ॥

राजमहल रघुनन्दन चन्दन स्योर ।
भरत लषन रिपुसूदन लोचन कोर ॥३९॥

॥ अथ उपमेयवाचक धर्म्मलोप—यथा बरवै ॥

चपल स्याम घन चपला सरजू तीर ।
मुकुत माल मय बारिज भ्रमर जँजीर ॥४०॥

॥ अथ वाचक उपमान उपमेय लोप—यथा बरवै ॥

दान बारि सों सींचत त्रिभुवन हेरि ।
असुर सेन हनि राखत धरमहि फेरि ॥४१॥

॥ अथ उपमान उपमेय धर्म्म लोप—यथा बरवै ॥

आप समान सुरेसहि समुझि सकोप ।
रावन मन में राखत आकर ओप ॥४२॥

॥ अथ चारौ को लोप पूर्ण लुप्त—यथा बरवै ॥

अङ्गद सो कहिं तारा बिरथ सँभार ।
मम सोहाग हरसोहिं तिनहि निहार ॥४३॥

॥ अथ उपमा के भेद वर्णन—दोहा ॥

शब्द सुनत में होय जब, वाचक ज्ञान सुवेस ।
तहँ श्रोती उपमा कहत, नागर कवि गन देत ॥४४॥
अरथ निरूपण में जहां, समुझि परै सुख साज ।
तहँ उपमा गनि आरथी, जे कविन्द सिरताज ॥४५॥

॥ अथ अनन्वया लङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहां होय उपमेय को, उपमेयै उपमान ।
अलङ्कार बरनै तहां, अनन्वया सुखदान ॥४६॥

॥ यथा सवैया ॥

वारिज बीरबधूटी प्रभाकर, मन्द परैं रजनी परमाली । ज्वालामुखी बड़वानल को, लछिराम त्यों धूम धुजी सिखराली ॥ छार करैं खल बंशन को, अवतंश हितून पै अंश गुलाली । श्री रघुनाथ प्रताप लौं भूपर, श्री रघुनाथ प्रताप की लाली ॥४७॥

॥ कवित्त ॥

राम सम राम मैथिली लौं मैथिली की प्रभा, लषन सो लषन सहायक हमेस को। लछिराम ललित भरत शत्रुहन सम, ललित भरत शत्रुहन है सुबेस को ॥ कैकई सी कैकई सुमित्रा लौं सुमित्रा देवि, दानी रघुबंश बरदानियां महेस को। कामधेनु कौशिला सी कौशिला कलपतरु, कौशल सों कौशल नगर कौशलेश को ॥४८॥

सुघर सुकण्ठ सों सहायक सुकण्ठ भूप, अङ्गद सों अङ्गद अमोल अनुमानो मैं। सेवक सबल हनूमान सों अभङ्ग जङ्ग, हनूमान सेवक सबल सनमानो मैं ॥ लछिराम कनक

भवन सो कनक भौन, रामगङ्ग सम रामगङ्ग मोज मानो में। त्रिभुवन मौलि राव रामचन्द्र मैथिदी लों, रात्र रामचन्द्र मेथिदी को परमानो में ॥४९॥

॥ सवैया ॥

मांझ स्वयम्वर में मिथिलेस के, राम सी राम की लालिमा छाई। रूप की राशि प्रकाशिका लों, विजैमाल गरे पहिरावन आई ॥ यों लछिराम लसी कर कञ्ज में, भारती के मन को भरमाई। मैथिदी सी तिहुंलोकन में, मिली मैथिली की शुभ सुन्दरताई ॥५०॥

॥ पुनः ॥

सूरज से चढ़े ओज अमन्द, मलीन परे नृप मण्डल तारे। श्री मिथिलेस के आनन पै, चढ़े औरई ओज अनन्द पसारे ॥ को बरनें लछिराम समा, जयमाल जवै गरे मङ्गल डारे। राम से राम सिया सी सिया, सिरमौर विरञ्चि विचारि सँवारे ॥५१॥

॥ अथ उपमानोपमेय अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ उपमा उपमेय को, परसपरी व्यवहार।
तहँ उपमा उपमेय कहि, भूषन आनँद हार ॥५२॥

॥ यथा कवित्त ॥

भरत लषन शत्रुहन मोर मण्डली लों, मोर-वृन्द भाग भरतादि के समा सो है। लछिराम भर मघावान रघुवंशिन सो, वान रघुवंशिन को झरनि मघा सो है ॥ मालाकार वीजुरी लों मैथिली विलास वर, मैथिली विलास बीजुरी की

अरमासी है। राम रघुबीर श्याम घन परमा सो भन्यो, श्याम घन राम रघुबीर परमा सो है ॥५३॥

॥ पुनः ॥

गोरे अङ्ग रङ्ग चारु चम्पक बरन वारे, हरष हलोरैं मौज मन्द बिहँसन की। ख्योर कासमीरी पीरी पाग त्यों युगल भाल, कोरैं लाल कलँगी मरोरैं जुलफन की॥ लछिराम तेज तरुनापन हरनि अंस, वदन दुहू पै परमाली श्री लहन की। तिरछौहैं भौंहैं शत्रुहन सी लषन लसैं, लषन सी भौंहैं तिरछौहैं शत्रुहन की ॥५४॥

॥ सवैया ॥

श्री अमरावती लौं मिथिला, मिथिला सम श्री अमरावती मोहैँ। सागर छीर स्वयम्बर सो, त्यों स्वयम्बर सागर छीर बनो हैँ॥ सारद मैथिली सी लछिराम, सुमैथिली सारद लों गुन जोहैँ। लक्खन राम कलाधर से, सु कलाधर लक्खन राम से सोहैँ ॥५५॥

॥ अथ प्रतीप अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

बर्णनीय को होय जब, सब सुरूप उपमान।
बरनत प्रथम प्रतीप तहँ, पण्डित सुमति निधान ॥५६॥

॥ यथा कवित्त ॥

नवल नकीब से अलापचारी कोकिल त्यों, चारन से चञ्चरीक आनँद अतूले हैं। सेनप सुबीर से बिहङ्ग बिहसीले सोर, लछिराम सर से सुमन्त्र सजमूले हैं॥ बिरद बितान रघुबंशिन से बाग बन, भाग्र भरे दल से बिलास अनुकूले

हैं। रावरे प्रताप से महीप रामचन्द्र चारु, किंशुक अनार क चनार कत्त फूले हैं ॥५७॥

॥ सवैया ॥

पायन से गुल्लाला जपा दल, पङ्क बधूक प्रभा बिथरे हैं। हाथ से पल्लव नोल रसाल के, लाल प्रभाव प्रकाश करे हैं॥ लोचन की महिमा सी त्रिबेनी, लखे लछिराम त्रिताप हरे हैं। मैथिली आनन से अरविन्द, कलाधर आरसी जानि परे हैं ॥५८॥

॥ अथ द्वितीय प्रतीप–दोहा ॥

जबहिं होय उपमान सो, वर्णनीय अपमान।

तहँ दूसरो प्रतीप कहि, नव प्राचीन प्रमान ॥५९॥

॥ यथा कवित्त ॥

कालिल रुके न चाटे चरबी रुधिर चल, खल भल पीरति खलक जोम लाली को। लछिराम वार में असुर मुण्डमाल दे दे, बरदान पावे मुण्डमाली महाकाली सो॥ ज्वाली जङ्ग जोहर जवान जहरीली माहिं, प्रबल अतङ्क प्रलयानल प्रनाली को। सङ्ग सान रावरी कृपान राव रामचन्द्र, हेरे क्यों न पन्नगी हजार फन वाली को ॥६०॥

॥ सवैया ॥

वारनवृन्द सो स्याम घटा, अरुझानी रहे सिपराली पहार है। त्यों लछिराम प्रताप सों रावरे, सूरज बारहो को अवतार है॥ औध सो श्री रघुनाथ नरेश, बन्यो अमरावती मल्लचार है। कीरति कैसे गरूर करै धरा, या विधि पावन गङ्ग की धार है ॥६१॥

॥ अथ तृतीय प्रतीप वर्णन—दोहा ॥

वर्णनीय सों होय जब, अन आदर उपमान ।
तहँ तीसरो प्रतीप है, पण्डित राव प्रमान ॥६२॥

॥ यथा सवैया ॥

भाल बिसाल पै राजसिरी जगै, लोचन में लसै लालिमा नीकी । आनन ओज पै त्यों अभिराम, कहा कलाचन्द कलिन्द अनी की ॥ हेरि स्वयम्बर में लछिराम, थकी मति राजन की अवली की । श्री रघुबीर सिया छवि सामुहैं, स्याम घटा बिजुरी परै फीकी ॥६३॥

॥ अथ चतुर्थ प्रतीप वर्णन—दोहा ॥

सर बर में उपमेय के, जब न तुलै उपमान ।
चौथो भेद प्रतीप तहँ, बरनत बुध सुखदान ॥६४॥

॥ यथा कवित्त ॥

दाहक असुर कर परसत सीरो सुर, रैनिदिन बिरद बरावै निहारो में । सुहृद सरोज सांझ सम्पुटित होत याके, बन जन फूले त्रिभुवन के अखारो में ॥ समता तुलै न हेरै भरमत अम्बर में, राहु की डरन थरकत जुग चारो में । पावन प्रभाकर प्रताप रामचन्द्र सोहैं, कैसे कला बारहो बिभाकर बिचारो में ॥६५॥

॥ अथ पञ्चम प्रतीप वर्णन—दोहा ॥

वर्णनीय के सामुहैं, व्यर्थ मान उपमान ।
पञ्चम भेद प्रतीप को, तहँ बिरचत गुनमान ॥६६॥

॥ यथा कवित्त ॥

मण्डन भुअन फरकीले भुजदण्ड बल, वजर गुमान म-

घवान के दलत हैं। जुगल जसीले कर मोज के उमङ्गन में, कलपलता के दीह दल को मलत हैं॥ साहिबी सरम राज नीति के धरम सोंहैं, शङ्कर सुमेरहू के रङ्ग घदलत हैं। गज मुकताहल सुजस रामचन्द्र आगे, अपर महीप जस ओरे लों गलत हैं॥६७॥

॥ अथ रूपक अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ अभाव वाचक धरम, विषयी विषय विलास।
करि एकै गुन थापिये, रूपक भूषन रास॥६८॥
करि सुरूप एकै कहूँ, कहुँ न भेद गुन हीन।
अधिक होत सम त्रिविधि ये, बरनत मत प्राचीन॥६९॥

॥ अथ तद्रूप रूपक अधिकोक्ति—यथा कवित्त ॥

बसत मलीन बर यामी मैं बिसासी यह, मखमली म्यान सो लहर बाज लाली तें। लछिराम जङ्ग धूमधाम की लपट यामैं, वह दधिजाति परसन मुख हाली तें॥ वह काटि मागे यह कातिल रुकै न राव रामचन्द्र कर बर पावें मुण्डमाली ते। जौहर ज्वलित भरी कहर कृपान यह, अधिक बहाली कन्नमालिनी कनाली तें॥७०॥

॥ अथ तद्रूप रूपक हीनोक्ति—यथा सवैया ॥

चञ्चल चारु चुने सब रङ्ग मैं, होत लखा कर लेत लगाम के। बाग मरोर मैं मोर धजी, कल बोलत आनँद मैं गुन ग्राम के॥ बाकुरे घोते कुरङ्गन पै, लछिराम मही महिमा अभिराम के। सागर फाँदिबे को फफँदे, पर—हीन परिन्द महीपति राम के॥७१॥

॥ अथ तद्रूप रूपक समोक्ति—यथा कवित्त ॥

रदन बलाका बिज्जु भूखन चमक भाल, पँचरँगी बेषैं रङ्ग धनु सरसत हैं। ककुभ कलोलैं भिरे मन्दर फिरत फूले, फैलि सङ्कवारेन के अङ्ग परसत हैं ॥ लछिराम गरजैं कुमार अन्धकार कैसे, कजरारे अखुर जँवासे झरसत हैं। सावन फुहारे गंड मंडित भसुण्ड मग, रामचन्द्र गज मतवारे बरसत हैं ॥७२॥

॥ अथ अभेद रूपक अधिकोक्ति—यथा कवित्त ॥

गरजि ककुभ कुञ्जरीन सों कुलेलैं करैं, छोड़त फुहारे फैलि सुण्डन हजारा को। बिरचैं सु लछिराम चहलै अजब गैल, बदन चमक बिज्जु आनँद अपारा को ॥ कारे लाल पीरे हरे भूषन जवाहिर के, रङ्ग साज राम देवराज के अखारा को। बारिद बगर बर वारन झमक झूमैं, बरसत बारहौ महीने बारिधारा को ॥७३॥

॥ अथ अभेद रूपक हीनोक्ति—यथा सवैया ॥

पावन सीतल बारि सुबेस, किये धरा धौल सबै लहरी है।
मानस मंजु मुनीसन के, भरै आनँद आले प्रभा फहरी है ॥
ध्यानहु तें अघओघ हरैं, लछिराम तिहूंपुर मैं ठहरी है। कीरति गङ्ग तरङ्गनि राम, करार के नाहर हू छहरी है ॥७४॥

॥ अथ अभेद रूपक समोक्ति—यथा सवैया ॥

साखैं भुजा फरकीली बहार मैं, पल्लव हैं करत्यों अरुनारे।
ये सुमनावली हैं नख बृन्द, मलिन्द सुरूप त्रिलोक निहारे ॥
मेटै ललाट कुअङ्क बिरञ्चि, सदा रस एक समोज सँवारे।
कामना आठऊ जाम फलैं, कल्पद्रुम राम नरेस हमारे ॥७५॥

॥ अथ अपर रूपक वर्णन—दोहा ॥

भौरो रूपक चतुर विधि, बरने बुध मति मान।
प्रथम निरक्षत दूसरो, परस्परित परमान ॥७६॥
पुनि प्रमान कहि तीसरो, सन्धन मन सरसाय।
फिर समस्त विषयक दिये, चौथे भेद लखाय ॥७७॥

॥ अथ निरक्ष रूपक वर्णन—यथा सवैया ॥

मालपै मोतिन की कलँगी मनि, मानिक माल गरे मन भावै। भौंहैं कमान त्यों लोचन बान, बिलोकनि खंजर हू तैं समावै॥ पानि सरोज मृणाल भुजा, लछिराम समा सुभ सागर पावै। राम घटा अँग द्रोपति मैं, मुसकानि छटा निरखे घनिआवै ॥७८॥

॥ अथ परम्परित रूपक वर्णन—यथा दोहा ॥

सुर समाज सीतल करन, मलयज मलय समीर।
बैरी घन दाहक प्रबल, बड़वानल रघुबीर ॥७९॥

॥ अथ परिणाम अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

करै क्रिया उपमान रुचि, वर्णनीय को रूप।
अलङ्कार परिणाम तहँ, बरनत कवि कुल भूप ॥८०॥

॥ यथा कवित्त ॥

स्याम घन बरन बिराजत बसन पीरे, सिरपेच हीरेलाल हिलत सँवारे हैं। लछिराम जुगल जसीले फरकीले भुज, भाल अक्षत भेद थर बिरद पसारे हैं॥ तरकसी कन्ध काक पक्ष की लटक, नैन चपल तिरीछे खञ्जरीट सों निहारे हैं। ताडुका सुबाहु सीस कसिके कमान; रामचन्द्र करकमल अमूक बान मारे हैं ॥८१॥

॥ पुनः ॥

सोहैं मुनि मंडली महान वेद मंत्रन सों, मङ्गलीक मष धूम मन सरसावै हैं। मंडन भुअन दसरथ के सराही भाग, सुन्दरी सुमन की सुमन बरसावै हैं॥ लछिराम रामचन्द्र लखन सुरूप हेरि, बिहँसि किरातिनै कुतूहल मचावै हैं। पुलकि पसीजे गजरारे हाथ पल्लव सों, गुञ्ज गज मोतिन के हार पहिरावै हैं॥८२॥

॥ अथ समस्त विषयक रूपक वर्णन—दोहा ॥

विषय जबहि आरोपिये, सकल वस्तु के साथ।
लखि समस्त विषयक तबहिं, अलङ्कार सुभ गाथ॥८३॥

॥ यथा कवित्त ॥

झमकैं मतङ्ग झख राज सङ्ग परिहरि, रथैं बाजि माला मीन सुखमा सरीर की। मन्दर पताके वारि वानर बिराट फैले, आंचे ओज बैरिन पै बाड़व के भीर की॥ लछिराम राछ ब्याल बरबस बोलैं खुले, बोहित हरौल थाहैं लखन के धीर की। आनँद अभङ्ग राजैं तरल तरङ्ग सङ्ग, सागर गँभीर सेना राम रघुबीर की॥८४॥

॥ पुनः॥

गुञ्जरत कुञ्जर कुलेल मैं गरज घोर, रदन बलाक फुही फहर बिसेस को। लछिराम सातौ दीप सीरी सुभ नीति पौन, बिरद असङ्ग मही महक प्रवेस को॥ श्याम घन रामचन्द्र मैथिली अचल बिज्जु, लषन भरत शत्रुहन मोर बेस को। बारहौ महीने बर बरसैं रतन बारि, दरबार आरिद बगर कौशलेश को॥८५॥

॥ अथ अपर रूपक वर्णन—दोहा ॥

औरौ रूपक चतुर विधि, बरने बुध मति मान।
प्रथम निरङ्गन दूसरो, परस्परित परमान ॥७६॥
पुनि प्रमान कहि तीसरो, रन्यन मन सरसाय।
फिर समस्त विषयक दिये, चौथे भेद लखाय ॥७७॥

॥ अथ निरङ्ग रूपक वर्णन—यथा सवैया ॥

भालपै मोतिन की कलँगी मनि, मानिक माल गरे मन भावै। भौंहिं कमानें त्यों लोचन बान, बिलोकनि खंजर हू तैं सभावै॥ पानि सरोज मृणाल भुजा, लछिराम सभा सुख सागर पावै। राम घटा अँग दीपति मैं, मुसकानि छटा निरखे घनिआवै ॥७८॥

॥ अथ परस्परित रूपक वर्णन—यथा दोहा ॥

सुर समाज सीतल करन, मलयज मलय समीर।
बैरी बन दाहक प्रबल, बड़वानल रघुबीर ॥७९॥

॥ अथ परिणाम अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

करै क्रिया उपमान रचि, वर्णनीय को रूप।
अलङ्कार परिणाम तहँ, बरनत कवि-कुल भूप ॥८०॥

॥ यथा कवित्त ॥

स्याम घन बरन बिराजत बसन पीरे, सिरपेच हीरेलाल हिलत सँवारे हैं। लछिराम जुगल जसील फरकीले भुज, थाल ब्रह्म बेष बर बिन्द बगारे हैं॥ तरकसी कन्ध काक पक्ष की लटक, नैन चपल सिरीछे खञ्जरीट सों निहारे हैं। ताड़ुका सुबाहु सीस कसिके कमान, रामचन्द्र करकमल अनूप बान मारे हैं ॥८१॥

सिरताज राज महाराज राम रघुबीर, दानी दीनबन्धु बीर कौशल नगर को ॥९०॥

॥ पुनः ॥

श्यामघन सोहैं मुनि मंडली मयूरन को, पुरुष पुरातन प्रमान बेद बर को। मौज में सरासन सिरोमनि महेश जान्यो, ठान्यो देव वृन्द या प्रकास जोति बर को ॥ लछिराम राजबंस कामद कलस गन्यो, जन बन दानियां सुमेर सब थर को। मिथिला सुरेस प्राननाथ मैथिली त्यों, मान्यो मिथिलेस बाल ब्रह्म रूप रघुबर को ॥९१॥

भूषित भुजङ्ग परमानत महेस मंजु, सीसा कञ्ज नाल गनपति गौरि भाषैं हैं। बर गजराज के बिचारैं खल सुण्ड जन, बल्ली भवसागर तरन अभिलाषैं हैं॥ लछिराम जुगल जसीले परमानै खम्भ, असुर अभेरैं कालदंड रुख राषैं हैं। रावरे प्रचंड भुज दंडन को रामचन्द्र, त्रिभुवन मानत कलप तरु साषैं हैं ॥९२॥

॥ अथ द्वितीय उल्लेख वर्णन—दोहा ॥

बहु गुन मंडित बरनिये, बहु बिधि एक सुरूप।
तहँ दूजो उल्लेख कहि, पंडित कवि रस रूप ॥९३॥

॥ यथा कवित्त ॥

मन्दर महीपन में सुन्दर सुमेर बर, देवन में ब्रह्मरूप रासि के अतन हो। राजहंस नीति में अनीति के कराल, काल दान सनमान बेलि राखत जतन हौ॥ जङ्ग जैत जुगल जसीले फरकोले भुज, बारन उबारन बिरद बरतन हौ। कलश प्रभाकर सुबंस राव रामचन्द्र, गुन रतनाकर के चौदहो रतन हौ ॥९४॥

॥ पुनः ॥

मुखर गँभीर चान्यो धीर को विलास बर, सक्ष्मी स विज्जु मैथिली है जोति सत्ता की। अङ्गवादि भूपन सभासद मयूर मंजु, सन्त मुनि मण्डली समीर छेम छत्ता की॥ लछिराम असुर जवासे झरसत जङ्ग, अलबेली, आनि बाति जलधर मत्ता की। दान बारि मौजै सिरछौहैं इन्द्र धनु चारु, भौहैं चढ़ीं रामचन्द्र कौशल चकत्ता की ॥८६॥

॥ अथ समस्त विषयक परिणामालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ समस्त विषयक विषे, मिलि परिणाम प्रकास।
सकल विषय परिणाम तहँ, बरनत सुमति विलास ॥८७॥

॥ यथा सवैया ॥

छीर कौ स्वच्छ सरीर छटा मलें, मंडित माल विसाल भ न्यो मरे। त्यों लछिराम अवेव औ वेवन को, मन वेलिवे को हहन्यो हरे ॥ सक्ष्मी गंग तरङ्गित धीरता, सोहैं समीप मनोरथ यों करे । सागर श्री रघुनन्दन के कर-कञ्ज सो, मानिक मोती झन्यो करे ॥८८॥

॥ अथ उल्लेखालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जबहिं एक को वर्णिये, बहुत समुझि बहुरीति।
अलङ्कार उल्लेख तहँ, भाषत सुकवि सप्रीति ॥८९॥

॥ यथा कवित्त ॥

पोहित विसाल भवसागर भयङ्कर पै, अधम उधारन पकेती के रगर को। लछिराम शारद महेश वरदानी ब्रह्म, जैसे मार ज्वाली अङ्ग रावन झगर को॥ चिरजीवे चान्यो जुग चौदहो भुवन पति, भानवंश बिरद वितान के बगर को।

॥ अथ शुद्धापन्हुति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

तदाकार आरोपिये, पूरव धर्म्म दुराय।
शुद्धा पन्हुति तहँ कहैं, अलङ्कार कबिराय ॥१०६॥

॥ यथा सवैया ॥

सम्भु सरासन तोन्यो सही, दिवि लों जगै जोति प्रकास पसान्यो। सातऊ दीपन में जस कै, लछिराम महीपन को मद गान्यो ॥ पून्यो मनोरथ मैथिली को, मिथिलापुर में मन मोहनी डान्यो। राज कुमार नये रघुबीर, अनङ्ग बिजै कर रूप सँवान्यो ॥१०७॥

॥ पुनः ॥

मण्डित फेन लका से लगाम तैं, ऊपर भू थरकैं जथा पारे। गौर गनै न गिरिन्दऊ को, लछिरास न मानैं नदी नद नारे ॥ बाज लौं बैरी लवा पै परैं, लखि वारैं परी मुकताहल थारे। राम नरेस के थे न तुरङ्ग, परिन्द हैं सूरज के रथ वारे ॥

॥ अथ हेतु अपन्हुति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

वस्तु युक्ति बल सों दुरै, बरनै और प्रभाव।
हेतु अपन्हुति समुझि मन, बिरचत पंडित राव ॥१०९॥

॥ यथा कवित्त ॥

दीरघ दतारे भारे दिगपाल मंडल तैं, बिरचत कीच मग मद के पनारे हैं। झूमत झमकि झनकारत जँजीरैं जोर, बन्दन बलित रंग सुर धनु टारे हैं ॥ गजराज राव रामचन्द्र के सु लछिराम, गरजनि छोड़ैं सुण्डा दण्डनि फुहारे हैं। बरसत बरहो महीने बारिधारा मेघ, मंगलीक मंडित मजेज मतवारे हैं ॥११०॥

छटा है नखतावली की, रसराज ऊपर अजूबा अवतार की। हीरालाल वलित ललित मोर संग कैधों, कलँगी फलित भाल भरत कुमार की ॥१०२॥

॥ पुनः ॥

कैधों रूप रासि के प्रकास पै सुमंगलीक, बनते वसी करन मंत्र लहरेले को। रंग वार कैधों अनुराग रामचन्द्रही को, जगमग्यो भाल पै सुभाग ब्याह बेले को ॥ लछिराम कैधौं रसबीर के सिखर सोहैं, मेला रवि-चन्द्र की मरीचिन झमेले को। मौर सों मलित अलबेली जुलफन पर, सिरपेंच कैधौं श्री लखन अलबेले को ॥१०३॥

॥ पुनः ॥

गोरे रंग ऊपर बिराजत अजब जामा, सूरज सिंगार कैधौं चम्पक सुमन को। कंगन फलित कर परमप्रकास कैधौं, लोहित कमल रच्यो रंग नौरतन को ॥ बीरे मुख मंडित ब हाली अधरन लाली, कैधौं सोभ साँझ बिकसत राते घन को। रंगवार अजब तरङ्ग जोति मालाकर, कैधौं मनि मौर मंगलीक शत्रुहन को ॥१०४॥

॥ पुनः ॥

धार में तिरीछी हेपला के उतरसि पार, कैधौं या फनाली पन्नगी की झला झल है। लछिराम कैधौ प्रलै पासर प्रनाली जोर, जौहर जमाली पाली काल करतल है ॥ रावन समर में महीप रामचन्द्र कर, कैधौ या कृपान ज्वालामुखी की सकल है। असल कुमारी बड़वानल प्रचंड कैधौ, बारहो कला के मारतंड की नकल है ॥१०५॥

॥ सवैया ॥

राज कुमारन की अवली मैं, विराजत यो नयो राज कुमार है। तेज तपोवल में लछिराम, नया बिधि को रसराज सिंगार है॥ चन्द सो बासर हू न अमन्द, दिवाकर तो रजनी सुख सार है। मोहन मंत्र सँवारो भयो, मिथला मकरध्वज को अवतार है ॥१११॥

॥ अथ परजस्ता पन्हुति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

और बीच आरोपिये, औरे गुन ठहराय।
पर जस्ता पन्हुति कहैं, भूषन सब कविराय ॥११२॥

॥ यथा कवित्त ॥

बगर बिलास पेम्ब असुर तमालिन को, हायल करत पलही के परखन में। कवि लछिराम धूम धाम कीन कौंधे, कछू दारुन दिगन्तन प्रभाली हरषन में॥ सुभट सिरोमनि महीप रामचन्द्र यान, जुगुल प्रदोप वाली लाली लसै धन में। रावरो प्रताप गजरथ पै सवार वेस, बरसत विरद व हाली त्रिभुअन में ॥११३॥

॥ पुनः ॥

उन्नत भसुण्डे करि छोड़त फुहारे नीर, भारे कजरारे करें
मेल में निरस हैं। कवि लछिराम गेल गुञ्जरत मोहैं मन,
मंडित कपोलन मलिन्द वे थिरत हैं॥ तोरैं लोह लगरे म
हीप राम त्रन्द वाले, गज मतवाले ये न फूलिके फिरत हैं।
आले दिग पाल के कुमार सुरपति पाले, ख्याल भरे मन्दरे
मरोरि अभिरत हैं ॥११४॥

॥ अथ भ्रांत्या पन्हुति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

परको भ्रम छूटै जहां, काहू बचन प्रवीन।
भ्रांत्या पन्हुति कहत हैं, भूषन तहँ रस लीन ॥११५॥

॥ यथा कवित्त ॥

भभरो न मोर घन बीजुरी के मौजन में, सांवरो बरन पीत बसन सरीर को। मङ्गलीक मुख पान कोकनद मानसर, भांवरैं भरत भौंर भूले करि भीर को॥ राजबंस मानो मिथिलेस के स्वयम्बर में, लछिराम धोखो चक्रवाकन गँभीर को। सुरन अताप कर सूरज सताप यान, त्रिभुअन मंडित प्रताप रघुबीर को ॥११६॥

॥ पुनः ॥

बन्दन बिसाल भाल भूषित गणेश धोखें, देवी देव दौरैं कत बर गुन गाथ के। राज बंस मानो ये न दिग्गज कुमार फैले, गुञ्जरत बगर सँवारे सुभ साथ के॥ राजहंस भूले ये न सावन घटा के घेर, लछिराम रंग ये न ढारे रङ्ग नाथ के। झरना झरत ये न मरकत मन्दर हैं, राजैं मद मंडित मतङ्ग रघुनाथ के ॥११७॥

॥ अथ छेका पन्हुति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

सङ्कित सत्य पदारथै, दुरवै ब्योंत विचार।
छेका पन्हुति भूषनै, बरनत रस अवतार ॥११८॥

॥ यथा कवित्त ॥

झहरात बीजुरी लौं जरद वसन छोरैं, माधुरी हँसनि मौज ओज धनु बर को। [illegible] बलाक बृन्द हार हीरा मो-

तिन के, सजल पवन सङ्ग स्वेद के लहर को ॥ बाँई बल शङ्कर सरासने जवासो कन्यो, लछिराम हेरत परसराम घर को। विमति सौं पूछ्यो राम स्याम घन कैसो, बोल्यो बरनत बिरद बिलास जलधर को ॥११९॥

॥ पुनः ॥

सौरभित सुन्दर सिँगार त्रिभुअन सुर, सुन्दरी विहार अङ्ग मङ्गलीक मत को। लछिराम तीनों ताप हरत हरष मान, परम प्रकाश चारु चन्द्रिका के सत को ॥ गङ्ग लौं पुनीत गज गोहर हरा लौं आब, सुमति सौं पूछ्यो भृगुनन्द भाल रत को। सीरो सम हीरो कौन रामचन्द्र जस, राम बरनत बिरद मलैज परवत को ॥१२०॥

॥ अथ कैतवा पन्हुति अलङ्कार बर्नन—दोहा ॥

औरें मिस जहँ और को, बरनै बचन बिलास।
कैतव पन्हुति तिहि कहैं, अलङ्कार मुद भास ॥१२१

॥ यथा सवैया ॥

लालिमा श्री तरवान की तेज मैं, सारदा लौं सुखमा की निशेनी। नेपुर नील मनीन जड़े, जमुना जगे जोहर मैं सुख वेनी ॥ यौं लछिराम छटा नख नौल, तरङ्गिनी गङ्ग प्रभा फल पेनी। मैथिली के चरनाम्बुज ब्याज, लसै मिथिला मग मंजु त्रिबेनी ॥१२२॥

॥ यथा कवित्त ॥

माधुरी हँसनि हार हीरक रदन मोती, जोड़े लाल अधर सुरङ्ग अनुमाने को। डोरे नैन मानिक फटिक मनि से

तताई' नीलम चुनीन पूतरीन परमाने को ॥ लछिराम ख्योर कासमीर भाल पोखराज, रङ्ग मङ्गलीक मरकत वर माने को। रामचन्द्र बदन के ब्याज मिथिला में खोल्यो, मदन जवाहिरी जवाहिर खजाने को ॥१२३॥

॥ पुनः ॥

अतुल अमोल भुज बल को न वारा पार, भूषन मनीन के सभाग सरसत हैं। रेखित हथेली आब आंगुरी नखन पर, पूतरी महीपन अतंकि परसत हैं ॥ कबि लछिराम दान धारा धूम धाम हेरि, मङ्गलीक मेघ साहिबी को तरसत हैं। रामचन्द्र कर मिस कामद कलप तरु, चार्‍यो फल बारहौ महीने बरसत हैं ॥१२४॥

॥ अथ उत्प्रेक्षालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

वस्तु हेत फल में जहां, सम्भावना सतर्क।
उत्प्रेक्षा भूषन तहां, बरनत हैं मति अर्क ॥१२५॥
द्वै प्रकार गनि वस्तु में, प्रथम उक्त अनुमान।
फिरि अनुक्त विषया कहत, उत्प्रेक्षा गुनमान ॥१२६॥
हेत फलहु में या बिधै, जुगल रीति दरसाय।
सिधि असिद्धि विषया सहित, उत्प्रेक्षा सरसाय ॥१२७॥

॥ अथ उक्त विषया वस्तोत्प्रेक्षा वर्णन—दोहा ॥

जोग वस्तु सम बरनि जहँ, ताहि उक्त परिमान।
जहँ अजोग कलपित सुतहँ, वस्तु अनुक्त बखान ॥१२८॥

॥ यथा सवैया ॥

शम्भु सरासनै तोर्‍यो सनाल सो; भाल बिसाल प्रताप

सोहावे । त्यों लछिराम स्वयम्वर में, मिथिलेस अनन्द अमात न छावे ॥ राम गरे जयमाल के वेत, सु मैथिली यों समता सरसावे । मानों रमा रतनाकर में, रतनावली श्री हरि को पहिरावे ॥१२९॥

॥ पुन ॥

ख्याल में कञ्ज के नाल सों तोन्यो, सरासन शङ्कर को विकराल है । मैथिली के पहिरावत में, लछिराम सन्यो शुभ आनँद जाल है ॥ मण्डित मौज स्वयम्बर में, लसै राम गरे यों सरोज की माल है । मानों कलाधर के हियरे, नखतावली थेपित धारिद लाल है ॥१३०॥

॥ यथा कवित्त ॥

मनरथ सोंहै मिथिलेस राजमण्डल में, आगमन जैसो मुनि सग ते जरत को । नगर डगर नौल विरद वितान धर, घगर स्वयम्वर सुमेर परवत को ॥ लछिराम रामचन्द्र लखन सुभाव सील, सगुन सुरूप यों सराहिबो सुमत को । श्रवन थवन दूत वचन विलास पीवें, राव दसरथ मानो कन्द सर वंत को ॥१३१॥

॥ पुनः ॥

मान्यो मान मौज दीप दीपन महीपन को, फहन्यो नि सान रघुबंस अमरेस को । छूट्यो सङ्क मैथिली नगर मिथि लेस टूट्यो राम कर कमल सरासन महेस को ॥ लछिराम लछिमन विरद वलित वृत, वचन विदान्यो तुम बुखद प्र वेस को । औध उदयाचल सिंहासन पै मानो, परभात पर भाकर थवन अवधेस के

॥ अथ अनुक्त विषयावस्तोत्प्रेक्षा—यथा कवित्त ॥

सोधि शुभ लगन महीप दसरथ बेस, अवध नगर सजे सुभग बरात हैं। लछिराम गरजे नगारे धूमधाम सङ्ग, चतुरङ्ग चमू तें असुर थहरात हैं॥ बिसद हरीरे हीरे मानिक जटित कारे, पीरे लाल रङ्ग यों निसान फहरात हैं। दीने मघवान मंजु मानो गजरथ पर, पँचरङ्ग चौर आसमानी लहरात हैं ॥१३३॥

॥ पुनः ॥

मङ्गलीक राव दसरथ की बरात सजी, बैरी थहरात रघुबंसिन की भीर तें। कबि लछिराम गंज गरजे निसान बान, बिछले भिरत बाजि गवन समीर तें॥ मंडित सिखर भाल मचले मतङ्ग झूमें, भौंर मननात मद नदन गँभीर तें। सुंडन फुहारे दै भसुण्डन उठावें मानो, आवें कढ़े दिग्गज कुमार कासमीर तें ॥१३४॥

॥ सवैया ॥

मान गयो मघवान को भूलि, लखे दसरत्थ बरात छटा है। फूल घने बरसें मुद में, रचें देव बधूटी बिमान अटा है॥ लाल अमारी मतङ्गन पै, लछिराम करै समतान कटा है। आवत कज्जल मेरु मनो, चढ़ी पच्छिमी नील गुलाली घटा है ॥१३५॥

॥ पुनः ॥

मोर लों मंजु नचें धरनी पर, मण्डित फेन लगाम उमा हैं। कान के बीच लसें कलँगी, फिरें त्यौर तिरीछी अलात

अदा हैं ॥ काम कमूतर लौं लछिराम, छलें यों अटेरन की परमा हैं । बाजि बली रघुबंसिन के, मनो सूरज के रथै मू मन चाहैं ॥१३६॥

॥ अथ हेतूत्प्रेक्षा अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

कथन जोग सम सम्भवित, सिद्धि विषय सो हेत ।
बरने कवि कोविद सबै, उत्प्रेक्षा धीर सचेत ॥१३७॥

॥ अथ सिद्धि विषया हेतूत्प्रेक्षा अलङ्कार वर्णन—यथा कवित्त ॥

राज बंश भूषन कगर मिथिला के मच्यो, धूम धाम नगर वितान यों गरद सों । झमके मतङ्ग झूमें गरजे नगारे नौल, छपि रहे देव बरछैतन बिरद सों ॥ विसद सुवेष भेंट्यो मिथिलेस लछिराम, राम दसरथ मिल्यो बसन जरद सों । चन्द्रिका परस पान हेत में सुधाके मानो, मघवान मिलत सुधाकर शरद सों ॥१३८॥

॥ पुनः ॥

बोलत नकीब नौल फहरे निसान ऊंचे, द्वारचार भीर दुहू दल भराभर सों । मङ्गलीक बाजे बजे गरजें मतङ्ग तैसे, लछिराम रङ्ग रतनाकर लहर सों ॥ अङ्ग में भरत मिथिलेस दसरथ भूको, ता समै बिलास रूप आनँद अमर-सों । मानो रवि चन्द की मरीचिन मजेजै मिल्यो, सुरगुर-सोहैं उदयाचल सिघर सों ॥१३९॥

॥ सवैया ॥

सोर पर्‍यो मिथिलापुर में बजी, दुन्दुभी दीह विनोद बगारो । सारद गोरी गनेस महेस, असीसत उन्नत हाथ पसारो ॥

रामको यौं दसरत्थ रहे, मुख चूमि गरे लपटाय निहारो। छीरधि मंजु सओज मनौ, भर्‍यो अङ्क समौज कलाधर वारो॥

॥ पुनः॥

मौज मई मिथिलापुर में, चतुरङ्ग चमू सजि आई वरात है। त्यौं उछले में जवाहिर की, लरैं टूटैं तुरङ्गन के लहरात है॥ लक्खन राम को यौं दसरत्थ, लिये निज गोद न मोद अमात है। ताप मिटाइबे के हित मानौ, पपीहरा स्वाती के बुन्द अन्हात है॥१४१॥

॥ अथ असिद्धि विपया हेतोत्प्रेक्षा वर्णन—दोहा॥

असम्भवित अकथन जहां, सम तर्कना समेत।
तहँ असिद्धि बिषया कहैं, उत्प्रेक्षा सु निकेत॥१४२॥

॥ यथा कवित्त॥

द्वारचार वगर वरात कौसलेस जू की, मच्यो धूम धाम मिथिलेस के सहर में। कलित प्रसेद मोर झालरैं बलित मुख, जुलफैं लसी त्यौं परिमल के नहर में॥ चारु गजरथ पै बिराजे रामचन्द्र कछू बिहँसत लछिराम माधुरी गहर में। मंडित मरीची मारतण्ड सङ्ग भोर खिले, कोकनद मानौ छविसागर लहर में॥१४२॥

॥ पुनः॥

गरजैं निसान बान फहरैं पताके, देव बरसैं सुमन त्यौं बिमानन प्रसङ्ग तैं। लछिराम हीरालाल थार मुकताहल के, वारैं मिथिलेस बेस आनँद अभङ्ग तैं॥ उतरे अमन्द रामचन्द्र [illegible]

बेष रितुराजी सङ्ग वारिद बगर कढ्यो, रससराज मानो रत नाकर तरङ्ग ते ॥१४३॥

॥ अथ फलोत्प्रेक्षा वर्णन—दोहा ॥

कथन जोग व्यापार फल, सम सम्भवित प्रधान।
सिद्धि विषय फल तहँ कहत, उतप्रेक्षाहि सुजान ॥१४४॥

॥ यथा कवित्त ॥

पाग अलबेली पै समाग मणि मोर सोहै, कोरैं मुकता हल मिलित लाल हीरे में। लछिराम तैसी बेस बदन बहा ली चढ़ी, चख्न चख लाली चारु लसनि गँभीरे में॥ मिथिलेस आंगन रँगीलो रामचन्द्र रूप, पीरे लाल स्याम सेत मण्डप हरीरे में। चन्द फल दीबे हेत बिहरै अमन्द मानो, सङ्ग रङ्ग धनु जलधर के जँजीरे में ॥१४५॥

॥ पुनः ॥

ब्याह वर बानक बसन भार भूपन तें, नखसिख जागे जोति नवल निकाई में। लछिराम लोने धूमधाम के बिमा नन ते, बरसै सुमन सुर सुन्दरी भलाई में॥ रामचन्द्र भरत लखन शत्रुहन छवि, छलकी परै हैं सौरभित सुघराई में आगमन मानो मिथिलेस मन सीरे हेत, अङ्गमान चान्योफल मनि अँगनाई मे ॥१४६॥

॥ पुनः सवैया ॥

दूलह बेष बिसाल बिनोद मे, चारिहू ओर सुगन्ध स मीर है। ये रही आंगन मे मिथिलेस के, आनन राम प्रभा सु गँभीर है॥ सामुहें रीग छके छछिराम, फरी गिरा स्यों

उपमा तदबीर है। देखिबे इन्दु उदै को मनौ, उदयाचल मैं अमरावली भीर है ॥१४७॥

॥ पुनः ॥

श्री रघुनाथ के माथ भली, मनिमौर लसी कलँगी नवरङ्ग मैं। त्यों लछिराम दुहूं कँधा पै, जुलफैं मुकताहल हार प्रसङ्ग मैं ॥ ता सुखमा की बरावरी कौं, नचैं भारती नौल नटीलों उमङ्ग मैं। मंजु मनोरथ पूजिबे मानौ, मिली जमुना बर गङ्ग तरङ्ग मैं ॥१४८॥

॥ अथ असिद्धि विषया फलोत्प्रेक्षा वर्णन—दोहा ॥

असम्भवित सम जहँ रचै, तर्क सकल ब्यापार।
तहँ असिद्धि बिषया कहत, फल उत्प्रेक्षा चार ॥१४९॥

॥ यथा कवित्त ॥

भूषन वसन रघुनाथ सिय सुन्दरी पै, मण्डित मनीन लरकत लर हीरे को। कवि लछिराम गल-बांहीं मैं सुब्याह रीति, गोरो स्याम रङ्ग झलकत सुभ सीरे को ॥ मण्डली मुनीन की चहूंघां चकचौंधैं चारु, वारत प्रकास रति मदन गँभीरे को। बांध्यो हित रतन सनाल कञ्ज मानो विधि, मरकत मन्दर सुमेर के जँजीरे को ॥१५०॥

॥ पुनः ॥

मिथिलेस मण्डप अखण्ड ओज रासि कैसे, परम प्रकास छायो बाहिरे महल के। लछिराम राम सिय भांवरैं भरत फैलैं चारु चरनन तैं तरंगैं परिमल के ॥ बरसैं बिमानन तैं बिबुध ब

मानो रङ्ग थल फल सङ्गमी सकल चारि, विकसे कमल मधे मोती झलाझल के ॥१५१॥

॥ पुनः सवैया ॥

राम को मूलह बेष अनूप, बनी सिय सुन्दरी कोमलता है। चारों गोराई पै बीजुरी को, सँवराई पै काली घटा फल ता है ॥ मण्डप भीतर भावरे देत, सही लछिराम रची स मता है। संग सबै फल के हुलसी, तुलसी मैं लसी मनो हेम लता है ॥१५२॥

॥ पुन ॥

आगन मे मिथिलेस के यों, रघुनन्दन मैथिली ओज विसाल है। भावरें देत प्रभा पद कञ्ज की, फैली फिरै नख जोतिन जाल है ॥ लाली लसे तल की लछिराम त्यों, स्या मता ते प्रतिबिम्बित चाल है। संगमी दानि सबै फल की मनो भूपर चारु त्रिवेनी की माल है ॥१५३॥

॥ अथ गम्योत्प्रेक्षालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

वस्तु हेत फल कल्पना, जनो मनो पद हीन ।
गम्योत्प्रेक्षा कहत कोउ, ललित गुप्त परवीन ॥१५४॥

॥ यथा कवित्त ॥

स्योर कासमीरी बीच तिलक मलेज मंजु, मनि मोर फलँगी मरोर भाल थल में। कण्ठा कण्ठमाल हीरे लाल गज मोहर के, मदन महाली लाली पान ओंठ फल में ॥ मिथिलेस भौन लछिराम सुर मुनि सोहैं, टूटी परें चगर चघूटी प्रेम चल में। जिते रुख फेरत विहँसि राम, ‍ ‍ ‍ ‍ ‍ चितै, चन्द्र मारतण्ड की मरीची झलाझल

॥ पुनः ॥

भूषन विसाल हीरा लाल मनि मोती माल, कङ्कन कलित कर मुद्रिका प्रभा की हैं। लछिराम राम अङ्ग स्याम घन रंङ्ग पर, जुलफैं जँजीरेदार पुञ्ज परमा की हैं॥ छोरैं सेत पट फहरीली मन्द गजगौन, सारद मरोरैं मन मौजैं समता की हैं। मरकत मन्दर पै सङ्गमी रतनहार, नहरैं तरङ्गदार गङ्ग जमुना की हैं॥१५३॥

॥ अथ रूपकातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ बरनत उपमान के, वर्णनीय अवतार।
अतिशयोक्ति रूपक तहां, प्राचीनन मत चार॥१५७॥

॥ यथा कवित्त ॥

मिथिलानगर वसीकरन सुरूप जासु, विरद वितान छायो नखत नरेस को। कवि लछिराम सिरमोर ह्वै स्वयम्बर में, करिकै कलप-तरु फुल कौसलेस को॥ पाऱ्यो सोर चौदहो भुअन सिसुपन सूधो, राख्यो प्रन मैथिली समेत मिथिलेस को। कमल सनाल में झमकि झकझोऱ्यो तोऱ्यो, देंहधारी मदन सरासन महेस को॥१५८॥

॥ पुनः ॥

माधुरे मुखर में अतङ्क त्रिभुअन छाय, बगराय बिरद स्वयम्बर कगर में। पल्लवित साखैं सुरतरु फरकाय फन्द, मोजन मचाय राजबंस के बगर में॥ सींचे बल बारि सों प्रबेस कै स्वदेस निमि, लछिराम नौल ब्रह्म तेज के रगर में। बीजुरी बलित लै कुमार अमरेस तोऱ्यो, स्याम घन सम्भु धनु मिथिला नगर मैं॥१५०॥

॥ पुनः सवैया ॥

सीस लसै मनिमोर मनोहर, भूषन भार बहार मैं तारे। रूप भन्यो नख ते सिख लौं धनु वान लसे कर मैं गन रारे ॥ द्वै घन रङ्ग है चम्पक अङ्ग, अनङ्ग अनी विधि साथ मैं ढारे । श्री दसरत्थ के सामुहे मैं, गजरत्थ पै वारि कलाधर वारे ॥१६०॥

भूपर वारि खिले अरविन्द, मलिन्द क्यों ऊपर प्रेम ह लोरे । खञ्जन कीर कपोत लसै, मुकता लर वास विलास वियोरे ॥ मण्डित कञ्ज सनाल किते, लछिराम तिहूंपुर के चित चोरे । कौसिला सामुहै हेम लता, वपु धारी सु ब्रह्म किये गठि जोरे ॥१६१॥

॥ अथ साप न्हवातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

मिलित अपन्हव होय जहँ, उत्प्रेक्षा मैं धीर ।
सापन्हवातिशयोक्ति तहँ, वरनैं कवि गम्भीर ॥१६२॥

॥ यथा कवित्त ॥

माधुरी हँसनि हार हीरक बहार संग, परखत कौंधे कर सौरभ सदन है । लछिराम अधर बहाली ते वचन वर, दाड़िम के दाने अमी अवली रदन है ॥ अनमोल गोल चुन्यो चिन्तामणि आरसी लौं, अङ्ग हीन तुले फल धापुरो मदन है। तारे मंद अम्बर सराहैं सुर भूलि चारु, चन्द्रिका वलित रामचन्द्र को बदन है ॥१६३॥

॥ अथ भेदकातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

औरे शब्दन की जहां, उतकर्षता सुवेस ।
अतिशयोक्ति भेदक तहां, भनत सुकवि नरेस ॥१६४॥

॥ यथा कवित्त ॥

गुञ्जरत माते गजरथ के मतङ्ग औरै, मङ्गलीक राजपथ सौरभ नहर की। लछिराम तापर झमेले रघुबंशिन के, औरै कला लखन बघेले अगहर की॥ तीर भीर नाग नर देव के बिमानन तैं, औरै धूमधाम राममङ्ग के लहर की। कल्पलता मैथिली प्रमोद वन कामद सों, औरै प्रभा राव रामचन्द्र के सहर की ॥१६५॥

॥ पुनः ॥

लखन भरत शत्रुहन मान षान औरै, औरै अमनैकी हनूमान बलवान की। द्विबिधि मयन्द नलनील केसरी सुकंठ औरै छटा अंगद बिभीषन सभान की॥ लछिराम रतन सिँहासन प्रमान औरै, ऐंड़ अलबेली रामचन्द्र के प्रभान की। दान सनमान सान बिरद बितान औरै, औरै आनि बानि कौशलेश के निशान की ॥१६६॥

॥ पुनः ॥

जुगल कपोल जादू जुलफैं जँजीरेदार, हीरा लाल मोती हार जौहर सँवारे में। करुना कलित सीलसागर तरङ्ग सम, लोचन अभङ्ग मौज रंग रतनारे में॥ मंगलीक बदन बिलास लछिराम औरै, कलँगी मरोर मौर भाल सजवारे में। औरै आनि औरै बानि औरै चढ़े सान भुज, औरै धनुबान राम कर गजरारे में ॥१६७॥

॥ पुनः ॥

रामचन्द्र बदन बिलोकि व्याह बानक में, मंगलीक औरई उछाह सरसत हैं। दशरथ कौशिला सुमित्रा केकई के

॥ पुनः सवैया ॥

सीस लसै मनिमोर मनोहर, भूषन भार बहार में तारे। रूप भन्यो नख तें सिख लौं धनु बान लसे कर मे गज रारे ॥ द्वै घन रङ्ग है चम्पक अङ्ग, अनङ्ग अनी-विधि साथ में ढारे। श्री दसरत्थ के सामुहे में, गजरत्थ पै चारि कलाधर धारे ॥१६०॥

भूपर चारि खिले अरविन्द, मलिन्द ज्यों ऊपर प्रेम ह लोरे। खञ्जन कीर कपोत लसै, मुकता लर बास विलास विथोरे ॥ मण्डित कञ्ज सनाल किते, लछिराम तिहूंपुर के चित चोरे। कौसिला सामुहैं हेम लता, वपु धारी सु ब्रह्म किये गठि जोरे ॥१६१॥

॥ अथ सापन्हवातिशयोक्ति अलङ्कार वर्नन—दोहा ॥

मिलित अपन्हव होय जहँ, उत्प्रेक्षा में धीर।
सापन्हवातिशयोक्ति तहँ, बरनें कवि गम्भीर ॥१६२॥

॥ यथा कवित्त ॥

माधुरी हँसनि हार हीरक बहार संग, परखत कोंधे कर सौरभ सदन है। लछिराम अधर ध्रहाली तें बचन बर, दाड़िम के दाने अमी अवली रदन है ॥ अनमोल गोल चुन्यो चिन्तामणि आरसी लौं, अङ्ग हीन तुलै कत थापुरो मदन है। सारे मंद अम्बर सराहैं सुर भूलि चारु, चन्द्रिका चलित रामचन्द्र को बदन है ॥१६३॥

॥ अथ भेदकातिशयोक्ति अलङ्कार बर्नन—दोहा ॥

औरे शब्दन की जहाँ, उतकर्षता सुवेस।
अतिशयोक्ति भेदक तहाँ, मानत सुकवि नरेस ॥१६४॥

॥ यथा कवित्त ॥

गुञ्जरत माते गजरथ के मतङ्ग औरै, मङ्गलीक राजपथ सौरभ नहर की। लछिराम तापर झमेले रघुबंशिन के, औरै कला लखन बघेले अगहर की॥ तीर भीर नाग नर देव के बिमानन तैं, औरै धूमधाम रामगङ्ग के लहर की। कलपलता मैथिली प्रमोद बन कामद सों, औरै प्रभा राव रामचन्द्र के सहर की ॥१६५॥

॥ पुनः ॥

लखन भरत शत्रुहन मान पान औरै, औरै अमनैकी हनूमान बलवान की। द्विबिधि मयन्द नलनील केसरी सुकंठ औरै छटा अंगद बिभीषन सभान की॥ लछिराम रतन सिँहासन प्रमान औरै, ऐंड़ अलबेली रामचन्द्र के प्रभान की। दान सनमान सान बिरद बितान औरै, औरै आनि बानि कौशलेश के निशान की ॥१६६॥

॥ पुनः ॥

जुगल कपोल जादू जुलफैं जँजीरेदार, हीरा लाल मोती हार जौहर सँवारे में। करुना कलित सीलसागर तरङ्ग सम, लोचन अभङ्ग मौज रंग रतनारे में॥ मंगलीक बदन बिलास लछिराम औरै, कलँगी मरोर मौर भाल सजवारे में। औरै आनि औरै बानि औरै चढ़े सान भुज, औरै धनुबान राम कर गजरारे में ॥१६७॥

॥ पुनः ॥

रामचन्द्र बदन बिलोकि ब्याह बानक में, मंगलीक औरई उछाह सरसत हैं। दशरथ कौसिला सुमित्रा केकई के

॥ पुनः सवैया ॥

सीस लसै मनिमोर मनोहर, भूषन भार बहार मे तारे। रूप भन्यो नख तै सिख लौं धनु बान लसै कर मे गज रारे ॥ द्वै घन रङ्ग है चम्पक अङ्ग, अनङ्ग अनी विधि सांच मैं ढारे। श्री दसरत्थ के सामुहे मैं, गजरत्थ पै धारि कलाधर धारे ॥१६०॥

भूपर चारि खिले अरविन्द, मलिन्द ज्यों ऊपर प्रेम ह लोरै। खञ्जन कीर कपोत लसै, मुक्ता लर बास बिलास चियोरै ॥ मण्डित कञ्ज सनाल किते, लछिराम तिहूंपुर के चित चोरै। कौसिला सामुहैं हेम लता, बपु धारी सु ब्रह्म किये गठि जोरै ॥१६१॥

॥ अथ सापन्हवातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

मिलित अपन्हव होय जहँ, उत्प्रेक्षा में धीर।
सापन्हवातिशयोक्ति तहँ, बरनें कवि गम्भीर ॥१६२॥

॥ यथा कवित्त ॥

माधुरी हँसनि हार हीरक बहार सग, परसत कौंधे कर सौरभ सदन है। लछिराम अधर बहाली ते बचन बर, दाड़िम के दाने अमी अवली रदन है ॥ अनमोल गोल चुन्यो चिन्तामणि आरसी त्यों, अङ्ग हीन तुले फत बापुरो मदन है। तारे मंद अम्बर सराहैं सुर भूलि चारु, चन्द्रिका बलित रामचन्द्र को बदन है ॥१६३॥

॥ अथ भेदकातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

औरै शब्दन की जहाँ, उतकर्षता सुबेस।
अतिशयोक्ति भेदक तहा, मानत सुकवि नरेस ॥१६४॥

॥ यथा कवित्त ॥

गुञ्जरत माते गजरथ के मतङ्ग औरै, मङ्गलीक राजपथ सौरभ नहर की। लछिराम तापर झमेले रघुबंशिन के, औरै कला लखन बघेले अगहर की॥ तीर भीर नाग नर देव के विमानन तैं, औरै धूमधाम रामगङ्ग के लहर की। कलपलता मैथिली प्रमोद बन कामद सों, औरै प्रभा राव रामचन्द्र के सहर की ॥१६५॥

॥ पुनः ॥

लखन भरत शत्रुहन मान षान औरै, औरै अमनैकी हनूमान बलवान की। द्विबिधि मयन्द नलनील केसरी सुकंठ औरै छटा अंगद बिभीषन सभान की॥ लछिराम रतन सिंहासन प्रमान औरै, ऐंड़ अलबेली रामचन्द्र के प्रभान की। दान सनमान सान बिरद बितान औरै, औरै आनि बानि कोशलेश के निशान की ॥१६६॥

॥ पुनः ॥

जुगल कपोल जादू जुलफैं जँजीरेदार, हीरा लाल मोती हार जौहर सँवारे मैं। करुना कलित सीलसागर तरङ्ग सम, लोचन अभङ्ग मौज रंग रतनारे मैं॥ मंगलीक बदन विलास लछिराम औरै, कलँगी मरोर मौर भाल सजवारे मैं। औरै आनि औरै बानि औरै चढ़े सान भुज, औरै धनुबान राम कर गजरारे मैं ॥१६७॥

॥ पुनः ॥

रामचन्द्र बदन बिलोकि ब्याह बानक मैं, मंगलीक औरई उछाह सरसत हैं। दशरथ कौसिला सुमित्रा केकई के

मन, लछिराम औरई प्रकास परसत हैं ॥ विबुध बधूटी भरें औरई सुमनहार, औरई अदा सों अमरेस दरसत हैं। औरै खजाने खुले अवध नगर वर, औरें भांति हीरा लाल मोती बरसत हैं ॥१६८॥

॥ अथ सम्बन्धातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ अजोग में जोग की, करै कल्पना धीर।
सम्बन्धातिशयोक्ति तहँ, प्रथम कहत गम्भीर ॥१६९॥

॥ यथा कवित्त ॥

गुखरत कुखर कुलेल में नगर वर, मानि घन मंडल मयूर खटकत हैं। कोकिल कपोत कीर मन्दिर कलस चढ़े वे ध गङ्ग नीर तें समीर भटकत हैं ॥ लछिराम उन्नत फबीले फहरात नील कारे हरे पीरे लाल नग लटकत हैं। बिबुध बधूटी आनि हेरें आसमान छोड़ि, बगरे बिमान में निसान अटकत हैं ॥१७०॥

॥ पुनः ॥

खेलत कुमार लै कुमार गजराजन के, करत कुलेल गुम्बज कगर पै। कवि लछिराम नील धूमधाम के निसान फहरात नौरँग समीर की लहर पै ॥ रामचन्द्र सुभग सिंहासन लसत जाग्यो, अजय अमन्द ओज बाहिरे नगर पै। करकाय चन्द्रिका सघन बीजुरी को भूमि, नचत मयूर माते मन्दिर सिखर पै ॥१७१॥

॥ द्वितीय वर्णन—दोहा ॥

तनहिं जोग मै कल्पना, करि अजोग निरसङ्क।
सम्बन्धातिशयोक्ति तहँ, दूजी लखि सुभ अङ्क ॥१७२॥

॥ यथा सवैया ॥

कानन कुञ्ज प्रमोद बितान भरे, फलफूल सुगन्ध बिधानै।
बावली के अरविन्दन पै, मकरन्द मलिन्द सने सुभ गानै॥
त्यों लछिराम तरंगन तैं, सरजू के कढ़े सुर साजि बिमानै।
औधपुरी महिमा यों चितै, अमरावती को हम क्यों सनमानै॥

॥ पुनः ॥

सान भरे भुजदण्ड अखण्ड, तिहूं पुर मण्डन मान भरै को। आंगुरी वै अलकेस धनी, सनी मौजन मैं अनुमान अरै को॥ यों नखभा लछिराम लखैं, नखतावली के परमानै धरै को। श्री रघुनाथ के हाथन सामुहैं, कल्पलता सनमान करै को॥१७४॥

॥ अथ अक्रमातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

कारन कारज सङ्ग जहँ, अक्रम बरन न होय।
अक्रमातिशयउक्ति तहँ, भाषत हैं सबकोय॥१७५॥

॥ यथा कबित्त ॥

बलवान बिरद अखण्ड महीमण्डल पै, मण्डित महान फैल्यो तरनि के तेजे मैं। लछिराम राख्यो धूमधाम के समर बीच, भौंहैं करि भङ्ग दल दारुन दरेजे मैं॥ त्रिभुअन ता समै निहारि आचरज दाबैं आंगुरी दसन बरबस नवरेजे मैं। बान रघुबीर के लगत एकबार ही मैं, रोदे पै कमान कोरैं असुर करेजे मैं॥१७६॥

॥ पुनः ॥

चमू चतुरङ्गिनी चपल चढ़ी रावन की, सावन घटा लौं सनी रोष रन रङ्ग तैं। बानर बिराट भालु बांकुरे लखन

सङ्ग, घोर घन बोलैं बैन बीरता प्रसङ्ग तें॥ लछिराम सौंह भट भेरे गजरथ कटैं, क्रोधानल फेटे रामचन्द्र भौंह भङ्ग तें। समर झमेले में झमकि एकबार कढ़ैं, म्यान तें कृपान प्रान अरिगन अङ्ग तें ॥१७७॥

॥ अथ चपलातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

सुनतहिं नाम प्रसङ्ग के, सिद्धि काज अनयास।
गनि चपलातिशयोक्ति तहँ अलङ्कार सबिलास ॥१७८॥

॥ यथा सवैया ॥

मण्डल राव मुनीसन के, जुवराजी कथा मुद में अकले हैं। त्यों लछिराम तिहूंपुर में, द्विज वेषन के मन मान बढ़े हैं॥ तेई सबै पुर बीथिन में, अब केकई के बरदान पढ़े हैं। कानन राम पयान सुने, दसरत्थ के प्रान विमान चढ़े हैं॥

॥ पुनः ॥

पञ्चबटी के, विहङ्ग उमङ्ग में, बोलत बानी सुधारस घूटे। त्यों लछिराम अबेच ललाट तें, आयु की रेख के अङ्क वे छूटे॥ आसुरी हाथन ते पल एक में, भाग सोहाग के भाजन फूटे। आगम श्री रघुनाथ सुने, मुनि मण्डली के मन बन्धन टूटे ॥१८०॥

॥ अथ अत्यन्तातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

क्रम पूरब पर को जहाँ, अति अनमिल विपरीति।
अत्यन्तातिशयोक्ति सो, बरनैं बुध करि प्रीति ॥१८१॥

॥ यथा कवित्त ॥

अजब अखण्ड याहैं बलित लतालौं बसी, मण्डित बिरद मारू मग्न भा मढ़ति है। परम निसङ्क पान कीबे को

रुधिर चाह, लछिराम साहस अभङ्ग मैं बढ़ति है ॥ रन रङ्ग बीच रावरी कृपान रामचन्द्र, बङ्क बाढ़ि फन पै बहाली यों मढ़ति है। प्रान पहिलेही हरै असुर सँघातिन के, पीछे पन्नगी लों म्यान बामी तैं कढ़ति है ॥१८२॥

॥ पुनः ॥

भान बंस भूषन सिरोमनि सुभट कीनो, लङ्क पै अतङ्क भरी देवन अकस तैं। गजरथ वाजिन गरजि महाबीर मही पटकै लपेटिकै लँगूर छोर कस तैं ॥ धूमधाम ऐसी रामचन्द्र बीरता की मची, लछिराम रावन सरोष सरकस तैं। बैरी मिलैं गरद मरोरत कमान गोसे, पीछैं कढ़ैं बान तेजमान तरकस तैं ॥१८३॥

॥ अथ तुल्य योगता अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

चतुर चतुरविधि कहत हैं, लुप्त योग्यता चार।
वर्न्यंन्य को जहँ धर्म्म यक, प्रथम कहत ब्यापार ॥१८४॥

॥ यथा कवित्त ॥

रावन महीप चतुरङ्गिनी चमू लै चढ्यो, ह्वै रह्यो अतङ्क बङ्क रोदा ठनाठन मैं। लछिराम जोगिनी जमाति भूत सङ्ग नाचैं, शङ्कर उमाचित्त अभङ्ग प्रेम धन मैं ॥ प्रबल प्रचण्ड भुज दण्ड फरकन लागे, खड़क निकोरैं बान तरक से छन मैं। लखन समत्थ बीर बानर बिराट भालु, रघुबीर प्रफुल्लित होत रन वन मैं ॥१८५॥

॥ पुनः सवैया ॥

सूकर स्यार कुरङ्ग मतङ्ग, मिलैं मुनि देवन की अवली मैं। जोगी जती तपसी लछिराम, वरैं परी किन्नरी भांति

सङ्ग, घोर घन बोलैं बैन धीरता प्रसङ्ग तें॥ लछिराम सौंहैं भट भेरे गजरथ कटैं, क्रोधानल फेटे रामचन्द्र भौंहैं भङ्ग तें। समर झमेले में झमकि एकधार कढ़ैं, म्यान तें कृपान प्रान अरिगन अङ्ग तें॥१७७॥

॥ अथ चपलातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा॥

सुनतहिं नाम प्रसङ्ग के, सिद्धि काज अनयास।
गनि चपलातिशयोक्ति तहँ अलङ्कार सविलास॥१७८॥

॥ यथा सवैया॥

मण्डल राव मुनीसन के, जुवराजी कथा मुद में अकढ़े हैं। त्यों लछिराम तिहूँपुर में, द्विज बेचन के मन मान बढ़े हैं॥ तेई सबै पुर वीथिन में, अब केकई के बरवान पढ़े हैं। कानन राम पयान सुने, दसरत्थ के प्रान विमान चढ़े हैं॥

॥ पुनः॥

पञ्चवटी के विहङ्ग उमङ्ग में, बोलत बानी सुधारस घूटे। त्यों लछिराम अबेध ललाट तें, आयु की रेख के अङ्क वे छूटे॥ आसुरी हाथन तें पल एक में, भाग सोहाग के भाजन फूटे। आगम श्री रघुनाथ सुने, मुनि मण्डली के मन बन्धन टूटे॥१८०॥

॥ अथ अत्यन्तातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा॥

क्रम पूरब पर को जहाँ, अति अनमिल विपरीति।
अत्यन्तातिशयोक्ति सो, बरनें बुध करि प्रीति॥१८१॥

॥ यथा कवित्त॥

अजव अखण्ड याहँ यलित लतालों वसी, मण्डित बिरद मारू मत्र भा मकृति है। परम निसङ्क पान कीबे को

रुधिर चाह, लछिराम साहस अभङ्ग सें बढ़ति है ॥ रन रङ्ग बीच रावरी कृपान रामचन्द्र, बङ्क बाढ़ि फन पै बहाली यों मढ़ति है। प्रान पहिलेही हरै असुर सँघातिन के, पीछे पन्न-गी लों म्यान बामी तें कढ़ति है ॥१८२॥

॥ पुनः ॥

भान बंस भूषन सिरोमनि सुभट कीनो, लङ्क पै अतङ्क भरी देवन अकस तैं। गजरथ बाजिन गरजि महाबीर मही पटकै लपेटिकै लँगूर छोर कस तैं ॥ धूमधाम ऐसी रामचन्द्र बीरता की मची, लछिराम रावन सरोष सरकस तैं। बैरी मिलैं गरद मरोरत कमान गोसे, पीछें कढ़ैं बान तेजमान तरकस तैं ॥१८३॥

॥ अथ तुल्य योगता अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

चतुर चतुरबिधि कहत हैं, लुप्त योग्यता चार।
वर्न्यन्न्य को जहँ धर्म्म यक, प्रथम कहत ब्यापार ॥१८४॥

॥ यथा कवित्त ॥

रावन महीप चतुरङ्गिनी चमू लै चढ्यो, ह्वै रह्यो अतङ्क बङ्क रोदा ठनाठन में। लछिराम जोगिनी जमाति भूत सङ्ग नाचैं, शङ्कर उमाचित अभङ्ग प्रेम धन में ॥ प्रबल प्रचण्ड भुज दण्ड फरकन लागे, खड़क निकारैं बान तरक से छन में। लखन समत्थ बीर बानर बिराट भालु, रघुबीर प्रफुलित होत रन बन में ॥१८५॥

॥ पुनः सवैया ॥

सूकर स्यार कुरङ्ग मतङ्ग, मिलैं मुनि देवन की अवली मैं। जोगी जती तपसी लछिराम, वरैं परी किन्नरी भांति

भली में ॥ श्री रघुनाथपुरी की प्रभा, सरजू के तरङ्ग तें संग गली में। सिद्धि सुरापी असन्त औ सन्त, विमान चढ़े लसें व्योम थली में ॥१८६॥

॥ द्वितीय वर्णन—दोहा ॥

धर्म्म अवर्न्यन्य को जहां, एकै विधि ठहराय ।
तुल्य योग्यता दूसरी, वरनत सब कविराय ॥१८७॥

॥ यथा कवित्त ॥

अमल अमोल गोल कोमल कपोल पर, आरसी अमन्द दल कमल ठगत हैं। लछिराम लोचन सुरङ्ग मंगलीक मीन, वारे खञ्जरीट वन हरिन डगत हैं ॥ सौरभिन वदन सरोज विहँसत चारु, वचन विलास रामचन्द्र के जगत हैं। दाड़िम अमी के दाख माखन मधुर मधु, कन्द मिसिरी के फन्द फीके से लगत हैं ॥१८८॥

॥ तृतीय वर्णन—दोहा ॥

जहँ अवर्न्य अरु वर्न्य को, धर्म्म एकई साज ।
तुल्य योग्यता तीसरी, वरनत कवि सिरताज ॥१८९॥

॥ यथा कवित्त ॥

नैन विकसीले भंग भूधन मरोर कोरें, भाल पै विसाल ओज वै रह्यो गहर में। फरकत जुगल जसीले भुज आठौ जाम, वदन सरोज यों चढ़त्यो मौज लहर में ॥ लछिराम आनँद अभंग रंग धीर सम, राव रामचन्द्र धीरताई की लहर में। विरद बघार संग वैरी हित अग पर, हार औ सुरंग साल देत मुद घर मे ॥१९०॥

॥ अथ चतुर्थभेद वर्णन—दोहा ॥

करै वर्न्य समता सगुन, व्यापारादिक संग।
तुल्य योग्यता चौथई, बरने प्रेम उमंग ॥१९१॥

॥ यथा सवैया ॥

मंगल रासि महेस हो तूं, अमरेस हो तूं सिगरे परमाने। तीनहू लोकन में अलकेस, धरे लछिराम तूं दान के बाने॥ पूरन ब्रह्म बिरञ्चि तुहीं, गुन मैं सुगनेस गिरा सनमाने। छीर समुद्र गँभीर हौ तूं, बलबीर हौ तूं रघुबीर सयाने ॥१९२॥

॥ अथ दीपकालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ अवर्न्य अरु वर्न्य को, गुन करि एक प्रभाव।
अलङ्कार दीपक तहां, भाषत पण्डित राव ॥१९३॥

॥ यथा कवित्त ॥

बिरद अखण्ड भुजदण्डन प्रचण्ड बल, मण्डन करन त्यों बिलास बिकसत हैं। अजब अतङ्क त्रिभुअन में असङ्क फैल्यो, रन बन सामुहे उमङ्ग उमसत हैं॥ जैतवार सुखद सराहै लछिराम कैसे, वार में अचूक वार पार हुलसत हैं। मद सौं मतङ्ग जङ्ग बाज मृगराज राम, रघुबंस भूषन प्रताप सों लसत हैं ॥१९४॥

॥ अथ दीपकावृति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

सुकवि दीपकावृत्ति को, वरनत तीनि प्रकार।
प्रथम सुआवृति पद फिरें, पदावृत्ति निरधार ॥१९५॥

॥ प्रथम पदावृति यथा—कवित्त ॥

गरजें नगारे सौल गरजै ——जङ्ग वर, वीरनपै बांकुरे बहा-

ली घदलति हैं। लछिराम रथ घाजि नट के घटा से नचैं, सूरज के रथ की प्रमाली मचलति हैं। रामचन्द्र सोहैं वरछे सी रघुबंसिन की, हेरि हेरि आसुरी सिसर मचलति हैं। तब तब हलचल होत त्रिभुअन भारी, जब जब चमू चतुरङ्गिनी चलति हैं ॥१९६॥

॥ अथ अर्थावृत्ति यथा—दोहा ॥

जबहिं अरथ की आवृतें, फिरि फिरि पद में हेरि।
दीपक अरथा वृत्ति तहँ, बरनत बुधवर टेरि ॥१९७॥

॥ यथा कवित्त ॥

सातौ दीप अजब अतङ्क सरसाय बढ़ो, बगर बिराट वेष बिरद बगारे तू। लछिराम सान में सुमन खिले देवन के, असुर बितान पर गजब गुजारे तू। सिरमौर बीर भान वंस अवतंस राम, जय चमू चारु चतुरङ्गिनी सँवारे तू। वि कसे सितारे फले कुमुद कलीन फोरि, बार पार अन्धकार भार अवतारे तू ॥१९८॥

॥ अथ तृतीय पदार्थावृत्ति बर्णन—दोहा ॥

पद अरु अर्थ दुहून की, आवृति फिरि फिरि होय।
कहत पदार्थावृत्ति तहँ, दीपक आवृति जोय ॥१९९॥

॥ यथा कवित्त ॥

करिकै कुलेल झनकारत जँजीरैं जोर, उन्नत भसुण्ड नीर छोड़त फुहारे से। लछिराम राय रामचन्द्र के नगर घर, बीथिन बगर बीच आनँद पसारे से। धारैं मद बहत झरत झरना से सजे, बदन अमन्द महा मन्दर सँवारे से। गुञ्जरत

झमकैं मतंग मतवारे मंजु, गुञ्जरत झमकैं मलिन्द मतवारे से ॥२००॥

॥ अथ प्रतिवस्तुपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जबहिँ दुहुन को वाक्य बल, कीजै एक समान।
प्रतिबस्तुपमा भूषनै, तहँ बरनत मतिमान ॥२०१॥

॥ यथा सवैया ॥

सागर श्री मुक्तातहल सों, महा मन्दर औषधी लों सुभ साजैं। गङ्ग तरङ्ग लौं तीन्यों धरा, द्विजराज सों वेदही सोंभ लौं राजैं। धीर सों बीर गँभीरता सों, गुनी यों लछिराम सयान समाजैं। ताप सों देव दिनेस प्रकास, प्रताप सों राम नरेस बिराजैं ॥२०२॥

॥ अथ दृष्टान्तालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

बरनि बिम्ब प्रतिबिम्ब सम, वाक्य धर्म जुग साज।
अलङ्कार दृष्टान्त तहँ, परमानत कबिराज ॥२०३॥

॥ यथा सवैया ॥

माधुरी हास बिलास भर्‌यो मुख, भाल पै चन्दन ख्योर सुहावै। त्यों लछिराम खुले कर दान मैं, कल्प लतान मैं मौज न आवै॥ राम कलाधर की सुखमा लखे, आंखिन को रुख और न भावै। छोड़ि तरङ्ग सुधासरि को, कोऊ पोखरी मैं जल पीवन धावै ॥२०४॥

॥ पुनः ॥

साहसी सिंह सुन्यो बन मैं तिमि, लक्खन बीरता जागै बिशाल है। कामकी सुन्दरता लछिराम त्यों, मोहिनी मैं रिपु दौन की चाल है॥ सम्भु को दान सुरेस की साहिबी, राम

नरेस मे त्यों कर ख्याल है। दीपति सान कलाधर को, लखे कीरतिमान भरत्थ भुआल है ॥२०५॥

॥ अथ निदर्शन अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

करि एकै आरोपिये, जुगम वाक्य जुग अर्थ ।
शब्दनि जो सो मानिये, निदरसना सामर्थ ॥२०६॥

॥ यथा सवैया ॥

ओज पतङ्ग सरोज विलास, मनोज मे मोहनी रीति फँसी है। स्वच्छता गङ्ग सुधाकर में, सुधा वेवन में तप रीति जसी है ॥ मेघ मलैज में सीतलता, लछिराम छमा छवा में सरसी है। धाह बली रघुनाथ के हाथन, बीच सु बीरता आनि बसी है ॥२०७॥

॥ द्वितीय वर्णन—दोहा ॥

यपि अवर्न्य के बीच मे, वर्न्य धर्म्म करि गौर ।
वर्न्यहु बीच अवर्न्य को, थापे तिमि सिरमौर ॥२०८॥

॥ वन्य मैं अवन्य को धर्म्म यथा—सवैया ॥

आनन ओज अमन्द प्रमान, कलाधर में वही छाह परी है। धङ्क बिलोचन की लछिराम, प्रकासक लालिमा कञ्ज करी है ॥ मौज महातम की महिमा, फल कल्प-लता परसी धरी है। गौर गँभीरता श्री रघुनाथ की, छीर समुद्र के बीच भरी है ॥२०९॥

॥ अथ अवन्य मैं वन्यं को एक धम्म, यथा—सवैया ॥

मानस मंजु मे आर्नैव भाव, सदा रस एकई की अभिलाखे । सांकरे में बने खम्भ धरा, अवलम्ब न और की आवत भाखै ॥ दूसरी बात गने न कछू, लछिराम प्रमानहि

के रस चाखैं। लायक श्री रघुनाथ कृपानिधि, पैज पपीहरा को मन राखैं ॥२१०॥

॥ अथ सद अर्थ असद अर्थ निदर्शना सद अर्थ यथा—दोहा ॥

करै अवस्था सों निजै, भलो बुरो फलदान।
सासद अर्थ निदर्शना, इमि असदर्थ प्रमान ॥२११॥

॥ सवैया ॥

सन्तनै सींचत हैं सुख वारि सों, जीव कृषीन को त्यों रखवारो। आनँद को भरैं मोर मुनीन पै, भूमि कृषीन तैं ताप निकारो॥ चाहिये साहिवी सों जग ऐसई, यों लछिराम प्रमान हमारो। स्याम घटा सिख देत यही, रघुनाथ को या विधि रूप सँवारो ॥२१२॥

॥ अथ असद अर्थ यथा—दोहा ॥

असद जो निज व्यवहार करि, औरन पर धरि ज्ञान।
तहँ असदर्थ निदर्शना, कविकुल करत प्रमान ॥२१३॥

॥ यथा सवैया ॥

धूरि धुरेटे चपेट परे महि, सङ्ग न कोऊ सहायक गोत है। भैया सगो भयो बैरी समै लहि, बूडिगयो बल बाँह उदोत है॥ और कहा कहिये लछिराम जू, सोई मिलै फल जाकर बोत है। तारा कही मुख बालि निहारिकै, राम न जाने को या फल होत है ॥२१४॥

॥ अथ व्यतरेकालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ अवर्न्य अरु वर्न्य को, कछु विशेष व्यवहार।
अधिक न्यून सम भेद विधि, तहँ व्यतिरेक विचार ॥२१५॥

॥ अधिक यथा—कवित्त ॥

सुहृद सरोजन पै वैसई विलास भर, कुमुद कुचाली तिमि सम्पुदित डर सों। कोक मुनि मण्डल असोक अनुरागन में, भाग भरे भौंर कवि कोविद अमर सों॥ लछिराम राजैं रजनीहू में प्रकासित सो, तुलिगो विचार में बराबरी के लर सों। मण्डन भुअन महाराज रामचन्द्र कछू, रावरो प्रताप है विशेष दिनकर सों ॥२१६॥

॥ न्यून यथा—कवित्त ॥

सौरभित सीतल सुधारस वलित वर, कुमुद हितून पै सुरूप त्यों जगत है। लछिराम चहके चकोर जन जीवन पै, जीवन लौं कर को प्रवाह उमगत है॥ मर्त्यलोक मण्डल मनोहर अमल अंस, असुर समालिनै करत दल गत है। मैथिली बदन सम कार चन्द पूनो कछू, वासर विलास पर ऊनो सो लगत है ॥२१७॥

॥ अथ सम व्यतरेक यथा—सवैया ॥

भौंहैं कमान छटा पटपीत पै, जोति अमा जगै जाहिर नीरे। लक्ष्मी सौरभ रासि सुधामई, भूपर फैलत रङ्ग हरीरे॥ बांचत चोलि कथा लछिराम त्यों, मोर मुनीन के जोर जँजीरे। स्याम घटा रघुनाथ सुरूप, करै सब के मन मौज मैं सीरे ॥२१८॥

॥ अथ सहोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

रस भेदिस जहँ वरनिये, सब को एकै साथ।
भूषन सुभग सहोक्ति तहँ, परमानत गुन गाथ ॥२१९॥

॥ यथा सवैया ॥

आरत बैन सो दीन दुखी मिल्यो, साहसहू रच्यो सोक समूरो। भेटत ही भरि अङ्क कलङ्क के, अङ्क मिटाय रच्यो रन सूरो॥ राजसिरी परमारथ स्वारथ, भाल विभीषन के भन्यो रूरो। आनन सामुहे श्री रघुनाथ के, एकई बार मनोरथ पूरो॥२२०॥

॥ अथ विनोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ प्रस्तुत कछु बिन रहै, छीन प्रगट दरसाय।
भूषन प्रथम विनोक्ति तहँ, बरनै बुध कविराय॥२२१॥

॥ यथा कवित्त ॥

बीते कई वासर अपार बार आसरे मैं, सागर गँभीर धीर धरम धिराजै है। लछिराम कोटिन प्रताप बड़वानल सो, दारुन दरेरे दल दरप दराजै है॥ कौशल कलस कम नैत जङ्ग जैत सङ्ग, जामवन्त जदपि सुकण्ठ की समाजै है। बिनै बनचारी की नरेस मणि रामचन्द्र, रोष बिन वीर पै न बीरता बिराजै है॥२२२॥

॥ पुनः ॥

बांह बल बिरद बिसाल बरिबण्ड वीर, मण्डन भुअन बीरताई है अमर मैं। लछिराम ललित गणेश अमरेस ब्रह्म, ख्याली समसेर गज केहरी कमर मैं॥ ज्वाली जङ्गबान घन घोरिया कमान रोदे, जदपि न सोर ऐसो शम्भु के डमर मैं। चौदह सहस खरदूषन समत्थ सोहैं, सोहैं ते न राम रथ बिन या समर मैं॥२२३॥

॥ सवैया ॥

कानन भो अमरावती यों, सुर आन लों सान सन्यो लहरात हैं। पुञ्ज प्रताप प्रभा लछिराम, सु रातें पताकन ते फहरात हैं॥ राम सुरूप निधान को रूप, प्रकासक पञ्चवटी न अमात है। लक्खन-मैथिली साथ जऊ, रिपुदौन भरत्थ विना न सोहात है ॥२२४॥

॥ पुनः ॥

केसरी अङ्गद नील सुखेन, सुकंठ पै साहिबी यों झलकी है। बाको विभीषन रीछपती, नल लालिमां ओरन में छलकी है॥ राम सिरोमनि त्यों लछिराम जू, धीरता लक्खन की बल की है। सेनप सान भरे सिगरे, हनुमान विना न प्रभा दल की है ॥२२५॥

॥ द्वितीय वि०—दोहा ॥

कछुक हीन प्रस्तुत भये, जहँ प्रभाव सरसाय।
है विनोक्ति तहँ दूसरो, बरनत कवि समुदाय ॥२२६॥

॥ यथा कवित्त ॥

मैथिली विसाळ ब्रह्मरासि की कलस कल, ताप गरजन भाल तिलक बनावैगो। आरत बचन अपराधहि छमा कराय, लछिराम लछिमनै विनती सुनावैगो॥ परम सुजान दशवदन प्रतापवान, भासमान दूसरो विरद अग छावैगो। धरम धि राज महाराज रामचन्द्र सोहैं, परिहरे गरब प्रभा अनन्त पावैगो ॥२२७॥

॥ सवैया ॥

धीम सभा सहिकै अपमान, विचारिकै ही में गुमान छली

को। श्री रघुनाथ के सामुहे बैन, अनाथ सो बोल्यो लखाय गती को ॥ भेंटतै अङ्क कुअङ्क मिटै, दियो भाल थली भलो भाग सु टीको। छूटत ही दसकण्ठ को साथ, विभीषन राव त्रिकूट मही को ॥२२८॥

॥ अथ समासोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

प्रस्तुत मैं अस्फुरित जहँ, अप्रस्तुत को भाव।
अलङ्कार तहँ कहत हैं, समासोक्ति कविराव ॥२२९॥

॥ यथा कवित्त ॥

धनुष सो धनु बूँदैं बान सौं प्रकासमान, बीजुरी लौं माधुरी हँसनि भावसन मैं। बरन घटालौं बकुलावली सु मोती माल, मुखर सो बैन धारा दान सरसन मैं। लछिराम सीरे त्रिभुवन जन गावैं जस, जालिम जवासा बैरी बन झरसन मैं। झलकी परै हैं परमानद सो अभिराम, चारु चतुराई सुन्दराई स्याम घन मैं ॥२३०॥ *

॥ अथ परिकर अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहां बिशेषण ठानिये, आशय सहित प्रवीन।
अलङ्कार परिकर तहां, बरनत हैं रसलीन ॥२३१॥

॥ यथा कवित्त ॥

मङ्गलीक माला गरे हार गज मोतिन के, खोर भाल मलय बिसाल अवतारा को। आनन सुरूप सरवर हांस हीरा हार, बचन अमीरस अमन्द सुभ सारा को ॥ अरबिन्द नैन

* तिलक—यामैं प्रकाश वर्णन कवि स्याम घन को करै है, रीति रहस्य रामचन्द्र की अस्फुरति है। यहो प्रस्तुति मैं अप्रस्तुति भई ॥

अङ्ग भूषन जवाहिर के, लछिराम जस हिमालय को पसारो को। सीतल करैंगे मेटि ताप त्रिभुअन राम, स्याम घन मनु बरसि दान धारा को ॥२३२॥ *

॥ अथ परिकर अँकुर अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

साभिप्राय विशेष सो, परिकर अंकुर मानि।
बरनत बुध अनुमान करि, अन्यन को मत जानि ॥२३३॥

॥ यथा सवैया ॥

चन्द सो आनन भाल विसाल में, चन्दन स्योर सभाय सिँगार में। माल गरे मुकतावली के, अरविन्द विलोचन मौज के भार में ॥ रङ्ग सँवारि घटा सो लसे, लछिराम सबै गुन सीरे विचार में। राम कृपानिधि वेई सही, फल चाख्यो कृपा करिके यकवार में ॥२३४॥

॥ अथ श्लेषालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

शब्द एकही में जहाँ, अर्थ बहुत सुख साज।
अलङ्कार अश्लेष तहँ, बरनत पण्डित राज ॥२३५॥
जुगल रीति सों प्रथमही, गनि अभिन्न पद धीर।
फिरि दूजो गनि भिन्न पद, भ यन मत गम्भीर ॥२३६॥

॥ अभिन्न पद वर्णन—दोहा ॥

भेद भिन्न पद काढ़िये, पदसों पद परमानि।
अरथ भिन्न करि शब्द के, उपमाश्लेषहि मानि ॥२३७॥

॥ यथा कवित्त ॥

परम प्रकास माम सौरभित स्वच्छ साल, पावन त्रिजग

* तिलक—या ठौर विशेषही में अभिप्राय सीतलत्व गुणा को अपेक्षा है

सीरे गुन सरवस है। भूषन महेस द्विज देवन हरन ताप, सुभ स्वेत बरन प्रभाव एक रस है॥ नागरी सिँगार चारु नागर नरेस चाहैं, लछिराम लोचन अनन्द आदरस है। तरल तरङ्ग गङ्ग चन्द्रिका अभङ्ग मलै, मङ्गलीक राव रामचन्द्र को सुजस है ॥२३८॥

सांवरे बरन सुकमार श्री मुखर मंजु, बनक बिलास मैं सुमन धनु सर के। परम प्रमोद बन सङ्ग बीजुरी सी बाम, औलि बक माल मुकताहल के लरके॥ मन्दर धरन लछिराम रस बरसत, खरके रहत रङ्ग मानस मैं हर के। मङ्गलीक मोहन अमन्द अभिराम राजैं, काम घन स्याम रामचन्द्र जस वर के ॥२३९॥

॥ अथ भिन्न पद—यथा कवित्त ॥

मंडित पराग भाग सुखमा सँवारे स्वच्छ, सीरे त्रिभुअन जन सङ्ग रस वर के। हरन प्रदोष मारतंड तैं महातम त्यों, लछिराम राजैं अवतंस भूमि धर के॥ राजबंस देन द्विज राजन परम प्रिय, कामद रतन हैं महान सरवर के। कमल सुरङ्ग कै त्रिबेनी के तरङ्ग कैधौं, मङ्गलीक चरन महीप रघु-वर के ॥२४०॥

॥ अथ ओज माधुर्य्य प्रसाद गुन संक्रमितश्लेष—यथा दोहा ॥

माधुर्य्योज प्रसाद मैं, गुन संक्रमित सु धीर।
त्रिविधि धरमि अश्लेष पुनि, सुकवि सुनत गंभीर ॥२४१

॥ अथ ओज गुन सँक्रमित श्लेष—यथा दोहा ॥

झलकै शब्द न वाच मैं, अर्थ सु वहु गम्भीर।
ओज सगुन संक्रमित सो, प्रथम श्लेष सुधीर ॥२४२॥

॥ कवित्त ॥

मन सबही के हेरें कछुक विलास हीमें, परम प्रकास मान सुमन समीर के। जंग जेतवार मही मंडल अखंड ओप, आब सो चलित जगे जौहर गँभीर के॥ दिन मनि मित्र निसाचरन पै औरे सान, लछिराम आनँद चलित रस धीर के। कोक नद वारे काम कँवर सँवारे कैधौं, करुना कलित नैन राम रघुबीर के॥२४३॥

॥ अथ माधुर्य्य गुन संक्रमित श्लेष यथा—दोहा ॥

कछु प्रकाश गम्भीरता, कछुक शब्द के संग।
माधूरज गुन संकमित, या श्लेष नव रंग॥२४४॥

॥ सवैया ॥

चन्द्रिका चन्दन चारु विलास, मिले नखतावली माल समाजे। चौहँ चकोर भिरे मुनि मंडल, मण्डित रूप सुधा मई साजे॥ आनँद अस अमात न गात में, यौं लछिराम धनी पर काजे। कामद राम कलाधर है, के कलाधर पञ्चवटी-मैं विराजे॥२४५॥

॥ अथ प्रसाद गुन संक्रमतिश्लेष यथा—दोहा ॥

विविधि भाँति सौं शब्द मैं, अर्थ प्रकाशक मानि।
गुनि प्रसाद गुन संकमति, यौं अश्लेष बखानि॥२४५॥

॥ कवित्त ॥

मेरी गज घर भाल फोरत करे न वार, सहज सिकारी खल मृग मंडरी को है। लछिराम राम सम्भु दल में सिंगार कूदि, नाचत पहार नव नाद अम्बरी को है॥ अजब उमङ्ग

रनरङ्ग में मुरै न कहूं, बरन लँगूर को प्रभाव लहरीकोहै। बलवान् महाबीर मण्डन भुवनबन, केसरीकुमार के कुमार केसरी को है ॥ २४६॥

॥ अथ अप्रस्तुतिप्रशंसालङ्कारवर्णन–दोहा ॥

बरनत अप्रस्तुति जहां, प्रस्तुति भा अनयास।
अप्रस्तुति परशंस तहँ, भूषण परम प्रकास ॥ २४७॥
कारजमुख कारन कतहुं, बरनत समुझि सुयान।
कारनमुख कारज कतहुँ, या प्रकार अनुमान ॥ २४८॥
कहि विशेष सामान्य मुख, कतहुं विचारत धीर,
कतहूं कहि सामान्य मुख, यौं विशेष गंभीर ॥ २४९॥
कतहुँ तुल्य प्रस्तावमें, तुल्य कथन सुखसाज।
अप्रस्तुति परशंस भनि, पञ्चभेद कविराज ॥ २५० ॥
जाहि चाह करि कवि रचै, प्रस्तुति तिहि परमानि ॥
अनचाहे जो अस्फुरै, अप्रस्तुति अनुमानि ॥ २५१ ॥

॥ अथ कारजमुख कारनकथन–यथा कबित्त ॥

नील नल नागर उजागर सुकण्ठ सोहैं, हनूमान अङ्गद सुखेन रोष रुपतैं। लछिराम जामवन्त केसरी कुमुद सेना बानर बिराट भाल पैजन परुषतैं। रावणके सोहैं दूत बचन अभूत बीर उतरत सेत बांधि दारुण दुरुपतैं। लखनि गँभीरताई गरब त्यों बीरताई, बलकी परै है राम लखन धनुपतैं॥२५२॥

॥ तिलक ॥

यह जो समस्त वृत्तान्त वर्णन कियो सो कारण प्रस्तुत है अरु सेनाके प्रभावते जो दूतके हृदय में भयानक भयो ताको नेकहू ना कह्यो सोई कारज अप्रस्तुत है ॥

॥ अथ कारनमुख कारजकथन–यथा कवित्त ॥

फहरे निसान मारू बाजे त्यों बजत मञ्जु, ढकिले मतङ्गन की माला वितरति है । लछिराम हरष हरोल हनुमान मुख, अङ्गद बहाली अङ्गभङ्ग सुतरति है ॥ भुज फरकीले नलनील वक्ष विकसत, सुघर सुकण्ठ सोहैं चारु चितरति है । लखनि तिरीछी राम लखन चखन कोरे, सागरपे सेत बाँधि सेना उतरति है ॥ २९३ ॥

॥ तिलक ॥

यह सेनाको उत्कर्ष आगमन वर्णन कियो सो कारण अप्रस्तुत है ताते रावणकी रुचि संग्राम हेत बढायवो कारज प्रस्तुत है ताको दूत ना प्रगट कियो ॥

॥ अथ सामान्यमुखविशेषकथन–यथा कवित्त ॥

हेरत ही परदोष दुखी, पर आनँदसों सुख है सतसङ्गमें । त्यों लछिराम विवेके प्रभाव, सो ठाने सदा सतवार उमङ्ग में ॥ आने न केसहू झूठ सुभाषन, भावत वीरता भाव उतङ्गमें ॥ ते धनि हैं रघुबीरके साधु हैं, जे भट जूझत हैं रनरङ्गमें ॥२९४॥

॥ तिलक ॥

सामान्य पदार्थ प्रथम वर्णन करि पश्चात् शूरनको विशेपकारि उपदेश्यो ।

॥ अथ विशेषमुखसामान्यकथन–यथा सवैया ॥

वे उनके शिर साजें किरीट, सुही पगरी त्यों सँवारत हैं मने, वे उनके धनुवान सँवारत, वे उनके मुख पान प्रभा सने ॥ और कहांलों कहे लछिराम, सभी जग फैलो विचार सबे ठने ।

साथमें लक्खन औ रघुनाथकी रीति प्रतीति निहारतही बने ॥ २५५ ॥

॥ तिलक ॥

यामें विशेष श्रीराम लक्ष्मणको दृष्टान्त देत हैं सामान्य परस्पर जनावत है ॥

॥ अथ तुल्यप्रस्तावमें तुल्यको कथन-दोहा ॥

शैव सदा बडभागमें, पूजत गौरि महेश।
राम रसिक सिय-रामके, गावत गुणगण बेस॥ २५६ ॥

॥ अथप्रस्तुतअंकुरअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

दूजी प्रस्तुतिको जहां, प्रस्तुति बीच प्रभाव ॥
प्रस्तुत अङ्कुर मानिये, अलङ्कार कविराव ॥ २५७ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

भरम गँवावै झरबेरि संग नीचन तें, कण्टकित बेल केतकीनपै गिरत है। परिहरि मालती सुमाधवी सभासदनि, अधम अरूसनके अङ्ग अभिरत है ॥ लछिराम शोभा सरवर मैं बिलास हेरि, मूरख मलिन्द मन पल ना थिरतहै। रामचन्द्र चारु चरनाम्बुज बिसारि देस, बन बन बेलिन बबूरे में फिरतहै ॥२५८॥

॥ पुनः ॥

भरम गँवाय लोक लाजके भरम खोलै, बोलै बैन अनरथ आनँद लगनसे। भोर सांझ बहकि बिहंगनसे लालीपर, भाँवरैं भरत बे बिचार तन मनसे ॥ लछिरामरूप रामचन्द्र कलपतरु छोडि, कलपना करत झूठे झूठिये वचनसे। रङ्गदार मूरख महीपन बदन सुक, बिन मागमें [illegible] ॥२५९॥

॥ अथ परजायोक्ति अलङ्कार वर्णन-दोहा ॥

वचननकी रचना अधिक, प्रथम भेद परमानि।
व्याजहि कारज साधिवो, परजायोक्ति प्रमानि ॥ २६० ॥

॥ प्रथम वचनरचना-यथा कवित्त ॥

दशो अवतारके गुनानुवाद सुने कान, दानी दीनबन्धु भार भुवन उढ़ायेतें। लछिराम धनुष स्वयम्वर कहाहे मौलि, मण्डली महीपनकी बीरता भुड़ायेतें ॥ सरहज सों हैं तिरछे हैं क्यों लजोहें नैन, देखें ना ननद बिन शीतल जुड़ायेतें। गति है गँभीर ब्रह्मराशि रघुवंश राम, रघुवीर मैथिलीके कङ्कन छुड़ायेतें ॥ २६१ ॥

॥ पुन ॥

परिहार फलि है फलकि नल नील चूके, मन्द परिजे है सान वानर बहालीसों। लछिराम जामवन्त सुघर सुकण्ठ दल, बुद्धि बहिजे है भौंर लहर करालीसों ॥ अरज सुसेन बीर लछिमन रावरेसों, रूतरु कहीजे राजनीतिकी प्रनालीसों। गौमतीकी भांति शिला सुन्दरी बने न सब, राव रामचन्द्र चरनाम्बुजकी लालीसों ॥ २६२ ॥

॥ पुन ॥

बालि तने बदन बिलोकि बिहसों दें कौन, तापस कटकमें सुभग जगभारीकों। जामवन्त केसरी सुकण्ठ पौन येहैं, कछू मानों लछिराम मैं प्रथम बनचारीकों ॥ अङ्गद बिहँसि दशकन्धरसों बोल्यो बही, बीरगनतीमें गनवायो करतारीकों। मार्‍यो मालवानं भार्‍या बिछलि त्रिकूट बीर, धावनि चतुर जो उजार्‍यो फुलवारीकों ॥ २६३ ॥

॥ अथ दूसरी पर्य्यायोक्ति वर्णन-सवैया ॥

चातुरी सों मनि-पालने ऊपर, साजती हैं फलफूलके दोने।
पच्छिन पींजरेके लछिराम, बुलावतीं चारे चखाय सलोने॥
श्रीरघुनन्दनको मचल्यो लखि, ढारतीं मेल मिलाप के टोने।
और महीपकुमारन कौशिला, बांटतीं हीरक हार खिलोने २६४

॥ पुनः ॥

या नख नीलसों गङ्ग कढीं, बढीं तीनहूं लोक तरङ्ग पसारे॥
फेरि मिलाय हों मैं करते, बहु बासर सों यह ब्योंत बिचारे॥
नेम यही द्विजदेवनतें, लछिराम निषाद हैं नाम हमारे। पावन पाँय पखारिकै राम, उतारौं तुम्हें तरनीके सहारे॥ २६५॥

अथ निन्दाव्याजस्तुतिअलङ्कार वर्णन-दोहा॥

व्याजहि निन्दाके जहां, अस्तुति भाव अमन्द।
व्याजस्तुतिनिन्दा तहां, बरनत कविकुलचन्द॥ २६६॥

॥ यथा कवित्त ॥

बदन बिरूप लखि सूरपनखाको मारू, बाजे बजवाये मन देवनके कसके। लछिराम चौदहो सहस पलही में मारे, दल खरदूषन समर सरकसके॥ बिछुलि कमान रोदे फोरैं भाल भेजे, फेरि कतरैं करेजे रंचे आलम अकसके। परबसी दरद न बूझें रघुबीर बडे, बेदरद बानहैं तिहारे तरकसके॥ २६७॥

॥ पुनः ॥

राजहंसिनीनमें सुरूप राजहंस रचि, सनमान सङ्ग मानसरमें घिरत हैं। परखि परीनपै प्रभा त्यों लछिराम छाय, परम प्रकाश टूटि तारेलों गिरत हैं॥ बरजो न मानै बरजोरी

अङ्कभरि २ असुरनकीरति कुमारी सों भिरत हैं। राव रामचन्द्र वीर आलिम तिहारो जस, चोदहों भुवन व्यभिचारीसों फिरत है ॥ २६८ ॥

॥ अथ स्तुतिव्याजनिन्दा वर्णन—दोहा ॥

अस्तुतिमें झलके जहां, निन्दाको परभाव।
अस्तुति निन्दा व्याज तहँ, बरनत पण्डित राव ॥२६९॥

॥ यथा कवित्त ॥

बारन उबारनमें बाहन सों दूनो दोरि, द्रोपदी समेके बांकपन बिसरत हो। ब्रह्मराशि रघुबंशभूपन परमहंस, पारस पहार पग पीछे क्यों धरत हो ॥ चाऱ्यो युग चोदहों भुवन देव दीनबन्धु, पैजपरिपाटीपे अनाक निकरत हो। लछिराम सांकरेमें राव रामचन्द्र वीर, कोशलकलश ह्वै कनोडे-क्यों परत हो ॥ २७० ॥

॥ पुन ॥

देव-बन्दि छोरे षटपारन गरब गारि, सिन्धु सेत बांधिबेको परबत फोरेको। परमकुलीन परमातमा परमहंस, बेर सेवरी छै बेर बिरद बियोरेको ॥ शिरताज राज महाराज रामचन्द्र वीर, धरमधिराज रावरेसो बरजोरे को। शङ्कर शरासन स्वयम्बर में तोरे अब, लछिराम शङ्कट शरासनहि तोरे को ॥ २७१ ॥

॥ सवैया ॥

माऱ्यो न लक्खन की धनु रेखें, विमान की वायुलों बेग करी है। गीध जटायुसों अङ्क रच्यो, फिरि जानि जरापन लाज धरी है ॥ बाटिके फन्दसों फांदि बच्यो, लछिराम कथा को

कहै सिगरी है। वीरको रावन रावरे सो, बनमें जिन राम की वाम हरी है॥ २७२॥

॥ अथ स्तुति व्याज स्तुति–दोहा॥

अस्तुतिमिस झलकै जहां, अस्तुति और सुवेस।
अस्तुति मिस अस्तुति तहां, बरनैं सुकवि नरेस॥२७३॥

॥ यथा कवित्त॥

रोदेसों बिछलि रथ सारथी समेत बंधे, वदन तुरङ्गन पै बेझे लों तरत हैं। लछिराम अजब अतङ्क बार ज्वालाकार, मालामें असुरके न केहूं अतरत हैं॥ तापर प्रचण्ड यह कौतुक सराहै कौन, रामअवलोको जिन्हैं कीन्हे छतरत हैं। भेजा भाल फारि बान कुञ्जर बरेजा फेरि, कातिल करेजनके रेजे कतरत हैं॥ २७४॥

॥ निन्दा व्याजनिंदा–दोहा॥

निन्दामिस बरनत कहैं, निन्दा अपर महान।
निन्दा मिस निन्दा तहां, परमानत गुनवान॥ २७५॥

॥ यथा सवैया॥

श्रीमिथिलाके स्वयम्बर में, धनुभङ्ग समै ते सबै परमानै। सुन्दरी देव अदेवनकी भरी, भूरि भयङ्कर ते सनमानै॥ तापर कौतुक या बगऱ्यो, लछिराम सुकीरति कौन बखानै। रावन रावरे बाहन को बल, अङ्गदके पग औरऊ जानै॥ २७६॥

॥ अथ आक्षेपालङ्कारवर्णन–दोहा॥

आक्षेपालङ्कारकों, त्रिविधि कहत गुनधीर।
प्रथम निषेधाभास फिरि, बचन फेर गम्भीर॥ २७७॥

राखे जतन दुरावसो, वर निषेधके साथ ।
आक्षेपालङ्कार यों, बरनत बुध बुधिनाथ ॥ २७८ ॥

॥ प्रथम निषेधाभास–यथा सवैया ॥

बानर बालि बली को कुमार हौं, अङ्गद मानिये नाम हमारो । तीनहु लोकनके शिरमौर, हमें इत भेजिबे ज्यौंत विचारो ॥ बीसहू हाथनके बलसों, लछिराम जू या न टर्‍यो पग टारो । दूतनमें दशकन्धर श्रीरघुनाथ-प्रभाव अभूत निहारो ॥ २७९ ॥

॥ पुन ॥

जूथप केसरी नील मयन्द, सुसेन लँगूर जहाँ फ[illegible] देव रीछपती हनुमान सुकण्ठ को, ज्वालिया आनन ल[illegible]छिराम गो ॥ लक्खन बाननको लछिराम, प्रवाह सुभूपर त्यों [illegible] कनोले- रावन दूतनमें रघुबीरके, पैरको जोहर जानि परेगो । [illegible]

॥ द्वितीयवचनफेर–यथा सवैया ॥

चारिहू ओर कढीं किरनैं, अथवा फरक्यो फनमाल फनीको । कोटिन भार अँगार को है, अथवा बडवानल या अवनीको ॥ राक्षसी हेरि बली हनुमाने, रचें लछिराम सतर्क मनीको । भान-उदै प्रलै-बासरको, अथवा सुसलङ्क लँगूर धनीको ॥ २८१ ॥

॥ पुन ॥

[illegible]बन श्रीमहाराजकुमार, पयानसमे डर्‍यो ना डम- केगो । लक्खने साथ सुने लछिराम, सु या पलमें यही ज्यौंत मरेगो ॥ छोडिबो औघ अचानक तो, बली या व्रतधारो लकीर

खचैगो। प्रान विलोकियै पञ्चबटी बन, रावरे सों पहिले पहुँचैगो ॥ २८२ ॥

॥ अथ बिरोधाभास अलङ्कार बर्णन -दोहा ॥

भासै बिदित बिरोध जहँ, जमकबलित पदसङ्ग।
बरनि बिरोधाभास तहँ, अलङ्कार नवरङ्ग ॥ २८३ ॥

॥ यथा सवैया ॥

किङ्कर श्रीरघुनाथको हौं, कछू किङ्करताको न ब्यौंत बिचारौं। साथी सुकण्ठ हरौलको हौं, रनरावन साथी हरौ-लपछारौं॥ हौं सुत केसरीको लछिराम, सुकेसरी लङ्कबली-नको मारौं। मौज मढ़्यो महाबीर हौं मैं, महाबीर निशाच-रके मद गारौं ॥ २८४ ॥

॥ अथ विभावनाअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

बिदित होय बिन कारनै, कारज को सब साज।
बरनत प्रथम बिभावना, अलङ्कार सिरताज ॥२८५॥

॥ यथा कबित्त ॥

ऋषिनकी बामै हेरि करतीं कलामैं सम्पा, श्याम घन बरन सँवारै कौन कलके। बलकल बसन सुरूप त्रिभुवन भऱ्यो, भाल बिन कलँगी मसाल झलाझलके ॥ गजरथ पालकी चमर छत्र हीन तऊ, लछिराम लसत सिँगार बिश्वदल के। कौशलकुमार ये अतर पान छोडे बन, बदनकी श्वासन तरङ्ग परिमलके ॥ २८६ ॥

॥ पुनः ॥

भूषन बसनवारे बलकल डारे अङ्ग, रोम रोम अनुरूपे रूप के सहर हैं। जटाजूट शिखर ... परिमित भाल, परम

प्रतापवान जगर मगर हैं ॥ दल दूब आसन सिंहासन सोभा समान लछिराम नाम रघुवीर ब्रह्मपर हैं। श्यामघन बरन अकेले आभरन भूमि, परनकुटीमें ये कहांके कलाधर हैं ॥ २८७ ॥

॥ द्वितीय विभावना वर्णन–दोहा ॥

हेतु अपूरणते जहां, कारज पूर अशङ्क।
बरनैं विबुध विभावना, मानि दूसरो अङ्क ॥ २८८ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

तरकसी छोटी कष छोटे छोटे धनुबान, छोटे कर छोटी छोटी आँगुरी बगरमें। छोटे छोटे बदन विशाल भाल नैन लाल, बार गभवारे बालप्रभाकी लहरमें ॥ लछिराम छोटे पग चलिके कुमार दोऊ, करत अचूक वार आचरज हरमें। हनूमान अङ्गद भरत्य शत्रुहन हारे, लखन समत्य लवकुशके समरमें ॥ २८९ ॥

॥ पुनः ॥

खेलत सिकार रघुवंशी लवकुश लोने, बाल बेषधारी तऊ साहसी सजब के। द्वैजके मयङ्क तन परन निशंक मन, लछिराम शिखर चढैया जोर जबके ॥ करन किरात फोरैं गजमुकताके हेत, करतों किरातिनै कुतूहल अजबके। छोटे धनुबानन सों घन वन मन्दरमें, गिरत मतङ्ग महामारेसे गजबके ॥ २९० ॥

॥ पुनः ॥

बार गभवारे बान तरकस राते पीरे, धनुष हरीरे शिशुपन के फुलेले हैं। लछिराम जामवन्त द्विविद मयन्द कटे, केसरी

कुमुद नील नल झगरेले हैं ॥ हनूमान अङ्गद बिभीषन सुकण्ठ लटे, शत्रुहन भरथ लखन अलबेलेहैं । राजवंशी रघुवंशी बानर बिराट भालु, पलमैं खिलौने सम लवकुश खेलेहैं ॥ २९१ ॥

॥ तृतीय विभावना वर्णन-दोहा ॥

विद्यमान प्रतिबाधकहुँ, कारज पूरो अंश ॥
तीजो भेद बिभावना, परमानत बुधवंश ॥ २९२ ॥

॥ यथा कबित्त ॥

सङ्ग मुनिवारे हठ करिकै निखङ्ग छोरैं, मानत न केहूं मृगयाके भराभर मैं । अधकटे अरना बराह बाघ लोटे भूमि, गैंड़ा गरबीले गिरे चोटन कहरमैं ॥ मन्द २ बिहँसि अमन्द लछिराम लोने, लवकुश राते बीरताई की रगर मैं ॥ बारन बराह बाघ बरपै किरातनके, बरजत मारू बान मारत शिखर मैं ॥ २९३ ॥

॥ पुनः ॥

ज्वाली जङ्ग सारथी शिखर फोरि फहरात, तोरत बदन बाजी गज गुन गथमैं । लछिराम रेले थहरावन झमेले लङ्क, छावन अतङ्क बगमेले बीर पथमैं ॥ बिहँसि बिडारैं डारैं भूपर प्रकाशमान, तोरन चमर छत्रवार अनरथमैं । रोष्यो रन रङ्ग रामचन्द्र बरजत मारैं, लखन कुमार बान रावनके रथमैं ॥ २९४ ॥

॥ चतुर्थ विभावना वर्णन-दोहा ॥

कारनके तनसों जहां, कारज को अवतार ।
भेद चतुर्थ विभावना, भाषत सुमतिभँडार ॥ २९५ ॥

प्रतापघान जगर मगर हैं ॥ दल दूब आसन सिंहासन सोभा समान लछिराम नाम रघुवीर ब्रह्मवर हैं। श्यामघन बरन अकेले आभरन भूमि, परनकुटीमें ये कहांकि कलाधर हैं ॥ २८७ ॥

॥ द्वितीय विभावना वर्णन—दोहा ॥

हेतु अपूरणते जहां, कारज पूर अशङ्क।
बरनें विवुध विभावना, मानि दूसरो अङ्क ॥ २८८ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

तरकसी छोटी कघ छोटे छोटे धनुवान, छोटे कर छोटी छोटी आँगुरी वगरमें। छोटे छोटे वदन विशाल भाल नैन लाल, वार गभवारे बालप्रभाकी लहरमें ॥ लछिराम छोटे पग चलिके कुमार दोऊ, करत अचूक वार आचरज हरमें। हनूमान अङ्गद भरत्थ शत्रुहन हारे, लखन समत्थ लवकुशके समरमें ॥ २८९ ॥

॥ पुनः ॥

खेलत सिकार रघुवंशी लवकुश लोने, बाल वेषधारी तऊ साहसी सजब के। द्वैनके मयङ्क तन परन निशंक मन, लछिराम शिखर चढ़ैया जोर जबके ॥ करन किरात फारैं गजमुकताके हेत, करतीं किरातिनै कुतूहल अजबके। छोटे धनुबानन सों घन बन मन्दरमें, गिरत मतङ्ग महामारेसे गजबके ॥ २९० ॥

॥ पुन ॥

वार गभवारे बान तरकस राते पीरे, धनुष हरीरे शिशुपन के झुलेले हैं। लछिराम जामवन्त द्विविद मयन्द कटे, केसरी

लखैया जोर मैथिली विरह जाग्यो, जालिम जोन्हैया तेज तीषन तरानिसों ॥ ३०० ॥

॥ पुनः ॥

बासन बसन तपें आसन असन औरे, दल फल फूल मूल सूल हूल हरके। बगरे बिहङ्ग प्रतिकूल ठौर ठौर बोलें, गुंजरत भौंर जादू जालिम जहरके ॥ लछिराम लखन विरह मैथिलीके बस्यो, दारुन दवालों गुणबारिमें लहरके। सौरभ समीर तीर करत करेजे रेजे, मालाकार कोकनद पंपासर-वरके ॥ ३०१ ॥

अथ विशेषोक्ति अलंकार वर्णन-दोहा ॥

हेतसङ्ग सामर्थसों, तऊ न कारज होय।
विशेषोक्ति भूषन तहां, बरनत ग्रंथन जोय ॥ ३०२ ॥

॥ यथा कबित्त ॥

बरि गये बालि खरदूषन बिराधबङ्क मेघनाद रावन-करन घट धालामें। चौदहों भुवन खल बंशन विधंसि परे भभाकि, उलीची बटपारनके सालामें ॥ अजब अतङ्क लङ्क शिखर चढी त्यों घोर, जौहर ज्वलित जंग जैतपत्र आलामें। लछि राम-सङ्कट कराल काठ कैसो, राम जरत न रावरे प्रतापा-नल ज्वालामें ॥ ३०३ ॥

॥ पुनः ॥

बान महारावन सुरासुर समत्थ-दल, खलभल पर्‍यो जा स्वयम्बर प्रवेसको। लछिराम जाके भुजदण्डन अखण्डन पै विरह प्रचण्डबरदानि या हमेसको ॥ तोरेको मरोरै बरजोरैको जुगल गोसे, घनघोर व्रतभो सुमेर मिथिलेसको। बलकरि

॥ यथा सवैया ॥

भूपर मुद्रिका डारिदियो तरुते हनुमान विचार इरोते। अङ्क विलोकते शङ्क भरी, सुन्यो बैन विनीत, सुधारस धोते। श्रीरघुबीर को दूत हों मैं लछिराम तें अम्ब छमा कर गोते। मैथिली लोचन वारिजसों उमड़ेंहैं उजागर सागर सोते॥ २९६॥

पञ्चम विभावना वर्णन–दोहा॥

प्रगट अकारन वस्तुसों, कारज वपु व्यवहार।
पञ्चम भेद विभावना, गति मति उदय उदार॥ २९७॥

॥ यथा कवित्त ॥

बाँद बली अङ्गद सुकण्ठ शिरमोर मृगराजकी दपटमें तिरीछे तरजत हैं। लछिराम केसरी कुमुद नील नल मारतण्ड मुख तेज जिन्हें कौन बरजत हैं॥ बानर विराट रीछ कातिल कटक हेरि, लङ्क दल दारुन के धीर लरजत हैं। गुञ्जरत कुञ्जर कलोलें जामवन्त प्रलै मेघ बरबानी हनूमान गरजत हैं॥ २९८॥

अथ षष्टम विभावना वर्णन–दोहा॥

कारन ते उपजे जहां, कारण परम विरोध।
छठ्यों भेद विभावना, बरनत सुमति प्रबोध॥ २९९॥

॥ यथा कवित्त ॥

परत न चैन रैन बासर सघन घन, कैसी कहुं ताप धीर नासन धरनि सों। लछिराम रोप्यो मारतण्ड मो कुचाल पर, कलप समान पल बीते या डरनिसों॥ पन्नग विलासी मलै मन्दर पवन आवे, परचत बैरी बाड़वानल जरनिसों। लसन

॥ यथा कवित्त ॥

सुघर सुकण्ठ सोहैं दाहिनेपै अङ्गदके फूले न समात यों बिलास बांहबलके। लछिराम लङ्गर लँगूर की लपट तैसी, ख्यालहीमें झपट पसारैं खलभलके॥ उपटी परै हैं करकलित गदाकी छटा, बिकसे अपर राम लखन सबलके। जौहर जँजीरे लालमुख हनूमान हेरि, सीरे गात पीरे परैं रावनके दलके॥ २१०॥

॥ पुनः॥

दिग्गज नगारे देव गरजत आपहीतैं, सगुन शची त्यों गौरि पूजन करति हैं। लछिराम सातो दीप सुन्दरी सँवारैं साज, असुरकी बामैं बन–दावालों जरतिहैं॥ छीर भरे सागर सरित सरितान मौलि, मन्द मधु मालती समीर ही हरति हैं। अवध अमन्द रामचन्द्र अवतारहेत, भाँवरैं दिनेशकी दिगङ्गना करति हैं॥ २११॥

॥ पुनः॥

गुञ्जरत कुञ्जर झमकि मतवारे बाजि, नागर बटासे नट बागन मुरनके। लछिराम रथके झमेले रङ्गदार मारू, बगर बितान पौन गौन आतुरनके॥ जामवन्त जालिम सुकण्ठ लछिमन बीर, तेजे लहरेजे सब जंगके जुरनके। रावरामचन्द्र चतुरंगिनी चमूके भार, रेजेहोत कहर करेजे असुरनके॥ २१२॥

॥ द्वितीय असङ्गति वर्णन–दोहा॥

और ठौरही जहँ करत, और ठौरको साज।
गनत असङ्गति दूसरी, सुकबिनके शिरताज॥ २१३॥

याके सातो दीपके महीप तऊ, तनक न छोड्यो भूमि धनुप महेसको ॥ २०४ ॥

॥ सवैया ॥

घेर घनो घननादको सामुहें, त्यों घटकर्नके बानकी कोटें। बोलत जाके कँपे धरनी, लछिराम धरे शिर बीरता मोटें ॥ रावनसों बलवान् धनुर्धर, राखे निशाचर आयुध खोटें। खाली परें न तऊ दलमें, हनूमान हठीके लँगूरकी चोटें ॥ २०५ ॥

॥ अथ असम्भवालंकार वर्णन—दोहा ॥

कौनहु कारज सिद्धिको, करत असम्भव देस।
अलंकार मानें तहां, असम्भावना बेस ॥ २०६ ॥

॥ यथा सवैया ॥

केसरी त्यों नल नील सुकण्ठ, पहारहि रुपालमें खोदि बेहेंहें। अंगद औ हनूमान सुखेन, सही लछिराम धुजा फहरें हैं ॥ बानर भालु कोलाहल में, जल जीव तरङ्ग सबै दबिजे हैं। जाने को आज महीपति राम, सबै दल बारिधि बांधिके ऐहें ॥२०७॥

॥ पुन ॥

तोरिके बाननके तरुको, तहीं गेद अरामनिको बिदरैगो। मारिहै रावनके सुतको, लछिराम न केसहू शक धरैगो ॥ तेल औ तूल दुकूलन में, सिखी पन्नग फांस हीसों निकरैगो। जाने को आज त्रिकूट प्रभा, हनूमान लँगूरसों छार करैगो ॥ २०८ ॥

॥ अथ असङ्गति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

कारनतें जहँ भिन्न थल, कारजको सब साज।
प्रथम असङ्गति भेद यों, बरनत बुध कविराज ॥ २०९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

सुघर सुकण्ठ सोहैं दाहिनेपै अङ्गदके फूले न समात यों बिलास बांहबलके। लछिराम लङ्गर लँगूर की लपट तैसी, ख्यालहीमैं झपट पसारैं खलभलके ॥ उपटी परे हैं करकलित गदाकी छटा, बिकसे अपर राम लखन सबलके। जौहर जँजीरे लालमुख हनूमान हेरि, सीरे गात पीरे परैं रावनके दलके ॥ २१० ॥

॥ पुनः ॥

दिग्गज नगारे देव गरजत आपहीतैं, सगुन शची त्यों गौरि पूजन करति हैं। लछिराम सातो दीप सुन्दरी सँवारैं साज, असुरकी बामैं बन-दावालों जरतिहैं ॥ छीर भरे सागर सरित सरितान मौलि, मन्द मधु मालती समीर ही हरति हैं। अवध अमन्द रामचन्द्र अवतारहेत, भाँवरैं दिनेशकी दिगङ्गना करति हैं ॥ २११ ॥

॥ पुनः ॥

गुञ्जरत कुञ्जर झमकि मतवारे बाजि, नागर बटासे नट बागन मुरनके। लछिराम रथके झमेले रङ्गदार मारू, बगर बितान पौन गौन आतुरनके ॥ जामवन्त जालिम सुकण्ठ लछिमन बीर, तेजे लहरेजे सब जंगके जुरनके। रावरामचन्द्र चतुरंगिनी चमूके भार, रेजेहोत कहर करेजे असुरनके ॥ २१२ ॥

॥ द्वितीय असङ्गति वर्णन-दोहा ॥

और ठौरही जहँ करत, और ठौरको साज।
गनत असङ्गति दूसरी, सुकबिनके शिरताज ॥ २१३ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

ढकिले मतङ्गमारू गरजे निसान बान, उतरत सेना बांधि सागर सवेरे हैं। लछिराम लखन महीप रामचन्द्र आगे, कोलाहल बानर विराट भाल मेरे हैं ॥ भूली भाल तिलक इराकों लङ्क बीच करि, हरबर चौहरे-अटान चढी टेरे हैं। असुर वधूटी बरबस फौज मालाकार, क्षुद्र घटिकाके कण्ठमाल कीरे हेरे हैं ॥ २१४ ॥

॥ पुन ॥

धौसाकी धमक अन्धकार भार धूमधाम, मारू बजे बाजे कोप कातिल कहरसों। जामवन्त जालिम सुकण्ठ केसरी त्यों सग, हनूमान अगद लराईकी लहरसों ॥ लछिराम राम चन्द्र विरद वितान ओर, बग-यो अतङ्क लकबीच भराभरसों। हरबर हेरे दशकन्धर कटक चढ्यो, करन किरीट लै त्रिकूटके शिखरसों ॥ २१५ ॥

॥ अथ तृतीयअसंगतिवर्णन-दोहा ॥

आरभित कामहि तजै, और काज मनलाय।
बरनि असङ्गति भेदको, तीजो बुधकविराय ॥२१६॥

यथा सवैया ॥

बेद विधान बिसेबर हेत, बढ़ी बिधिसों द्विज देव निहोऱ्यो। औचक बानरको दल आय, कुसासन कुण्डको बारि सों बोऱ्यो ॥ क्रोध भयो लछिराम जहीं, जहीं साम्हुहे मगल को घट फोऱ्यो। रावन श्रीमप साधन छोड़ि, बली लै गदा हनूमान पै दोऱ्यो ॥ २१७ ॥

॥ अथ विषमालंकारवर्णन-दोहा ॥

अनमिल संग समान जहँ, प्रथम विषम यह रीति ।
बरनत कवि कोविद सबै, ग्रन्थनमें करि प्रीति ॥ ३१८ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

सेनप सुकण्ठ नल केसरी कुमुद सोहैं, हरवल हनूमान बजर शरीरको । जामवन्त जालिम सरोहिया लखन बंक, तीखो बान शत्रुहन भरत गँभीरको ॥ लछिराम अन्धकार भारको न वारापार, तापर झमेला रघुबंशिनकी भीरको । युगल कुमार सुकुमार लव कुश कहां, परमकठोर घोर दल रघुवीरको ॥ ३१९ ॥

॥ पुनः ॥

राजवंश-कलश कलपतरु देवनके, कहां वह अलप अपावन सकलहै । पारस पुरन्दर धुरन्धर धरम कहां, सबर कुमारी जीव घात करतल है ॥ परमकुलीन वै कुमार दशरथ राव, अजब अयोग लछिराम या सकल है । त्रिभुवन मण्डन महान रामचन्द्र कहां, सूखो सब जूठो सेवरीको वनफल है ॥ ३२० ॥

॥ द्वितीयविषमवर्णन-दोहा ॥

कारनको रँग औरई, कारज रँग विधि और ।
अलङ्कार दूजो विषम, परमानत सब ठौर ॥ ३२१ ॥

॥ यथा सवैया ॥

फोरत भाल मतङ्गनके, बिथुरे मुकताहल त्यों रतनारे ।
यों लछिराम निशाचर वंशके, छार करैं मद रोषमें ढारे ॥

रावणके रथपे झपटैं, फनशेप ठोंके फुफकार हजारे।
श्यामघटा रघुनाथके हाथसों बान चलैं वडवानलवारे॥३२२॥

॥ अथ तृतीयविषमवर्णन–दोहा ॥

मेटि अर्थ आभीष्टको, विपरीतै फल होय।
भेद तीसरे विषमको, वरनैं बुध सब कोय ॥ ३२३ ॥

॥ यथा सवैया ॥

आरतसों पुरुषारथ में, परमारथ स्वारथ स्वाद मठी परे।
त्यों लछिराम गँभीरता मन्त्र में, मौज महातम कानि कठी परे॥
श्रीरघुनाथ प्रताप कथान में, ज्वालसी अङ्गन अङ्ग चठी लरे।
माधुरी वातैं विभीषणकी सुने, रावणके उर ताप चढ़ी परे ३२४

और विषम कर्त्ताको क्रियाको फल होय और अनर्थ होय।

॥ यथा सवैया ॥

घोर निशाचर बाँद बली, दुहुँ भैयनको भरिके अँकवाऱ्यो।
पैज पताल प्रवेशके यौं, लछिराम तिहूपुर सोर मचाऱ्यो॥
बीचहि घाप लँगूर धनी, गज ग्राहके चाह सों वार उघाऱ्यो।
लैचल्यो रामहि मारिबेको,महिरावनै श्रीहनूमान पछाऱ्यो ३२५

॥ अथ सम अलङ्कार त्रिविध वर्णन–दोहा ॥

यथायोग्य सङ्गम प्रथम, समया बरनत धीर।
कारनको रँग काजमें, मिले दुतिय गम्भीर ॥ ३२६ ॥
बिनश्रम कारजसिद्धता, आरम्भनमें होय।
या विधि भूषण त्रिविध सम,बरनैं कवि सबकोय॥ ३२७ ॥

॥ अथ प्रथम यथायोग्यको सङ्ग–यथा कवित्त ॥

जालिम असीले राजवश अवतस अश, परमप्रतापी त्यों
प्रताप झलाझलको। वक्स विरुद्ध क्रुद्ध कातिल झपट बान,

बैस तरुनापन तिरीछो त्यों युगलको ॥ लछिराम रावण विलोकत विहँसि उतै, विकसत रामहेरि वार हलचलको। मन्दर महान मतवारो मेघनाद तैसो, बजर सँवारो है लखन बाँह बलको ॥ ३२८ ॥

॥ द्वितीय समकारण, गुणकारजमें,-यथा कवित्त ॥

शोक मैथिलीको हऱ्यो विहरि अशोक बाग, दूत रघुवीर भऱ्यो गुणन गँभीरको । दाह्यो लङ्क प्रलै ज्वालमालासी प्रतापधर, अछय कुमारै माऱ्यो बजर शरीरको ॥ परम विरागी मिल्यो रक्षक विभीषणसों, लछिराम धरणि धनी है धर्मधीरको ॥ जालिम जलधि कूद्यो हनूमान बलवान, शिरमौर शाखामृग सुवन समीरको ॥ ३२९ ॥

॥ तृतीय समकारजकी सिद्धि विनाश्रम आरंभहीमें यथा सवैया ॥

जा महिमा को सुरेश गणेश फनेश विचारत सो धन आयो ।
जाहि सराहत है गिरिजावर ब्रह्म सनातन वेदन गायो ॥
सङ्गम ते बन जीवनके लछिराम तपोबल भौन भरायो ।
ता रघुनाथके हाथन बेस विनाश्रम सेवरीसो फलपायो॥३३०॥

॥ अथ विचित्रालङ्कार वर्णन-दोहा ॥

करै जतन विपरीति कछु, फल विचित्रकी चाह ।
तेहि विचित्रभूषण कहत, बुध कविन्द नरनाह ॥ ३३१ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

गरजैं निसान बान ढंकिले मतंग मारू, हुङ्करत वार संग खलभल कीबेको । ठनके कमान रोदे झनकैं कृपान रचैं, रुधिर विहद्द नद योगिनीन पीबेको ॥ कौतुक अनोखो रणरङ्ग

राम रावन में, कहत बने न विपरीति पर छीबेको। क्रुद्ध यान कातिल निशाचर समर-बीच, मरत उमाह में अमरलोक ली वेको ॥ २३२ ॥

॥ अथ अधिक अलंकार वर्णन–दोहा ॥

अधिक होय आधारते, जब आधेय स्वरूप।
प्रथम अधिक भूषण तहाँ, पर मानत बुध भूप ॥ २३३ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

उन्नत पहार नदी नदन अपारन को, घोल करि विरद बहाली बगरत है। लछिराम देव नरदेव सन्त घन वन, पावन परम सीरो आनँद भरत है। विरद वितानमें महीप रामचन्द्र दीप, दीप कलाधर लों कुतूहल करतहै। फैल्यो छीर-सागर तरङ्गसों तिहारो यश, छोरमें दिगतनके छलक्यो परतहै॥ २३४

॥ द्वितीयअधिकवर्णन–दोहा ॥

जबहिं होय आधेयते, अधिक अधार सुरूप।
अलङ्कार दूजो अधिक, पर मानत कविभूप ॥ २३५ ॥

॥ यथा सवैया ॥

चौदहौं लोकनकी रचना, भुवभार समेत बसी उर बीचे।
जामें नदी नदपुञ्ज पहार, महावन मण्डल ओलि अपींचे ॥
जा महिमाकी गँभीरतामें, सुरशम्भुहुके मन आवत सीचे।
राम सनातन ब्रह्मते राजत, कौशिला अञ्चल छोरके नीचे २३६

॥ अथ अल्पालङ्कारवर्णन–दोहा ॥

अल्प अल्प आधेयते, लखिय छाम आधार।
अधिक भेद बरनन करैं, जे प्रवीन शृंगार ॥ २३७ ॥

॥ यथा सवैया ॥

श्रीरघुनाथप्रतापकी आँचते, भागतीं देशनके बहिरेहैं ।
सुन्दरी वै लछिराम अदेवकी, मानतीं आनँदको जहिरे हैं॥
हायल मन्दर कन्दरामें, परीं छाम यौं सङ्क भरी गहिरेहैं ।
आरसीके भुजबन्द रचे,कर कङ्कन मूँदरीके पहिरे हैं॥३३८॥

॥ अथ अन्योन्यालंकारवर्णन–दोहा ॥

होय परस्पर दुहूँते, आनँद अङ्ग प्रकास ।
अन्योन्यालङ्कार तहँ,प्रथम कहत सविलास॥ ३३९॥

॥ यथा सवैया ॥

वे उनके धनुबान सँवारिकै राखत सामुहैं मौज गँभीरके ।
वै लछिराम उमाहनमें कल कौरैं निहारत छोरैं मनीरके ॥
वै उनके मुखै हेरि भरैं गरे माल घने मुकताहल हीरके ।
भागभरे सबलोग सराहत आनँद लक्खन श्रीरघुबीरके३४०॥

॥ अन्य प्रकार–यथा कवित्त ॥

सुघर सुकण्ठसों हरष हनूमान हनूमानसों सुकण्ठमें उमाह उमसति है । जामवन्त बीरसों बिभीषन बहाली बिभीषनते सुजामवन्त सीमा हुलसति है ॥ गज रथ बाजी सों बिलास रघुवंशी रघुवंशिनसों बाजी गजप्रभा बिलसति है । चतुरङ्गिनी सों राम लखन बिराजैं राम लखनसों सेना चतुरङ्गिनी लसति है ॥ ३४१ ॥

॥ अथ विशेषालंकारवर्णन–दोहा ॥

अनाधार आधेय जहँ, प्रथम विशेष प्रमान ।
चतुर चारु बरनन करैं, ग्रंथनमें सुखदान ॥ ३४२ ॥

॥ यथा सवैया ॥

बाँहबली हनूमान निशाचरी सैनमें कीनो महाउतपातहैं ।
रावनके रथमें लछीराम हन्यो गदा सारथी चक्र निपात हैं ॥
सेनपकेते लपेटि लँगूरमें दीने उड़ाय फटे फहरातहैं ।
सागर व्योमके बीच लटे उलटे दल ऊपरतेमडरात हैं ॥३४३॥

॥ द्वितीय वर्णन–दोहा ॥

लघुआरम्भहि में जहाँ, अधिक सिद्धि ह्वै जाय ।
दूजो कहत विशेष तहँ, अलङ्कार सरसाय ॥ ३४४ ॥

॥ यथा सवैया ॥

जाहि विलोकि डरै यमराजहु दूत विचारे विचार अधीर में ।
नाम न जानतहैं रघुवीरको यों लछिराम गुमान गँभीर में ॥
साधन थोरे कहाँलौं कहौं मतवारे न डारत हैं पग नीरमें ।
नीर में आवतही सरयूके फलैं फल चाऱ्यो सुरापिन भीर में ॥

॥ तृतीयवर्णन–दोहा ॥

बहु थलमें बरनन करे, सके वस्तु परभाव ।
तहँ तीसरो विशेष गनि, बरनत पंडित राव ॥ ३४६ ॥

॥ यथा सवैया ॥

गोकुल गोकुलनाथ घने, ब्रजमें ब्रजराज सनेह सँवारे ।
द्वारिका मण्डल द्वारिकानाथ, जगे जगन्नाथ समुद्र किनारे ।
व्योमथली महि सातों पताल, लसै लछिराम प्रताप पसारे ॥
चौदहों लोक सनाथ करैं, रघुनाथ अनाथके नाथ हमारे३४७

॥ अथ व्याघात अलंकारवर्णन–दोहा ॥

जहाँ औरते औरई, कारज सङ्ग विरुद्ध ।
प्रथम कहत व्याघात तहँ, जे प्रवीन मति शुद्ध ॥३४८॥

॥ यथा कवित्त ॥

शुभग सहोदर सुजान गुनमान पूरो, रहत हजूरै रह्यो प्रेमके लहरमैं। लछिराम रामसों मिलत एक बार टूट्यो नातो कुल धरम अखण्ड शेष बरसैं ॥ दाहिने सुकण्ठ सोहै जामवन्त जालिमके, लखनै लखाय कमनैती हरबरमैं। मेघनाद रावनके रथ पथ आगे बान, मारत बिभीषन बिराटलों समरमैं ॥ ३४९॥

॥ प्रथम व्याघात–यथा सवैया ॥

श्रीरघुवंशिनकी कलँगी, कलपद्रुम दीन हितू बरजोरैं।
कौशल भूपर भाजन भाग, अशीशत है लछिराम करोरैं।
जासों बली रघुबीर सदा, बटपारन शोकसमुद्रमें बोरैं।
ताहग कोर कटाक्षनसों, सब सन्तनके भवबन्धन छोरैं॥३५०॥

॥ पुनः ॥

वेद पुरानमें चारु चरित्र, बिचारत हारत हैं विधि हीरे।
शङ्कर शारदा गौरि गणेश, जपैं लछिराम यों नाम गँभीरे॥
जाकी झलाझलमें रद रङ्क, जरैं जग राकस वंश जँजीरे।
श्रीरघुनाथके बान बली ते, करैं सब सन्तनके मन सीरे॥३५१॥

॥ द्वितीय व्याघातवर्णन–दोहा ॥

जहँ कारजकी सिद्धिता, लखि विरुद्धके साथ।
व्याघातहि गनि दूसरो, अलङ्कार शुभ गाथ॥ ३५२॥

॥ यथा कवित्त ॥

जामवन्त जालिम जमाति सङ्ग जङ्ग बाज, सुघर सुकण्ठ बिभीषन गुनगथमैं। हनुमान् अङ्गद सुकेसरी कुमुद नील नागर सुखेन गाये बिरद अकथ मैं॥ शत्रुहन लखन समर भट भारे कटैं, शेषे रघुनंदी रही ताप न भरथ मैं। सेन

चतुरङ्गिनी सँहारें लव कुश त्यों त्यों फूलेना समात रामचन्द्र फूल रथमें ॥ २५३ ॥

॥ अथ गुम्फ अलङ्कारवर्णन–दोहा ॥

परम्परा जहँ बरनिये, कारनको शुभ रूप ।
अलङ्कार परमान किय, गुम्फ सुकवि रसरूप ॥ २५४ ॥

॥ यथा–सवैया ॥

भावमें सन्तनको सतसङ्ग है, सन्त सिखावत ज्ञान गँभीरको ।
ज्ञानसों वेद विवेक विचार, विवेक विचारसों साधन धीरको॥
साधनसों लछिराम उदार, उदारतासों दया धर्म शरीरको ।
सागर पारसरूप सनोज, मिले तब सासुहें श्रीरघुवीरको २५५

॥ अथ एकावलीअलङ्कारवर्णन–दोहा ॥

ग्रहित मुक्तके सङ्ग जहँ, सुपद जँजीरा जोर ।
अलङ्कार एकावली, यों भनि कविशिरमोर ॥ २५६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

ठकिले मतङ्ग झनकारत जँजीरें जोर, धौंसाकी धमक तिन सोहैं घहरातहैं । धौंसाकी धमक आगे जामवन्त जाछिमको, जमकी जमातिलौं जमक लहरातहैं ॥ जामवन्त आगे त्यों सुकण्ठ यों सुकण्ठ आगे लखन सदल लहरातहैं । लखन सदल आगे धूमधाम राम रामचन्द्र आगे नाहरीनिसान फहरात हैं॥ २५७ ॥

॥ पुनः ॥

रस-बीर लीला रामचन्द्रपै दुचन्द कैसी, दशगुनी कौशन सचन्द झलाझलपै । लछिराम [illegible] परमालीतें पचासगुनी

बगर बहाली पैजपाली बांह बलपै ॥ बलकी परतिबांह बल उतसाहनैतें, सौगुनी बिलोचन बदन मारू दलपै ॥ लोचन बदन तें सरासर सहस गुनी, जङ्ग जोर भ्रूधनु मरोर भाल थलपै ॥ ३५८ ॥

॥ अथ मुक्तप्रकेशी अलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

एकावलिके बीच जब, प्रश्नोत्तर शुभरङ्ग।
मुक्तप्रकेशी तहँ कहैं, अलङ्कार नवरङ्ग ॥ ३५९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

शोभा सरवरके बिशाल हैं मृणाल कैसे, जैसे सुण्ड कलभ सँवारे बिधि धीरके। कैसे सुण्ड कलभ सँवारे बिधि धीर बर, जैसे ये भुजङ्ग भाये मण्डन शरीरके ॥ लछिराम कैसे हैं भुजङ्ग सुखमासों भरे, जैसे मरकत खम्भ खलक सुधीरके। मरकत खम्भ कैसे परम प्रचण्ड जैसे, भुजदण्ड जुगल जसीले रघुबीरके ॥ ३६० ॥

॥ अथ मालादीपक अलंकार वर्णन-दोहा ॥

दीपक अरु एकावली,को सङ्गम जहँ होय।
मालादीपक भूषनै, परमानत सब कोय ॥ ३६१ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

जोगानल मण्डित गिरिशलों समाधि रचि, रातो दिन परचै अशोक उपवनमैं। लछिराम तापर अतङ्क लङ्क रावन को, एकसी भयङ्कर कलङ्क त्रिभुवनमैं ॥ सङ्गमी सनेह बिर-हाकुल स्वरूप राम, सने स्वेद वही ब्रह्मराशि पुलकनमैं। बरसैं न कैसे अँसुवानके प्रवाह बस्यो, घनश्याम रामचन्द्र मैथिली चखनमैं ॥ ३६२ ॥

॥ सवैया ॥

पावन देव पुरातन ब्रह्म हैं ध्यान धरे मनहोत अशोक है ।
शारद नारद शेष गणेश गन्यो शिरमौर महेशको थोक है ॥
वेद पुराणनमें लछिराम यही चरचा कविकल्पना कोक है ।
श्रीहनुमान हिये रघुनाथ बसैं रघुनाथहीमें सब लोकहैं ३६३ ॥

॥ अथ सारअलङ्कारत्रिविधवर्णन-दोहा ॥

गुन बरधनके दोषते, कै दुहुँन सनमान ।
सार अलकृत करतहैं, कविवर तीनि प्रमान ॥ ३६४ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

पल्लव नवलहूते सुमन सिरीपशुभ, सुमनसिरीपहूते दानी मनहरको । लछिराम दानी मनहरते हरष राज, फेन फरकौको छीर सागर लहरको ॥ छीरसर फेनते मलेज परिमल, परिमल ते सुभाव सूधो मसमलबरको । बरमखमलहू ते कोमल कमल मञ्जु, कोमल कमलते सुभाव रघुबरको ॥ ३६५ ॥

॥ द्वितीय दोपकारी यथा-कवित्त ॥

बारहो बिभाकरते बाड़वा अनल ज्वाली, बाड़वा अनलतें फनाली शेषवरमें । शेषफन ज्वालासों लखनकर बान, बान लखनते कालकूट कातिल गहरमें ॥ लछिराम कालकूटहूते ब्रह्मफांस, ब्रह्मफांसते प्रलै प्रकाश बासव-बजरमें । बासवब जरते कहर कालदण्ड, कालदण्डते कहर राम रावन समरमें ॥ ३६६ ॥

॥ दोषगुणकारी-यथा सवैया ॥

फाठते उन्नत घोर पहार पहार तें ही खलकी अवलीको ।
ह्वै खलको अवलीते बिसासी बिराजत केवर काम छलीको ॥

कैवरते लछिराम लखे महामूशल है बलराम वलीको ।
है सबहीते कठोर सुन्यो व्रत श्रीरघुवीर प्रतापवलीको२६७॥

॥ अथ यथासंख्यअलंकारवर्णन-दोहा ॥

वस्तु जहां बरनन करैं, क्रम सरीति शुभसाज ।
यथासंख्य भूषन तहाँ, बरनत बुध कविराज ॥ २६८ ॥

॥ यथा सवैया ॥

पन्नगराज फनावलीलों परिपूरो पतारु पुरी कमुदै रहै ।
भूपर तुङ्ग तरङ्गलों शारदा त्यों रतनावलीको समुदै रहै ॥
मङ्गल व्योम थली लछिराम प्रभाकर वारहोंलों प्रमुदै रहै ।
मैथिली श्रीरघुनन्दनको चिरजीवी प्रताप त्रिलोक उदै रहै२६९

॥ कवित्त ॥

मङ्गलीक चरन करन अधरन चढी, लालिमा गहर गुन कोमल बटोरके । लछिराम जंघ भुजदण्डन प्रचण्ड डर, बिरचे कठोर सान अजब हलोरके। भुजमूल भाल चन्द्रबदन बिलास हास, परम प्रकाश पुञ्ज रस वीर बोरके ॥ भौंह भंग लोचन तिरीछे जुलफन वारे, बार घुघुरारे कारे लखन किशोरके ॥ ३७० ॥

॥ अथ पर्यायअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

इक आशय क्रमसों जहां, धारि अनेक इक रीति ।
अलङ्कार पर्याय तहँ, प्रथम कहत करि प्रीति ॥ २७१ ॥

॥ यथा सवैया ॥

अङ्गद रीछपती नल नील सुखेन सुकेशरी आनँद पागे ।
लक्खन रामके त्यों लछिराम उमङ्ग भरे मन यों अनुरागे ॥

आनिये मैथिलीकी कुशलात मुर्फादिवे भारी जलाहल आगे।
वानरी सेन सुकण्ठ बली हनूमानहीको मुख हेरन लागे॥२७२॥

॥ द्वितीयपर्यायवर्णन-दोहा ॥

जब अनेकको आसरे, रासत क्रमसों एक।
अलङ्कार पर्याय तहँ, दूजो गनि सविवेक ॥ २७३ ॥

॥ यथा सवैया ॥

वानर जामें विराट महाबली, रीछ भयङ्कर भूरि कुलावैं।
सेनप श्रीहनुमन्त सुकण्ठ, ससेन सुकेशरीमें भरी आँवें॥
लक्ष्मनकी चतुवान प्रभा, लछिराम बिजे रणखेलको रावैं।
रामचमू चतुरङ्गिनीते भरी, आज विभीषनके मनसावैं २७४॥

॥ अथ परवृत्तअलंकारवर्णन-दोहा ॥

दीबे तनकहिके जहां, मिलै वित्त बहुसाज।
परवृतभूषन तहँ कहैं, जे प्रवीन कविराज ॥ २७५ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

बाँहबली वीरताके गरजैं निसान घोर, वैरी घन दारुन प्रता पानल बलकी। लछिराम राजनीति कीरति तरङ्ग गङ्ग, पूजती दिगङ्गना दिगन्तनमें छलकी॥ चिरजीवी चाऱ्यो युग चौदहों भुवन पर, ऐसी आनि बानि रामचन्द्र करतलकी। दण्डक विपिनवारे बगर किरात कोल, कन्द मूल दे दे राशि लैहैं चाऱ्यो फलकी ॥ २७६ ॥

॥ सवैया ॥

जा महिमाको सवारत शम्भु, विचाऱ्यो जऊ रह्यो रावन रूठो।
चारिहू वेदनमें चरचा, यही पूरमब्रह्म प्रताप अनूठो ॥

औढर दानी गरीबनेवाज, कृपानिधि यों लछिराम न झूठो।
चार्‌यो पदारथ को लह्यो सेवरी, ता रघुनाथहि दै फल जूठो॥

॥ अथ परसंख्याअलङ्कारवर्णन-दोहा॥

थपै वस्तु थल और में, करि निषेध थल और।
परसंख्याभूषन तहां, बरनत सुकवि सगौर॥ ३७८॥

॥ यथा कवित्त॥

बन्दनबलितबेस बगरबिहद्दमौलि, कुंडलित शुण्डरदमद-के प्रचारमैं। बरन गणेश मणिमंडित रतन झूल, झूमिके चलत हैं मलिन्द झनकारमैं॥ लछिराम रावरे मतङ्गनपै रामचन्द्र, वैरही प्रभा जो गजरथके अगारमैं। बिधि बिकरारमें न दिग्गज-कुमार में न, कज्जलपहारमें न घन बन भार में॥ ३७९॥

॥ पुनः॥

असुर मतङ्गनपै सोर घनघोर सङ्ग लागत गरद मेले गरबन भारी मैं। लछिराम लालितलपटलहरीली लोल, तड़पीली ते-जमान तड़प तयारीमैं॥ रावरे करन रामचन्द्र जमधर जौन ज्वाली जङ्ग जौहर अतङ्क अवतारीमैं। बिज्जु बिकरारी फण पन्नगी हजारी मैं न बजरकी बारी मैं नवबर कुमारीमैं॥ ३८०॥

॥ पुनः॥

झगर मतङ्गमद करत मलिन्द पान, झूमत मतङ्ग मत-वारेलों रगरमैं। तीतर मुरग बनचरमें बिरोध बोध हीन बान कण्टक पराग फूल गरमैं॥ लछिराम तरल तुरङ्ग दीप तेज तातें, भरम पराजे बैरीवृन्दके बगरमैं। चित्र की समाजैं लाजरहित बिराजैं राजैं, राजनीति ऐसी रामचन्द्रके नगरमैं॥ ३८१

॥ पुन ॥

मदमकरन्द सम्पुटित साँझ कञ्ज पाके, विटप सचोट फल भूपर गिरत हैं। बचन विलास वशीकरण अमी है चन्द्र मुखनि चकोर व्यभिचारीलों घिरत हैं॥ लछिराम राम रामचंद्र राजनीति ऐसी, ज्वाला हठ जोगिनके अङ्ग अभिरत हैं। नगर डगर बन बागन बगर एक, मारही मलदि मतवारेलों फिरत हैं॥ २८२॥

॥ अथ विकल्पअलंकार वर्णन-दोहा ॥

के यह के यह करहिंगे, जहँ याविधि सुविचार।
तहँ विकल्प भूषण कहत, जे प्रवीणशृङ्गार॥ २८३॥

॥ यथा सवैया॥

नाम हमारो चमूपति रावन, या जग में यश पावन छेहों।
द्वारिहौं टेक न काल भिरे, भट सामुहें दूसरे कोन गने हौं॥
नायचढ़े रहे राजसमाज, नमें लछिराम कछू पछितेहौं।
के रघुनाथसे युद्ध करौं, के गिरीशको फेरि दशौ शिर देहौं॥

॥ अथ द्विविधिसमुच्चय अलंकार वर्णन-दोहा ॥

काहू थल बहु भाव जहँ, उपजत एके सङ्ग।
प्रथम समुच्चय तहँ कहत, अलङ्कार नवरङ्ग॥ २८५॥

॥ यथा कवित्त ॥

फौरें बान तरकस फौरें त्यो कमान रोदे ठनकत जोर जङ्ग पानीकी लहरमें। फरके प्रचण्ड भुजदण्ड त्यों बहाली नेन सरके युगलकर मोम भराभरमें॥ लछिराम रामचन्द्र रावण चमूको हेरि हेरते कदम्बहार हौरा हरबरमें। भौंहें

भङ्ग लाल भाल बदन विशाल ओज, अङ्ग अङ्ग फूले न समात बखतरमें ॥ २८६ ॥

॥ पुनः ॥

आगमन राम अवतारके बधावरे में, त्रिभुवन छावे अंश जगर मगरमें। लछिराम शारद महेश मुनि शिरताजें, देव देवराजें मौजें देविन रगरमें। मङ्गल अवाजें साजें सुंदरी समाजें राजें, रङ्ग चारु कौशिला के चौकठ कगरमें। दिग्गज दराजें दीह दुन्दुभी दराजें बाजें,बगर बगर बाजे कौशिला नगरमें ॥ २८९ ॥

॥ द्वितीय वर्णन ॥

जहँ अनेक इक सङ्ग ह्वै ,करैं सुओरै साज।
भेदस मुच्चय दूसरो, बरनत कविशिरताज ॥ ३९० ॥

॥ यथा कवित्त ॥

बगर बगर बाजें नगर निसान भारी, बगरे बिमानव्योम रवि रथभोरमें। लछिराम जागे भाग नाग नर देवन के, मङ्गल महेश गावें हरष हलोरमें। बरसें महीप दशरथराज पथ पौरी, गज रथ मोती कर झमक झकोरमैं। अञ्चल उदयगिरि अमन्द रामचंद्र चारु,कौशल कलपतरु कौशिलाके कोरमैं॥३९१॥

॥ पुनः ॥

दशरथराव रामचन्द्रकी छठीमें चारु, बिकसे बसन्तकुसुमाकर बहारसे। लछिराम सातौं दीप उमगि अशीस देत, हीरा हेम हिमाले सुमेरु अवतारसे ॥ मौजमें मतङ्ग गजरथके कलोलैं खुले, मालाकार माण्डित रतन मोतीहारसे। घन बन भारसे पहारसे डगर डोलैं, बगर बगर बोलैं दिग्गज कुमारसे॥ २९२ ॥

॥ पुन ॥

अघकटे लाखन लरकि मतवारेकटे, कोटिन फरकि रहे लोटत गरदमें। घोर घमासान बान बरसे दुहूँनदल, रावण महीप रामचन्द्र रोषमदमें॥ लछिराम शङ्करजमाति जोगिनीन लेलै, लावै मुण्डमाल रही ताव न बरदमें। पटके पछारे हनूमानके लधारे झारे, झपटै झलारे भरे भूपर दरदमें॥ २९३॥

॥ सवैया ॥

वारिदलों दशरत्थ महीप लुटाय रहे रतनावली साजैं।
रङ्कन राव रचे लछिराम चढ़े गजरत्थ बने शिरताजैं॥
देववधूटी विमाननतें बरसैं सुमनावली वासव गाजैं।
श्रीरघुनन्दनके अवतारमें औधवहार बधावरे वाजैं॥ २९४॥

॥ पुन ॥

औघ उदे उमडी त्यों वढी, रघुवंशिनकी कलँगी विस वाँसें।
गावैं गुनी विरदावलीको, उढ़ैं रङ्ग तरङ्ग सबै सुरदीसें॥
दुन्दुभी दीह मृदङ्ग बजैं, लछिराम सराहिरहे सबईसें।
श्रीरघुनाथ लियो अवतार, तिहूँपुर हाथ पसारि असीसें २९५

॥ कवित्त ॥

श्रीवसिष्ठ अङ्गद सुकण्ठ नल हनुमान, द्विविद मयन्द जामवन्त जोगलत्ताके। लखन भरत शत्रुसूदन सुमन्त नील, लङ्केश्वर केसरी कुमुद छेमछत्ताके॥ लछिराम रामचन्द्र मैथिली सभासनते, सदलसुमेर त्यों सुपेनशुभसत्ताके। अवतंस राजवंश रतनसिंहासनपै, सम्रदों सभासद हैं कोशल चकत्ताके॥२९६॥

॥ पुनः ॥

राजैं रामगङ्ग निरमली कुण्ड गोप्रतार श्रीसहस्राधार स्वर्गद्वार भार गारमैं ॥ समहरि क्षीरेश्वर नागेश्वर देव काली लछिराम कोटेश्वर जगर मगरमैं ॥ जन्मभूमि कनकभवन यज्ञ देवी बुध सज्जन प्रमोदवन आनँद बगरमैं ॥ सीताराम लखन भरत शत्रुहन मणिरतन सिंगार हार कौशल नगरमैं ॥ ३९७ ॥

॥ अथ कारकदीपकअलङ्कारवर्णन–दोहा ॥

एकहिमें जहँ बहुक्रिया, उपजैं क्रमके संग ।
अलंकार वर्णन करैं, कारक दीपक ढंग ॥ ३९८ ॥

॥ यथा सवैया ॥

फूलि रहे भुजदण्ड प्रचण्ड सुकोचके बन्द सबै करके हैं ।
त्यों लछिराम विशाल प्रभा मुख ज्वालिया रंग प्रलयकरकेहैं ।
भारी गदा उछलै करमें वा लँगूरके लंगर यों खरके हैं ।
रावणकी चमू हेरतही हनुमानके रोम सबै फरके हैं ॥ ३९९ ॥

॥ अथ समाधिअलंकार वर्णन–दोहा ॥

और हेत मिलिके जहां, कारज सुगम सहेत ।
तहँ समाधिभूषण कहत, जे कविपरमसचेत ॥ ४०० ॥

॥ यथा कवित्त ॥

सुघर सुकण्ठ हनूमान अङ्गदादि वीर, ज्वाली जामवन्त दल कहर कलापसों । लछिराम लखन बनैत वरदानी वीर, बानजा सहसफन सूरज सतापसों ॥ नल नील सागर उजागर त्यों सेतु कर, मण्डित भुवन रामचंद्रके प्रतापसों । लंक पंक वारन विदारन अदेव भयो औरऊ सुगम श्रीविभीषन मिलापसों ॥ ४०१ ॥

॥ अथ प्रत्यनीकअलंकारवर्णन-दोहा ॥

प्रबलशत्रुसों हारिकै, तादित अहित उपाय ।
प्रत्यनीक भूषण तहाँ, वर्णत पण्डितराय ॥ ४०२ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

आपद पराग परसत परमानँदमें, नाग नरदेव भाग सगम गरबसों । लछिराम जाकी शक्ति मैथिली प्रतापराशि, अनुष लखन भऱ्यो धीरता गरबसों ॥ ताहूको न डरत अकस रासि पूरबकी, मथनके वेले रोष सागर सरबसों। विष्णुरूप राव रा मचन्द्रहिं समुझि राहु,अबला सतावत प्रभाकरै परबसों॥४०३॥

॥ सवैया ॥

बीसऊ हाथनमें लै कृपाण कुतूहली वेष विराट बनायो ।
मेघ भयङ्करसों गरज्यो तृण ओट दै वाणी गँभीर सुनायो ॥
यों सुनि रोष भऱ्यो लछिराम कही तू न मानत रावण गायो ।
रामकी हेरि प्रचण्ड चमू छली मैथिलीको डर पावन आयो ॥

॥ अथ काव्यार्थापत्तिअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

यह कीनो तो यह कहा, ऐसो जहाँ विचार ।
याविधि बरणैं सुकविजन, काव्यार्थालंकार ॥ ४०५ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

नील नल अगद सुकण्ठ केसरी त्यों कुन्द कुमुद सुषेण हनूमान रणरेलेमें । जामवन्त जालिम जमाति जमराजी संग, बानर विराट भालु वीर बगमेलेमें ॥ लछिराम लखन प्रचण्ड धनुधर तैसो, रावण कहाँहै रामसमर कुलेलेमें । बाँध्यो जिन जलधि भयङ्कर घरीमें तिन्हैं गाहिबो त्रिकूट कहा समर झमेलेमें ॥ ४०६ ॥

॥ अथ काव्यलिंगअलंकारवर्णन-दोहा ॥

जोग समर्थन अर्थ जो, ता सामर्थ करैन।
काव्यलिंग भूषण तहां, वर्णत सुकवि सचैन ॥ ४०७ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

शारद महेश गणपति शारदेश गावैं, दानी चारु चौदहों रतन राशि खत्ताके। सागर लों जाके बाँहबलको न वारापार, अभय रहत लछिराम छेमछत्ताके ॥ चौदहों भुवन महाराज रामचन्द्र वीर, रन वन बबर असुर गजमत्ताके। फारिहैं करेज केलि-पत्तासे कुदिन तेरे, दामन लगेहैं हम कोशलच-कत्ताके ॥ ४०८ ॥

॥ पुनः ॥

सागर सुधासी लसै अवधनगरतट, बगरैं बधूटी त्यों विमा-ननके रेलेमैं। लछिराम जामें करैं मज्जन सुवारेहीसों, ब्रह्मरूप राम रघुवंशिन झमेलेमैं ॥ रामकी दोहाई जम तोको न डरत वही, परसत पौन रज रेत लहरेलेमैं। औरलों बिलात अघ मन्दर हलोरे भंग, रामगंग तरल तरंगनके मेलेमैं ॥ ४०९ ॥

॥ बरवै ॥

पाप न तोसों डरपे या लछिराम।
अधम उधारन सबहित सियबर राम ॥ ४१० ॥

॥ अथ अर्थान्तरन्यासअलंकारवर्णन-दोहा ॥

कहि विशेष सामान्य करि, फेरि समरथै ताहि।
यों अर्थान्तरन्यासको, सुकबिन रूप सराहि ॥ ४११ ॥

॥ यथा सवैया ॥

जामें बस्यो वडवानल जालिम,ज्वालिया त्यों जलजन्तु भन्योंहै

दारुन ऊपरमें सुरसा जो, न मानै सँहारतमें हरकोहै॥
तुग तरंगनकी महिमा, लछिराम लखे न कियो डरको है।
सागर कूद्यो बड़ो हनुमान, कहा रघुनाथके किंकर कोहै४१२

॥ बरवै ॥

अंगद पग नहिं टार्‌यो रावण-वश।
कौन बात जन रघुबर सुर अवतश॥ ४१३॥

॥ द्वितीय वर्णन दोहा ॥

बरनि प्रथम सामान्यता, फिरि विशेष सामर्थ।
गनि अर्थान्तरन्यासको, भेद दूसरो अर्थ॥ ४१४॥

॥ यथा सवैया ॥

वानरवशकुमार सुकेसरी, साथी सुकण्ठको भाँति भलीमें।
भक्त भयो अनुराग तरंग, लसे अनुरागिनकी अवलीमें॥
तापर एक बड़ो गुण या, लछिराम सँवार्‌यो विरञ्चि बलीमें।
श्रीरघुनाथ हरोलीको अंक,लिख्यो हनुमानकी भालथलीमें॥

॥ बरवै ॥

राजकुँवर बलमण्डन लखनकुमार।
तापर अपर अपूरव सियबरप्यार॥ ४१६॥

॥ अथ विकस्वरअलंकारवर्णन दोहा ॥

बरनि विशेष सु प्रथमहीं, फिरि सामान्यप्रमान।
फिरि विशेष ताको किये, विकस्वर भूषण जान॥४१७॥

॥ यथाकवित्त ॥

मुनि मख राखे अभिलाषे रूप गौतमीके शम्भुधनु तोरे बेस मिथिलेशमनके। लछिराम तापै बड़ी बात या कहा है जाके सेवक सुरेश अलकेश धन फनके॥ आनँदमें आछी

दानधारा न रुकत परमाने दीनबन्धु काटैं साँकर सुमनके । पारस पुरन्दर धुरन्धर धरम राम, रघुवंश भूषण कलस त्रिभुवनके ॥ ४१८ ॥

॥ बरवै ॥

लखन बाण अतितीक्षण बड़ी न बात ।
फणसहस्र अवतारी जगविख्यात ॥ ४१९ ॥

॥ अथ प्रौढ़ोक्ति मलंकारवर्णन–दोहा ॥

कथन करै उत्कर्षता, हेत हेतको लाय ।
अलंकार प्रौढोक्ति तहँ, बरणैं कवि सरसाय ॥ ४२० ॥

॥ यथा कवित्त ॥

मण्डित अमृत छत्रमाला पन्नगेश देश बर फन साला मलयजह्वै अरति है। अम्बर अमर अमरेश उपहार लै लै सूरज सुधाकरहि पावन करति है ॥ लछिराम रामचंद्र कीरति कलपलता जब जब सातौं सिन्धु पार उतरति है ॥ जेतवार जङ्ग रतनाकर तरङ्गमौलि तब तब हीरक-वितान वितरति है ॥ ४२१ ॥

॥ पुनः ॥

बिलपति कुमुद अदेखी सने सोकसर, सातौ दीप सुहृद सरोज पखरे रहैं। लछिराम लालित मरीचिन बगरसो हैं,भासमान बारहो कलाके भभरे रहैं ॥ तेरहों प्रभाकर प्रताप रामरावरेसो, बटपार वैरी वन वन्दर बरे रहैं। दिग्गज सदल महामंगल मसाल हेरि, अगरे दरद दिगवारमें भरे रहैं ॥ ४२२ ॥

॥ पुनः ॥

चारु चन्द्र चन्द्रिका शरदसों प्रकाश करै, राजत शिला-

सों मिल्यो गङ्गकी लहरतें। मङ्गलीक मलय महेशकी प्रभासों पुञ्ज पावन परम राजहंसन सहरतें ॥ जेतवार चौर शेष सगमीसों लछिराम, शुभग सुरीन मुकतालहके लरतें । सीरे सेत जस रावरे को राय रामचन्द्र, नीर छीर–सर हिमालयके सिखरतें ॥ ४२३ ॥

॥ अथ सम्भावनाअलंकारवर्णन–दोहा ॥

जो यों हो तो यों कहे, सम्भावना सुरूप ।
कविकुल बरनत हैं सदा, याप्रकार सुभनूप ॥ ४२४ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

जाके बाँहबलको अनेक अमरावतीलों, जीत्यो देवराज देवपशनके थोकोंमें । लछिराम जाकी हाँक प्रलयघनघोर घोर, खलभल पारत दिगन्तनके ओकोंमें ॥ धूमधाम रावण महीप रामचंद्र सोंहैं, तिरछोंहैं तूही महावीर अवलोकोंमें । वाण सों विदारे जब लाठी मेघनाद भाल, ज्वाली जङ्ग लखन स रारहों तव तोकोंमें ॥ ४२५ ॥

॥ पुन ॥

जाके बाण परम प्रचण्डकी कथान गावें, ठौर ठौर असुर बधूटी करिमतसों । लछिराम तैसे भुजदण्डके अखण्ड ओज, बैरिनके भाल करें कालदण्ड छतसों ॥ धूमधाम लङ्गर लँगूरमें कपीशहूकी, बीसाबिसे वारतें अचूक परवतसों । रावण समर तव रामसम होतो जय लखनसों भाई औ हरोल हनुमतसों ॥ ४२६ ॥

॥ बरवे ॥

रामचन्द्रदल–महिमा तव कहिजात ।
जो कहुँ शारद कोटिन मुख जलजात ॥ ४२७ ॥

॥ अथ मिथ्याध्यवसितअलंकारवर्णन-दोहा ॥

मिथ्याहीमें जहँ करै, मिथ्यासिद्धि प्रधान।
मिथ्याध्यवसित भूषणहिं, तहँ वर्णत मतिमान ॥ ४२८ ॥

॥ यथा सवैया ॥

काटिहौं बीसो भुजा रद आपने,मुण्ड मिलै दशौं भालको फोरौं
बाटिहौं ज्वान जटायु बुलायके भागिहौं बेगि नयौं मुख मोरौं।
जङ्ग जुरौं रिपु दीन भरत्थसों वा क्षण हौं लछिराम निहोरौं।
रावण तो मैं त्रिकूटधनी जोपै बांरिधिमें बली बालिको बोरौं।

॥ बरवै ॥

भुव अकाश रवि चन्द्रहि करि जलपान।
लखन सबानहि मिलिहौं रावण प्रान ॥ ४३० ॥

॥ अथ ललितअलंकारवर्णन-दोहा ॥

कहिय कछुक प्रतिबिम्बसों, तासु बनाय सुधीर।
अलंकार वरणैं तहां, ललित सुमति गम्भीर ॥ ४३१ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

कारज सरै न कीन्हें नगर असङ्कपथ वगर स्वयम्बर महीपन लरजतैं। लछिराम राम रघुबीर मैथिलीको साथ छूटै ना परशुराम रावरी गरजतैं ॥ भङ्ग भयो पलमें शरासन महेश अब जुरिहै न केहूं बिधि बलकी दरजतैं। औसर बितीते अनरथ उपचार केहूँ बिछुन्यो कमान बाण आवत अरजतैं ॥ ४३२ ॥

॥ सवैया ॥

दूत कह्यो जिन दाह्यो त्रिकूटको, अङ्गद बीरता गाई अथा है।
त्यों लछिराम न मानी कछू, अब होत कहा बहुती परवा है॥
केती करी चतुरङ्गिनी सेन, चढी रघुनाथपै रोष प्रभा है।
रावण ता सन मानी न तू, बिष बोय अमीफल चाखन चाहै॥

॥ पुन ॥

रावण तू अपमान कियो, भली भाँतिसों राजसभा सब गावै।
आतुर जाय मिल्यो रघुनाथसों, लैके भयङ्करी ज्योंत बतावै॥
ओसर चूक्यो न फेर मिलै, लछिराम करो अब जो मन भावै।
आयेहै रामको छोड़ि भला बन्यो, राव बिभीषणे कौन बुलावै॥

॥ बरवै ॥

मूढ तीनि पन बीते बिनु रघुनाथ।
अब तू क्यों शिर पीटत मलि मलि हाथ॥ ४३५॥

॥ अथ प्रहर्षणअलङ्कारत्रिविधवर्णन—दोहा॥

मनवाञ्छितफलसिद्धि जहँ, श्रमबिन होय सुबेस।
प्रथम प्रहर्षण तौन कहैं, जे कवि शुभग सुरेस॥ ४३६॥

॥ यथा कबित्त ॥

पसरे प्रभामें पर्यो पारस मिल्यो सो खिल्यो, मधुगद कण्ठ भरे आनँद सबनतें। पूछिबे कुशल पारिलोचन जुगल तऊ, परम प्रताप यों करोरिन मधनतें॥ लछिराम घनघोर दुन्दुभी अवाजें महा, मङ्गल अपर श्रीगणेशके रचनतें। सौरभो श्रीभरत रामचन्द्रको सरूप तौलों, आगमन जान्यो हनुमानके बदनतें॥ ४३७॥

॥ सवैया ॥

हेरिबे हेत विहङ्गके मानस, ब्रह्मसरूपहिमें अनुरागे।
भाय भरत्थसों भेट्यो तहाँ, पुलके तनु यों लछिराम सभागे॥
मंजु मनोरथ फैलि फल्यो, परमाने सबै तप पूरण जागे।
मोज मढ़े उमड़े करुणाखड़े, श्रीरघुनाथ जटायुके आगे४३८

॥ बरवै ॥

उर अगस्त्य अनुसुइया मनरथ होत।
सोहैं श्रीरघुनन्दन भानु उदोत॥ ४३९॥

॥ द्वितीयप्रहर्षण वर्णन—दोहा॥

मनवाञ्छित फलतें अधिक, फल बिनश्रम मिलिजाय।
समुझि प्रहर्षण दूसरो, हरष न हृदय समाय॥ ४४०॥

॥ यथा कवित्त॥

अङ्गद सुकण्ठ हनूमान बलवान आगे सङ्गम सदल जामवन्त विभीषणको। लछिराम नील नल केसरी कुमुद दायें वाम-भाग द्विविद सुषेण हरषणको॥ गरजे निसान कल कौशल नगर बर बगरे विमान घनघोर करषणको। शत्रुहन सौंरचो श्याम घन आवरण तोलों सोहैं रथ रामचन्द्र मैथिली लषणको॥ ४४१॥

॥ सवैया॥

भोरहीं प्रेमसों पूजनके भले आसन द्वार कुटीपै रचे हैं।
ब्रह्मसुरूपहि भेटिबेको छन या अभिलाष हिये बिरचे हैं।
त्यों लछिराम फलो तिगुनो यौं मनोहर आनँदमें उमचे हैं॥
मैथिली लक्खन श्रीरघुनाथको हेरतही सरभङ्ग नचे हैं ४४२

॥ बरवै ॥

भरद्वाज अनुमानत आनँदकन्द।
लखन मैथिली आगे श्रीरघुनन्द ॥ ४४३ ॥

॥ तृतीय प्रहर्षण वर्णन–दोहा ॥

मन जाकी चिन्ता करै, मिलै वस्तु सोइ आय।
तीजो भेद प्रहर्षणहि, परगट कियो लखाय ॥ ४४४ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

तिलक त्रिकूट श्रीविभीषण विशाल भाल, बालिबधिपम्पा दै सुकण्ठहि असकाको। लछिराम सूरपनखा त्यौं खरदूषणके, बदन बिदारि बोरे बीरद के डङ्काको॥ यातुधान बंशहि विध्वंसन सदल मारे, मेघनाद कुम्भकर्न रावनसे बङ्काको। कौशिला महल बैठी बूझिबे सगुन तौलौं, गरजे भरत राम आये जीति लंकाको ॥ ४४५ ॥

॥ सवैया ॥

जाके लिये बहुबासर में जपेमंत्र महातम बेदन गाये।
जा महिमाके विचारतमैं भरे रुपाल खरे बहुकाल गँवाये॥
और कहांलौं कहै लछिराम किती उपचार कला बगराये॥
जाहित बैठे सुतीक्षण भोरते राम किशोरसे सामुहैं आये॥४४६॥

॥ अथ विषादालङ्कारवर्णन–दोहा ॥

मनवाञ्छित चितचाहमें, फलप्रभाव बिपरीति।
भूषण बरणि विषाद इमि, कोविद कवि अपिरीति॥४४७॥

॥ यथा कवित्त ॥

सन्त सुर चौदहौं भुवन राजबंशनपै, रतनसिंहासन प्रकाश महाजरको। लछिराम रामचन्द्र मैथिली लखन छन कीने

वन गौन औध शोक सशासरको ॥ मंडित मुनीन मण्डलीनमें बसिष्ठ मन ह्वै रह्यो कुलालचक्र हीरो हारि थरको । राजअभि-षेक औषधीनपै नजर कान वज्र यों वजर बाणकैकयीके बरको ॥ ४४८ ॥

॥ सवैया ॥

सोरहौ साजि सिंगार सनेहमैं बङ्क बिलोकनि चञ्चलताकी ।
चाहती रामहि अङ्क भरचो चढ़ि लक्खन भौंहें सरोष प्रभाकी ।
त्यौं लछिराम सुरूपकी राशिलों सौंहैं खड़ीलसै बानकबाँकी ।
चाह भरी मिलिबेकी रही कटी नासिका कानलै सूर्पनखाकी ॥

॥ बरवै ॥

उतरि सिन्धु किमि ऐहैं राजकुमार ।
तबहिं सुन्यो दशकन्धर दल इहि पार ॥ ४५० ॥

॥ अथ उल्लासअलंकारवर्णन–दोहा ॥

औरहिके गुण दोषते, थपि अनतै गुण दोष ।
अलंकार उल्लास तहँ, चौबिधि रचि मति चोख ॥४५१॥

॥ औरके गुणते औरको गुण–यथा सवैया ॥

जाहित शम्भु सुरेश गणेश महेश महामख साधन फेटे ।
जाहित जोगी जपी तपसी, यती जाल तपैं तनुछार धुरेटे ॥
कौतुक या लछिराम लखो, पुलके तनु यों अनुराग लपेटे ।
राक्षसवंश बिभीषणेतें, भरि अंकमें भाय भरत्थसों भेंटे ॥४५२॥

॥ औरके दोषते औरको दोष–यथा सवैया ॥

मैथिलीको छलते बनमें हरचो कान सुने खर दूषणे मारे
फेरि बली हनूमान लँगूरते बाग उजारि त्रिकूटहि जारे

कौन कहे रचना लछिराम, परैं दुख औरपै औरके द्वारे।
रामके रोपन रावन दोपन राक्षसै बानर भालु सँहारे॥ ४५३॥

॥ बरवै॥

इन्द्रजीत बध सुनतहि लक्खन ईस।
समरक्षपटि क्रोधातुर काट्यो शीस॥ ४५४॥

॥ औरके दोषते औरको गुण-यथा सवैया॥

बालि बलीके सँहारतही सुखसाहिबी भार सुकण्ठ लियो है।
या बिपरीति कहांलों कहैं लछिराम लसे अकुलात हियो है॥
औरके दोपन औरही को गुण गावत वेद पुराण बियो है।
रावनके अपमानते राज बिभीषदको रघुनाथ दियो है॥४५५॥

॥ बरवै॥

त्रिजटा सपन सुनायो रावणनाश।
पुलके तन मन सियके बलित विलास॥ ४५६॥

॥ औरके गुणते औरको दोष-यथा सवैया॥

भौंहैं चढी वढी भालपै लालिमा ओज बिराजत सूरजअंशको।
त्यों चतुरङ्गिनीमें लछिराम चमूपति चातुरी चारु प्रशंसको॥
यों फरके भुजदण्ड असण्ड धरीमें करैं घननाद विध्वंसको।
लक्खनको धनुबाण दवानल दारुण दीह निशाचर बंशको४५७

॥ बरवै॥

चिकट बानरी सेना रामसिंगार।
कालनिशाचर कुलमें उतरति पार॥ ४५८॥

॥ अथ अवज्ञाअलंकारवर्णन-दोहा॥

गुणन औरके गुणनते, प्रथम अवज्ञा साज।
निमि न औरको औरही, दोप लगे शिरताज॥ ४५९॥

॥ प्रथम औरके गुण औरको न लगैं–यथा दोहा ॥

बरसत सुर नर नाग शिर, आनँदशीतलभार।
रामचंद्र करतौ भुवन, सुखन असुर परिवार ॥ ४६० ॥

॥ द्वितीय औरको दोष औरको न लगै–यथा दोहा ॥

संग सहोदर एक थल, लखत देव द्विजघात।
बसन विभीषणके हिये,रावणको उतपात ॥ ४६१ ॥

॥ अथ अनुज्ञालंकारवर्णन–दोहा ॥

दोषहिको गुण मानिकै, चाहक तन मन होय।
कहत अनुज्ञा भूषणहि, पंडित कवि सब कोय ॥ ४६२ ॥

॥ यथा सवैया ॥

रथपै चढि या चतुरंगिनी लै, जुरिहैं रण रंग समानत हैं।
रघुनाथसों बोलिहों रावणहों, जे कला धनुकी सब जानत हैं॥
कटि हैं सुत नाती सँघाती सबै, लछिराम न टेक द्वैठानतहैं।
हरिबो वन मैथिलीको छनमें हम,आनँद यों परमानत हैं ४६३॥

॥ बरवै ॥

कुम्भकरण हँसि बोल्यो सुनु रघुबीर।
कटिबो भलो समरको सनमुख बीर ॥ ४६४ ॥

॥ अथ लेसालंकारवर्णन–दोहा ॥

गुणमें दोष विलोकिये, दोषहिमें गुणधीर।
अलङ्कार लेसो द्विधा, वर्णत कवि गम्भीर ॥ ४६५ ॥

॥ दोषमें गुणवर्णन–यथा सवैया ॥

काजहै राजकुमारनको मृगया वन खेलिबो ख्याल तरङ्गमें।
हेम-कुरंग निहारतही रघुबीर चले भले बीरता रङ्गमें ॥

पानसों पाको मध्यो वनमें लछिराम इते मच्यो कौतुक सगमें।
रावण आपनेही रथपै हन्यो मैथिलीको छलहीके प्रसङ्गमें४६६

॥ बरवै ॥

निजसुतहित कैकेयी, वन दिय राम।
अपयश त्रिभुवन फैल्यो, नगरनिकाम ॥ ४६७ ॥

॥ दोषमें गुण–यथा कवित्त। ॥

अङ्गद सुषेण जामवन्त हनूमान आगे, करत अभङ्ग वार सङ्कर सुमनतें। लछिराम लच्छिमन दाहिने मरम खोलैं, राकस भयङ्करी प्रभाव परसनतें॥ रीछ विकराल कपिकुञ्जर करालनसों, वरनै करन मन्त्र घाती दुसमनतें। रामचन्द्रसोहै रण पण्डित विभीषण भो,सदठ सकुलदसकन्धर दमनतें४६८

॥ पुनः ॥

भूमि-भार हरण भरण आभरण भूरि भाग्योभाग नाग नर देव सन्त जनमें। लछिराम देव द्विजराज हिय भे-करन गरजे निसान दशमौलिके वधनमें॥ रामचन्द्र विरद वितान तान सातों दीप सबल सँहारे यातुधान रन वनमें। कौशल कराल केकयीको वरदान हार पारस पहार चारु चौदहोंभुवनमें ४६९॥

॥ सवैया ॥

काननमें हन्यो मैथिलीको भय दीनो विशाल त्रिकूट वसायके
लक्खनराम सों युद्ध जुऱ्यो लछिराम लङ्काको लकीर सचायके
फैल्यो चरित्र दशौं दिशि यों विधिहू रहे आँगुरी दाँत दवायके।
रावणसङ्ग चमूकुलमें पहुँच्यो सुरलोक निसान वजायके४७०

॥ बरवै ॥

सुरपति–सुत सिय पग परछत करि चोच ।
वायस तनु धरि परस्यो यापर लोच ॥ ४७१ ॥

॥ अथ मुद्रालङ्कारवर्णन–दोहा ॥

सोच्यारथ सूचनासों, अरथ करत लै धीर ।
कछु अन्य सन्निधि सङ्गमी, मुद्रा गुण गम्भीर ॥४७२॥

॥ यथा कवित्त ॥

जाके भुजदण्डन अखण्ड अतुलित बल, खल भल समर भयङ्कर पसारेसे । लछिराम जाके करतलमें चपलताई, वादिन बताई बेग सहस सहारेसे ॥ रावण प्रहस्तमें प्रमाण रावरेसो करौं, जालिम जुरैंगे इन्द्रजीत मतवारेसे । जाके मान रेखैं संक नाखत बिचारे ताके आवैं चले बाण ये बजर विकरारेसे ॥ ४७३ ॥

॥ सवैया ॥

मान मलैं असुरावलीके लछिराम यों जालिम जङ्ग जसीले ।
सङ्गम श्रीरघुवीर निषङ्गते पैज प्रताप प्रभा बरसीले ॥
बेझे करेजनके किरचैं दशकन्धर यानके प्रान बसीले ।
रोदे कमान ह्वै भालके भेजन पान करैं किनवान बसीले ४७४

॥ पुनः ॥

साँकरेमें सुर सन्तनके वगराये प्रताप अनन्त प्रभानके ।
वारमें तेरे कँपै धरती लछिराम हरे हलकम्प जहानके ॥
मैथिली वार विलम्ब रती अब औसर वार छली मदपानके ।
भालथली बटपारकी चूरके, गौरें गरूर गदा हनूमानके ४७५॥

॥ बरवै ॥

घन गरजन दल रावन कुलिश कठोर।
प्रलयपवनदवबरपन लखन किशोर ॥ ४७६ ॥

॥ अथ रत्नावलीअलंकारवर्णन दोहा ॥

क्रमसों वर्णन कीजिये, प्रकृति अर्थ शुभसाज।
भूपण भनि रत्नावली, मे प्रभाव शिरताज ॥ ४७७ ॥

॥ यथा सवैया ॥

त्यों गुरु मङ्गल सूरज सोम सुरेश महेश गणेशे विचाऱ्यो।
पारस कामदुहा कल्पद्रुम दानिया बारिदहूँको निहाऱ्यो ॥
सागर सातों सभाग सुमेरु त्यों गग प्रयाग प्रकाश प्रचाऱ्यो।
श्रीरघुबीर कृपानिधिको गुण लै सबहीको विरञ्चि सँवाऱ्यो ॥

॥ बरवै ॥

पारसमणि कल्पद्रुम अजर गँभीर
रच्यो ब्रह्म हरवर दे हनुमत बीर ॥ ४७९ ॥

॥ अथ तद्गुणालंकारवर्णन-दोहा ॥

तजे आपनो गुण जहाँ, धारण करि गुण सग।
अलंकार तद्गुण तहाँ, वर्णत रसिक प्रसंग ॥ ४८० ॥

॥ यथाकवित्त ॥

कोकनद करमें कमान बान रतनारे, तरकसे कन्ध हेरि हीन धरकतके। मंगली माधुरी हँसनि लछिराम सोहैं कोधें करें छोरें पट फेले फरकतके ॥ श्याम घन बरण महीप रामचन्द्र चारु, परी परछाहीं मैन रंग खरकतके।जौहर हरीरे पीरेमाणिके जँजीरे गरे हीरे लाल मोती छोत हार मरकतके४८१

॥ बरवै ॥

सरयु-तीर श्रीरघुवर करत बिहार ।
वार पार यमुना कारि जगमग धार ॥ ४८२ ॥

॥ अथ अपूर्वअलंकार द्विधावर्णन-दोहा ॥

प्रथम संग गुण ग्रहण करि, फिरि वातनि निजरंग ।
पूर्वरूप पहिलो कहत, जे प्रवीण सब रंग ॥ ४८३ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

परसतही मैं बन्यो हार गज गोहरको, गंग गहबर लै प्रकाश करबरसों । लछिराम तापर अमन्द आचरज परे प्रतिबिम्ब लोचन त्रिबेणी हरबर सों ॥ छावत प्रभायों पहिरावत लखन गरे राम रघुबीर भरे आनँद गहरसों । मंगलीक रंग मुकता हलको एतो होत बिकसत सेतु रामगंगकी लहरसों ॥४८४॥

॥ बरवै ॥

भरत गरे लर मानिक मरकत होत ।
परसत फिरि करकञ्जन अरुण उदोत ॥ ४८५ ॥

॥ द्वितीयवर्णन-दोहा ॥

हेत रचन गुण मिटनको, मिटै न गुण रँगधीर ।
पूर्वरूप दूजो कहत, जे कवीन्द्र गम्भीर ॥ ४८६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

अङ्गराग आभरण भूषण सुभाय अङ्ग, जगमगें जोति जोगराशिलों बसनमैं। घूँघटके घेरसों न खोलति बदन मन्द, स्वासन समीर होत सुरभि रसनमैं ॥ शिषिनकी बामैं लछिराम चरचित चौहैं अदरसहूलों आदरसलों जसनमैं । परनकुटीमैं डरि बैठति अकेली कटै झांझरीसों कौंधैं घन बन सरसनमैं ॥ ४८७ ॥

॥ बरवै ॥

सन्तसमाजन सहजहु हनुमत बीर।
बदनज्वालसो जालिम बजर शरीर ॥ ४८८ ॥

॥ अथ अतद्गुणअलंकार वर्णन-दोहा ॥

संगतिको गुण केसहु, ग्रहण करै न सुभाय।
भूषण तहां अतद्गुणै, बरणत पण्डितराय ॥ ४८९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

शाखासे कल्पलतिकाके भुजदण्ड भारी, करके रहत भरे आनँद महान है। लछिराम आँगुरी नखनतें त्रिलोकबीच, बरसत बरबस नों रतन दान है ॥ उमचे सुमन या चरित्र अद्भुत हेरि, रङ्ग सतसग गाये वेदन प्रमान है। करुणा कलित करकमलप्रसग तऊ पन्नगी स्वभावको न छोड़ति कृपानहै ॥ ४९० ॥

॥ बरवै ॥

लंक राक्षसिन बीचे सियको बास।
ब्रह्मरूपिणी मतिको तदपि प्रकास ॥ ४९१ ॥

॥ अथ अनुगुणअलंकार वर्णन-दोहा ॥

पूरब गुण सतसङ्गते, चोखो गहबर हेरि।
अलङ्कार अनुगुण कहैं, सुकविशिरोमणि टेरि ॥ ४९२ ॥

॥ यथा सवैया ॥

लक्ष्सन लालके हाथनकी परमा उभरोखी उदै लहरे है।
त्यों लछिराम छटापट पीतकी अङ्गन चम्पई चारु करे है ॥
शासऊ मन्द में हीरक-हारकी सेत भभीरी अमोखी भरे है।
हाथनमें गजरारे लिये मणि माणिक लालिमा चोखी परेहै४९३

॥ बरवै ॥

मरकतमणिकी माला पहिरत राम।
और श्यामता झलकति तन घनश्याम ॥ ४९४ ॥

॥ अथ मिलितअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

जहँ सादृश्य विलोकतहि, लखि न परै कछु भेद।
अलङ्कार वर्णन करैं, मिलित सुबुधि, बिनखेद ॥ ४९६ ॥

यथा सवैया ॥

गोल कपोलनपै जुलफैं लसैं, कुण्डल कानन बैस बहाली।
पाग सुही सरपेंच मणीनके, चारु चुनीनकी त्यों परमाली ॥
आनन यों लछिराम प्रकाशमें, बेसबिलास छटा रुखवाली।
जानिपरै न मुनीशनहूको, भरत्थके ओठन पानकी लाली ॥

॥ बरवै ॥

करत शत्रुहन दानहि सुबरनहार।
मिलत चम्पई रँगमें बुधन बिचार ॥ ४९७ ॥

॥ अथ सामान्य अलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

जहँ पदार्थ सादृश्यमें, अनुमानत नहिं भेद।
अलङ्कार सामान्य तहँ, परमानत बिन खेद ॥ ४९८ ॥

॥ यथा कबित्त ॥

पम्पासरवर भोर पूजनसमैके हेत हरबर आये भरे शील त्यों चखनके। लछिराम रामचन्द्र चारु अनुशासनतें चहके चहूँघां चञ्चरीक हरखनके। अरुण अमन्द कल कोमल प्रकाशमान सौरभित सुन्दर प्रकाश परखनके। तोरत सजल पहिंचाने न परत कौन कमल सुरङ्ग कौन कर हैं लखनके ॥ ४९९ ॥

॥ बरवै ॥

गङ्गधार मुकताहल बरसत राम ।
परासिजात नहिं केहूं जग अभिराम ॥ ५०० ॥

॥ अथ उन्मीलितअलंकारवर्णन-दोहा ॥

मिलित विषेमें जहँ फुरै, भेद कछूक प्रमान ।
उन्मीलित भूषण तहाँ, बरणत कलानिधान ॥ ५०१ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

पावन परम गङ्गधारा सो सुरूप राजे परम प्रकाशमान श्वेत स्वच्छपटतें । मोगरा चमेली कुन्द मालतीके माल गरे मङ्गलीक दूने अश रक्त दपटतें ॥ कौतुकमें कलपै कुमारी मुनिवृन्दनकी हारीं हेरि हेरि लता ओटन कपटतें । कढ़े मैथिलीके चाननीमें पहिचानें द्वार परनकुटीके परिमलकी लपटतें ॥ ५०२ ॥

॥ बरवै ॥

सावन घन बन सोहैं गरज समीर ।
वृन्तनसों पहिचानत गज रघुबीर ॥ ५०३ ॥

॥ अथ विशेषकअलंकारवर्णन-दोहा ॥

वैशेषक सामान्यसों, जहँ विशेष पहिचान ।
तहँ विशेष वणन करत, जेप्रवीण मतिमान ॥ ५०४ ॥

॥ यथा सवैया ॥

झूमें जँजीरनमें जकरे फेरें सासुँडें दिग्गजहूको दिवाने ।
पूरे प्रवाहबहे मदके छबिराम धरानदलों सरसाने ॥
यारे महाविकरारे विराट विषारे न देखनहू अनुमाने ।
मके मावनी रेने घटा गरजे ते मतङ्ग परें पहिचाने॥५०५॥

॥ बरवै ॥

रामसङ्ग जब विहरत आनँद चार ।
छत्र हाथ पहिंचानत भरत कुमार ॥५०६ ॥

॥ अथ गूढ़ोत्तरअलंकारवर्णन-दोहा ॥

साभिप्राय सुभाव जहँ, उत्तर दै परवीन ॥
गूढ़ोत्तरवर्णन करैं, जे कवित्त रसलीन ॥ ५०७॥

॥ यथा कवित्त ॥

बोल्यो बालिनन्दनसों बिहँसि गँभीर बैन, रावण महीप भऱ्यो गरब अवासेमें । कैसे बिरहानलज्वलित जुग तापसी वै अङ्गद उतर दीने सुमति प्रकाशेमें ॥ लछिराम आयो दूत सङ्गी जिन अङ्गनतें परचे अँगारे बिकराल रोष रासेमें । ताके तनतापनतें शिखर त्रिकूट सब, रावरो नगर बन्यो बगर तमासे में ॥ ५०८ ॥

॥ पुनः ॥

अङ्गदै बिलोकि बोल्यो रावण बिहँसि कैसे बीर तापसीवै कत बीरता प्रमानकी । जङ्ग मृगयाके बेझे बानर सुभट सङ्ग लछिराम चतुरङ्गिनी त्यों यातुधानकी ॥ ऊतर गँभीर बालि तरपन सागरमें आगर अमन्द ओज सीमा सुखदानकी । प्रलयभानु बजर गुमान जैतवार जाने रेखैं परबेखैं वन लखनके बानकी ॥ ५०९ ॥

॥ बरवै ॥

जङ्ग रङ्ग कत करिहैं बिरही राम ।
सङ्गर तिमि दशकन्धर जिमि हरि बाम ॥ ५१० ॥

अथ चित्रोत्तरअलंकारवर्णन-दोहा ॥

प्रश्नहि में उत्तर जहां, प्रथम भेद मतिसङ्ग ।
एक प्रश्न बहु उतरको, चित्रोत्तर विधि रङ्ग ॥ ५११ ॥

॥ यथा सवैया ॥

बालिके नन्दनसों दशकन्ध लग्यो कछु बूझन भाव गँभीर है।
सागर कैसे तरैं तपसी लिये सङ्गमें वानर भालुकी भीर है ॥
हेरिके तीखे त्रिकूटको ओज किती लछिराम रचै तदवीर है।
जो न जुरैगो निशाचरी सेनसों जालिम जूथपको महावीर है॥

॥ बरवै ॥

मेघनाद रनमण्डन वासवधीर ।
तासु गरब-हरको जग बजरशरीर ॥ ५१३ ॥

॥ द्वितीयवर्णन ॥ यथा सवैया ॥

तोऱ्यो शरासन शङ्करको किन,कौन लियो धनु त्यों भृगुनाथसों
कौन बध्यो मृगराजसों बालिको,कौनसुकण्ठहि कीनोसनाथसों
राजसिरीको विभीषन भाल दै को लछिराम जित्यो दशमाथसों
उत्तर एकई बार दियो रचना सिगरी रघुनाथके हाथसो ५१४

॥ बरवै ॥

को मख-रक्षक कीनो मुनि तियरूप ।
भाल मैथिली केहिगर राम अनूप ॥ ५१५॥

॥ अथ सूक्ष्मालंकारवर्णन-दोहा ॥

पर आशय आतुर जहां, मन अपने अनुमानि ।
शुभसव्यंग चेष्टा करन, सूक्षम भूषण ठानि ॥ ॥५१६ ॥

॥ यथा कबित्त ॥

शिखर त्रिकूट कोटिकलश निहारतमें, हार दीने अंगद सरोवर सजलके । लछिराम सहस वदन अवतारीके निसाने रसबीरके नसामे मंत्र कलके ॥ फरकीले बाँहबल वदन विशाल भाल भौंहै चढी लालीमें प्रताप झलाझलके । हनू-मानसोहैं तिरछैहैं लछिमनबीर, बानन बरेजे कई रेजेके कमलके ॥ ५१७ ॥

॥ पुनः ॥

दाहे लङ्क रावण गरब चकचूर करि, अक्षयकुमारहि पछारे पैज प्रनके । लछिराम कुशल प्रबोधि मैथिली त्यों तोरि बाग सोंधे राकस अभंग रण रंगके ॥ धनुष बलित श्री बिभी-षण करन दीने चारुचित्रपट हनूमान श्याम घनके । पल्लव जवासे बगराय दे कछू कतिन जुगल प्रवीण त्यों सम्हारे मौज मनके ॥ ५१८ ॥

॥ सवैया ॥

लक्खन पाती लिख्यो गुनिकै कह्यो दूतहि रावनको यह दीजो।
माँझ सभामें जो हारि मिल्यो लखतै भुज बीसऊ भाल पसीजो।
धावन हाथही फेऱ्यो सफन्दमें याबिधिसों लछिराम सुनीजो ।
राखियो बन्द खुलै न कहूं खुले नाम कथा न प्रमाण गनीजो ॥

॥ बरवै ॥

मायावी शूर्पनखै लखि रघुनाथ ।
लखनहि चितये नासाश्रुति धरि हाथ ॥ ५२० ॥

॥ अथ पिहितअलंकारवर्णन–दोहा ॥

दुरी किया परकी समुझि, प्रगटे जतन स्वभाव ।
भूषण पिहित प्रमान किय, परमिति पण्डितराव॥५२१॥

॥ यथा कवित्त ॥

मण्डित मनीन मण्डलित कलशावलीपे, नौरँग निसानेकी सनक परखनको। सङ्कुलितभाल भृकुटीनकी मरोरैं मञ्जु, घनघोर वगर वनैती हरखनको॥ रामचन्द्र पीछे त्यों तिरीछे नैन कोरनकी, पूतरी पटैती भाव भास्यो ना लखनको। शिखर सुवेलते असारो लङ्क रावनको, सानमें विभीषण लखावत लखनको॥ ५२२ ॥

॥ पुनः ॥

सेनप सुषेण राव सुधर सुकण्ठ सोहैं जामवन्त जालिम जितैया खलकनके। हनूमान अङ्गद विभीषण विराटवीर, केसरी कुमुद नल नील बलकनके॥ लछिराम शत्रुहन भरत समर हारे, दल रघुबंशी बङ्कुराते पलकनके। लखनै लखावत चखन रामचन्द्र येई लव कुश बारे गभवारे अलकनके॥ ५२३ ॥

॥ बरवै ॥

हेरत सुधर सुकण्ठहि रघुकुलचन्द।
दृग मरोरि लवकुशपर आनँदकन्द॥ ५२४ ॥

॥ अथ व्याजोक्तिअलंकारवर्णन–दोहा ॥

निज आकारहिको दुरे, कहे और परमानि।
अलंकार व्याजोक्तिको, याविधि कविन बखानि॥ ५२५ ॥

॥ यथा सवैया ॥

ब्राह्मण हौं सदा पूजत शङ्करै वादे भयंकर को न मैं जानो।
वेदविधानन होम हुताशने ब्रह्मके शासनहीं शुभ ठानो॥

क्षत्रिनके धनसों लछिराम सुमैथिली भूख तरङ्गहि भानो।
बन्धन भीख न दीजै हमैं ब्रत है कई बासरको परमानो॥५२६॥

॥ बरवै ॥

मशकरूप धरि हनुमत सुरसहि हेरि।
विनयव्याजवर बातन ऐहौं फेरि ॥ ५२७ ॥

॥ अथ गूढ़ोक्तिअलंकारवर्णन-दोहा ॥

व्याजहिं पर उपदेश करि, परम चातुरी सङ्ग।
अलंकार गूढोक्ति तहँ, वरणत कवि नवरङ्ग ॥ ५२८ ॥

॥ यथा सवैया ॥

खिले फूल हो भोर घने बन बाग यों स्वामिनीको परखावनेहैं।
लखि याविधि गौरिके पूजनको लछिराम हियो हरषावनेहैं॥
पहिलेही मराल मयूर चकोर मलिन्दनको मड़रावनेहैं।
हँसि बोलि अली भली मैथिलीकी फिरि कालिह इतै सँग आवनेहैं॥ ५२९ ॥

॥ बरवै ॥

बिहँसि कह्यो रघुनन्दन पावन बाग।
ऐहैं फेरि सुमनहित गुरु अनुराग॥ ५३० ॥

॥ अथ बिब्रोक्तिअलंकारवर्णन-दोहा॥

व्यंगसहित अश्लेष जहँ, रचना कवि शुभरंग।
अलङ्कार बिब्रोक्ति तहँ, बरनत प्रेमतरङ्ग ॥ ५३१ ॥

॥ यथा सवैया ॥

लसैं लाली भरे अरविन्द खिले भ्रमरावली सङ्गम साजतिहैं।
लता चम्पई खञ्जन कीर कपोत सुकोकिल मन्द अवाजति हैं॥
लछिराम या अंश बिदेह रची परसीली सपीरते लाजति हैं।
प्रभा पावन सौरभ सङ्ग सनी बनी बागमें बागविराजतिहैं ५३२

॥ कवित्त ॥

मघवान मन्दर पछाऱ्यो मेघनाद मौलि ख्याली कुम्भ-
करण बिराट रनवनमें। अपर कुमार कालदण्डक कतलबाज,
चारु चतुरंगिनी प्रभात प्रलैघनमें ॥ तापर त्रिकूट भऱ्यो
सागर तरे को पार, लछिराम योग अश राम लछिमनमें।
रावरेसों रावण सँवाऱ्यो राजहंस बाज, बजर शरीर महावीर
त्रिभुवनमें ॥ ५२३ ॥

॥ अथ युक्तिअलंकारवर्णन-दोहा ॥

मरम छिपावे करि क्रिया, सग सुमति व्यापार।
अलङ्कार तहँ युक्तिवर, बरनत रस अवतार ॥ ५२४ ॥

॥ यथा सवैया ॥

रामकुमारको हेऱ्यो सुरूप सभागमें तोरत फूल कली है।
त्यों लछिराम सरोजसे लोचन कोरन बारि प्रभा मचली है॥
चातुरीसों लतिकानकी ओट सँभाऱ्यो सनी अलिकी अवली है।
वामतें यों अनुराग भरी सिय सुन्दरी घूघट घालिचली है५२५

॥ बरवै ॥

सहमि सकोचनि हेरत सियमुख राम।
आगे लखन तिरीछे बाग अराम ॥ ५२६ ॥

॥ अथ लोकोक्तिअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

कहनावति जहँ लोकमय, लोक वचनपरमानि ।
अलङ्कार लोकोक्ति तहँ, बरनत कवि सुखदानि ॥ ५२७ ॥

॥ यथा सवैया ॥

जा रघुनायककी हेरि प्रभा शची शारदा पारवती अभिलाषें ।
जापर शेष गणेश महेश निहारत बारत सिद्धिन लाखें ॥

तापतिकी पतिनी लछिराम सुता मिथिलेशकी ताजगसाखैं ।
रावण छोरि अनार अँगूर कहा फल फूल धतूरको चाखैं५३८

॥ पुनः ॥

जा महिमाको न गायसके चतुरानन शारद सौक सहूर पै ।
कोटिनको दिये राजसिरी अरु कोटिनको दिये धासन धूरपै॥
तीनिहूं लोकनके शिरताज विराजै प्रभा लछिराम त्यों घूरपै ।
रावण राजसिंहासनै छोड़ि करै कोऊ बैठक बेल बबूरपै ५३९

॥ बरवै॥

छोड़ि मानसर मञ्जुल लघु-सर जात।
राजहंस तजि मोती काँकर खात ॥ ५४० ॥

॥ अथ छेकोक्तिअलंकारवर्णन-दोहा ॥

होत जबहिं लोकोक्तिमें, अर्थान्तरकी खानि।
अलङ्कार छेकोक्ति तहँ, कविपण्डित परमानि ॥ ५४१ ॥

यथा सवैया ॥

अङ्गद तैं बड़े बापको पूत है तापस पीछे क्यों जन्म गँवावै ।
रावन जाने प्रभावन तैं कछू वासरमें लछिराम लखावै ॥
मैं बिरतान्त कहा अपनो कहौं या उपखान तिहूं पुर गावै ॥
वैद वही जो हरै सब रोगन पालै प्रजा सोई राव कहावै ५४२

॥ पुनः ॥

तापसै भव्यो विभीपन जाय क्यों रावन या अनुमान अरै है ।
बोल्यो प्रहस्त प्रभावनतैं रघुनाथको जानत जानिपरै है ॥
या जगमें उपखान प्रसिद्ध सही लछिरामकथा बगरै है ।
चोरको चोर सुजानै सुजान जतीको जती पहिचानि परै है ॥

॥ बरवै ॥

इन्द्रजीत रनकर्कश लखन सवान।
भटको भट पहिचानत यह उपमान ॥ ५४४ ॥

॥ अथ वक्रोक्तिअलंकारवर्णन–दोहा ॥

अर्थ फेरकी कल्पना, श्लेष काकुतें ठानि।
अलङ्कार वक्रोक्ति तहँ,बरनत कवि गुणखानि ॥ ५४५॥

॥ यथा सवैया ॥

झूमत सागर पार खड़े मदमाते मलिन्द फिरैं मड़राये।
त्यों लछिराम भशुण्डन शुण्डकों ऊचो करैं भरैं आनँद भाये
पूरे भले-घनसे गरजैं लछिराम अतङ्क समा सरसाये।
रावन कीजिये वारनको बली बारन श्रीरघुबीरके आये५४६

॥ अथ काकुफरि–यथा सवैया ॥

धान्यो निकूटको वासरमें हनूमान बली रघुबीर कलासे।
दौरे निशाचर मारिबेको न परे कहुँ फन्द फलांक हवासे ॥
छारके बोल्यो कुमार समीरको यों लछिराम छके हैं हलासे।
आयँहैं फेरि कछू दिनमें करिहैं फिरि ऐसे लँगूर तमासे ५४७

॥ स्वभावोक्तिअलङ्कारवर्णन–दोहा ॥

जातिस्वभाव स्वरूप गुण, दताकार परमानि।
स्वभावोक्ति भूषन भलो, बरनि प्रत्यक्ष प्रमानि ॥ ५४८॥

॥ यथा सवैया ॥

कौशिला जन्म समै रघुनाथके मङ्गल राशि महाफल पावै।
भाल बिशाल कछू पुलके घस आनन आभा न भौन अमावै॥
नासिका मोरनि त्यों लछिराम कछू अधरायलीको फरकावै ।
माधुरे रोदनके भरि छोदन वाधरछौरनी छोर्दै छपावै॥५४९॥

॥ पुनः ॥

मल्लकी राशि प्रभा उपटी परैं गोल कपोल कछू फरकोये।
साँवरो गात सोहात सबै मनि जोति की कौंधे जगामग जोये॥
मोरनि भौंहैं मरोरनि भालकी आनँदबीज सबै उर बोये।
कौशल भूपर श्रीरघुनंदन कौशिला सूपकीसेजपै सोये॥९९०॥

॥ पुनः ॥

नारैं किती रतनावली थार किती मधुरे स्वर मङ्गल गावैं।
कौशिला आननचन्द निहारि चकोरनीलों उर आनँद छावैं।
साँवरे अङ्गनपै सिगरी लछिराम लरैं मुकता बरसावैं।
मङ्गल गाय झुलाय सबै हरे रामलला मुख चूमनधावैं॥९९१॥

॥ पुनः ॥

भाल थली गभवारी लटैं कठुलागर सिंहनखी शुभ साजैं।
पीरे झँगा कर कङ्कन हीरक राते खिलौननकी छबि छाजै॥
त्यों मचलैं मणि आँगन में लछिराम सुने बरहीन अवाजैं।
कौशिला हाथनसों बिछलैं भली रामलला पग पैंजनीबाजैं९९२

॥ कबित्त ॥

बार गभवारे कन्ध कलित कपोलनपै, कठुला बलित बघनहा कण्ठ भायेहैं। पीरी पीरी काछनी सुरङ्ग उकसीली पाग इत उत हेरनि चपलगति ठाये हैं॥ जैतवार खेलि रघुबंशिन सों रणरङ्ग लछिराम छोरैं पट भुव फरकाये हैं।राते पीरे तरकस धनुष हरीरे बान रथ रघुनाथ सौंहैं लव कुश आये हैं॥९९३॥

॥ पुनः ॥

ऊपर परे हैं भालु बानर असुर कटे फरकत भूपर मतङ्ग मतवारे हैं। मड़रात बाजी बिनबीरके बगर बाज ठौर ठौर ब-

हियलै रुधिर पनारेहैं ॥ लछिराम अजयतमासे पलहीमें मचे हेरिबेको फेरि मन सरकैं हमारे हैं । बनफल चाखि मैथिलीसों लव कुश भोपें अम्ब चलि देसे तौंसिलोंने खेलि मारेहैं॥५५४॥

॥ बरवै ॥

तरकस राते पीरे लघु धनुबान।
खेलत मृगया लव कुश शिशुप नसान ॥ ५५५ ॥

॥ अथ भाविक अलङ्कारवर्णन–दोहा ॥

बरनत भूत भविष्य जहँ, अरु प्रत्यक्ष प्रमान।
अलङ्कार भाविक तहाँ, प्रथनमत अनुमान ॥ ५५६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

बिहरत जैसे रहे शिखर लतान बीच बैसई चरन चिह्न से-सबिलसत हैं । लछिराम ठौर ठौर गङ्गके तरङ्गन में मज्जन किये त्यों हेरि हिय हुलसत हैं ॥ सोरभित भूपर सुमन परना-सन के परम प्रकाश परिमल में बसत हैं । मैथिली लखन राम-चन्द्रको धरमराज आजलों चरित्र चित्रकूटमें लसत हैं ५५७॥

॥ बरवै ॥

अवधराजसिंहासन जिमि सिय राम।
कनकभवन में बिहरत तिमि अभिराम॥ ५५८ ॥

॥ अथ उदात्तअलंकारवर्णन–दोहा ॥

अनुपलक्षित चरित जस, अधिकारी के संग।
बरनत शुभग उदात्त कबि, अलंकार नव रंग ॥ ५५९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

कनक भवन रंगपटी-शिखर फँसे भानुरथ संगमी बि-भान सुरबालाको । लछिराम हीरक मुकुत कलसावली पे,

झूमि झूमि झेलत चकोर चन्द्रसाला को ॥ रतन सिंहासन महीप रामचन्द्र सोहैं जब जब सोर घोर घन मतवाला को । मेले मुद मोटैं कोट कौशल कँगूरन ते तब तब चूमत मुरैले विज्जुमाला को ॥ ५६० ॥

॥ पुनः ॥

बगर बगर नौरतन झरनासे झरैं पङ्कित प्रवाह महा मद की नहर सों । लछिराम गाढे गढपतिनके गढदेस गरद सिलावैं गाजिगरब गहर सों ॥ राम रघुबीर गजरथके मतंग पावैं पदवी गजेन्द्र अमरेशके सहरसों । उन्नतभशुण्डे शुण्डादण्ड भरि भरि बारि छोडत फुहारे व्योम गंगकी लहर सों ॥ ५६१ ॥

॥ पुनः ॥

मारतण्ड मण्डलसो परमप्रताप जाको मण्डन भुवन भुजदण्डबल साजै हैं । लछिराम नारद महेश अलकेश द्वार शारदेश सहसबन लखिलाजैं हैं ॥ डगर डगर फिरैं सुमन सरस फूले नगर बगरमें बधावरे सुबाजैं हैं । कोटि पाकशासन सों परम प्रकाशमान रावरामचन्द्र ते सिंहासन बिराजैं हैं५६२

॥ पुनः ॥

कोकिल चकोर मोर गुञ्जरत भौंर माते राजहंस चाखैं मुकताहललहिलक सों । फूलफलदलसों बिटपलतिकाबेलसैं- सौरतितमन्दमन्द मारुतझिलकसों ॥ लछिराम जामें रचैं रास मैथिलीके साथ रावरामचन्द्रजीकी चारुता चिलक सों । तीर सरयूके औध भूपर प्रमोदवन क्योंनहो सिंगार त्रिभुवनकी तिलकसों ॥ ५६३ ॥

हियले रुधिर पनारेहैं ॥ लछिराम अजवतमासे पलईमें मचे हेरिवेको फेरि मन खरकें हमारे हैं । वनफल चाखि मैथिलीसों लव कुश भाषें अम्ब चलि देखे तोंखिलोंने खेलि मारेहैं॥५५४॥

॥ बरवै ॥

तरकस राते पीरे लघु धनुबान ।
खेलत मृगया लव कुश शिशुप नसान ॥ ५५५ ॥

अथ भाविक अलङ्कारवर्णन–दोहा ॥

बरनत भूत भविष्य जहँ, अरु प्रत्यक्ष प्रमान ।
अलङ्कार भाविक तहाँ, प्रयनमत अनुमान ॥ ५५६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

विहरत जैसे रहे शिखर लतान बीच वैसई चरन चिह्न वे-सखिलसत हैं । लछिराम ठोर ठोर गङ्गके तरङ्गन में मज्जन किये त्यों हेरि हिय हुलसत हैं ॥ सोरभित भूपर सुमन परना-सन के परम प्रकाश परिमल में बसत हैं । मैथिली लखन राम-चन्द्रको धरमराज आजलों चरित्र चित्रकूटमें लसत हैं ५५७ ॥

॥ बरवै ॥

अवधराजसिंहासन जिमि सिय राम ।
कनकभवन में विहरत तिमि अभिराम॥ ५५८ ॥

॥ अथ उदात्तअलंकारवर्णन–दोहा ॥

अनुपलक्षित चरित जस, अधिकारी के संग।
बरनत शुभग उदात्त कवि,अलंकार नव रंग ॥ ५५९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

कनक भवन रंगराषटी-शिखर फैसें भानुरथ संगमी बि भान सुरबालाको । लछिराम हीरक मुकुत कलसापली पे,

॥ यथा कवित्त ॥

परमपुरुष परमानँद परमहंस ताडुका सुबाहु सुकताहलै सिदाऱ्यो है। रघुवंशभूषण प्रकाशमान त्रिभुवन बेर सेवरीके चाखि विरद बगाऱ्यो है॥ लछिराम बन्धनछोरैया साँगरेमें बन बाँधि बन्ध सागरमें कटक उताऱ्यो है। अन्धकार भारवंश दशमुख तारिबेको नाम रामचन्द्र विधि रावरो सँवाऱ्यो है५७०

॥ पुनः ॥

वानर विराट वंश सुवर सुकण्ठ हित बालिके बधनको प्रभाव परमाने है।कीने सुरसाके मान खण्डन अखण्ड भुज परम प्रचण्ड वीर व्योम अनुमाने है॥ लछिराम सुधो साधु रामको परमदूत बाटिका उजारे दशकन्ध पहिचाने है।छार कीने लङ्कहि लँगूरते पछारे अछे केसरीकिशोर नाम याते जग जाने है॥ ५७१ ॥

॥ बरवै ॥

नाम लखन बर याते जगत जहान।

लखत न दूजो रन भट आप समान॥ ५७२ ॥

॥ अथ प्रतिषेधालंकारवर्णन–दोहा ॥

अर्थ फेर साधन करैं, दरशित मुख्य अभाव।

अलङ्कार प्रतिषेध को, यों वर्णत बुधराव॥ ५७३॥

॥ यथा कवित्त ॥

शङ्कर कमानहौं न ताडुका सुबाहुबल कनक कुरङ्ग यान बगर विचारेको। बालिको न संहरन बेधन है ताल माल [illegible] गरको सेतन सहारेको॥ खोलिये मरममन भरम हमा[illegible] न खरदूपन खिलौना करि डारेको। बान बरषन

॥ बरवै ॥

अवधनगरकी सुखमा भुव अवतंश ।
डगर डगर जहँ विहरत दशरथवंश ॥ ५६४॥

॥ अथ अत्युक्तिअलङ्कारवर्णन–दोहा ॥

जहाँ दान यश वीरता, अकथित अद्भुत भाव ।
अलङ्कार अत्युक्ति को, या विधि प्रगट प्रभाव ॥ ५६५ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

साज्यो दल सबल महीप रामचन्द्र धूम धौंसाकी धमक त्यों मतङ्ग अकिलत हैं। लछिराम लाली चढ़ी धनुधर वीरनके फहरे निसान मारू बान अगिलत हैं ॥ दिग्गज कमठ कोल वृषभ दवारे अङ्ग भारके भरमवारे पारे से हिलत हैं। हारे लफवारे शीशवदन हजारे फैले शेषफन फेनके पनारे उगिलत हैं ॥ ५६६ ॥

॥ पुन ॥

राव रामचन्द्र चतुरङ्गिनी तिहारी जब करत पयान मूँदि भानुको उदोत है। गरजे मतङ्ग दीह दुन्दभी धुकार सुनि फूल्यो न समात रघुवंशिनको गोत है॥लछिराम रजत तुरङ्ग खुर धारनके पङ्कनबलित सातो सागरको सोत है । फूटत पहार टूटें वनविकरारे तब अन्धकार भारमई त्रिभुवन होत है५६७

॥ बरवै ॥

गज रथ मणि मुकताहल रघुवर दान ।
राव अमर लखि रङ्कन करत न सान ॥ ५६८ ॥

॥ अथ निरुक्तिअलङ्कारवर्णन–दोहा ॥

नाम योगते औरई, अर्थ कल्पना भाव ।
तहँ निरुक्ति भूषण कहत, जे प्रवीन बुधराव ॥ ५६९ ॥

॥ बरवै ॥

लखन वान जब चलिहैं सोर वगारि।
कल न परैगी कलपित ज्वाल निहारि ॥ ५७९ ॥

॥ अथ हेतु अलंकार वर्णन–दोहा ॥

हेतु होत क्रम सहित जहँ, कारन कारज साथ।
प्रथमरूप बरनन करत, या विधि जे गुणनाथ ॥ ५८०॥

॥ यथा सवैया ॥

श्रीअवतार शिरोमणि यों विरुदावली वेद पुरान सुनी मैं।
सेवरी गीध अजामिलकी लछिराम कथारही फैलि गुनी मैं ॥
कोल जवाहिरी सन्तनको कब लालकी चौकीकी मोलचुनी मैं।
राम जो तैं न गरीबनेवाज तौ कौन गरीबनेवाज दुनीमैं ५८१

॥ कबित्त ॥

जामवन्त जालिम सुकण्ठ शिरमौर आगे ऋद्धवान केसरी सुखेन मुखलालीमैं। कुमुद कटाक्ष नल नील अंग अंगद के फहरे निसान आसमानलौं प्रभालीमैं ॥ घोरत विभीषन हलाहल बताय भेदै लछिराम ख्यालभरे चाल मतवालीमैं। रावन मतंग मान रावरेपै आवैं चढ़े केसरीकिशोर रामलखन बहालीमैं ॥ ५८२ ॥

॥ पुनः ॥

दानी दीनबन्धु बरदानी शम्भु शारदेश पारस पहार हार जगर मगरको। ब्रह्मराशि मैथिलीश बिज्जु घनश्यामसंग लछिराम चार्‌यों फल झर त्यों रगर को ॥ अधम उधारिबेकी आनि बानि बाहँबल वोहित विशाल भवसागर बगरको। बिरद गँभीर भानुबंश राम रघुबीर सांकरे सहायक है कौशलनगरको ५८३

राम नागर सँभारो आज रन विकरार कुम्भकरन करारेको ॥ ५७४ ॥

॥ पुन ॥

गोलको बजायबो न लायबो परारो धन देवन सतायबो न मारत घमण्डहौं । गीधको न समर मुनिनकी न मण्डली हौं सुन्दरीसों खेलिबो न बजर असण्डहौं ॥ लछिराम बीसों भुजदण्ड विष दण्डनको तोरिवेके हेत यों उदण्ड कालदण्डहौं । रावन प्रचण्ड रामचन्द्रको न दूत आज असुर कुमुदपै प्रलैको मारतण्डहौं ॥ ५७५ ॥

॥ बरवै ॥

लखन हमैं नहिं मानो रावन राज ।
असुर वश गण ऊपर नव मृगराज ॥ ५७६ ॥

॥ अथ विधिअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

सिद्धि अर्थको साजिये, अर्थ फेरि सुखसाज ।
अलङ्कार विधि बरनि कहि, या प्रकार शिरताज ॥५७७॥

॥ यथा कवित्त ॥

बानर न जाने तैं हमारे भुज बीसऊपै परमप्रचण्डबल अङ्गवाज फरके । रावन सुभट राम लखनै सराहौं किमि प्रभ्रजोति राजित सहायक अमरके ॥ कवि लछिराम धूम धाम की धमकहौं मैं कादर लै कादर भगैया हरबरके । मण्डित अखण्डित विरदबैरिवृन्दै हेरि विहँसत सोहैं सङ्ग पण्डित समरके ॥ ५७८ ॥

॥ बरवै ॥

लखन बान जब चलिहैं सोर बगारि ।
कल न परैगी कलपित ज्वाल निहारि ॥ ५७९ ॥

॥ अथ हेतु अलंकार वर्णन-दोहा ॥

हेतु होत क्रम सहित जहँ, कारन कारज साथ ।
प्रथमरूप बरनन करत, या विधि जे गुणनाथ ॥ ५८०॥

॥ यथा सवैया ॥

श्रीअवतार शिरोमणि यों विरुदावली वेद पुरान सुनी मैं।
सेवरी गीध अजामिलकी लछिराम कथारही फैलि गुनी मैं ॥
कौल जवाहिरी सन्तनको कब लालकी चौकीकी मोलचुनी मैं।
राम जो तैं न गरीबनेवाज तौ कौन गरीबनेवाज दुनीमैं ५८१

॥ कवित्त ॥

जामवन्त जालिम सुकण्ठ शिरमौर आगे क्रुद्धवान केसरी सुखेन मुखडालीमैं । कुमुद कटाक्ष नल नील अंग अंगद के फहरे निसान आसमानलौं प्रभालीमैं ॥ घोरत बिभीषन हलाहल बताय भेदै लछिराम ख्यालभरे चाल मतवालीमैं । रावन मतंग मान रावरेपै आवैं चढ़े केसरीकिशोर रामलखन बहालीमैं ॥ ५८२ ॥

॥ पुन ॥

दानी दीनबन्धु बरदानी शम्भु शारदेश पारस पहार हार जगर मगरको । ब्रह्मराशि मैथिलीश बिज्जु घनश्यामसंग लछिराम चार्‍यों फल झर त्यों रगर को ॥ अधम उधारिबेकी आनि बानि बाहँबल बोहित्त बिशाल भवसागर बगरको । बिरद गँभीर भानुबंश राम रघुबीर साँकरे सहायक है कौशलनगरको५८३

॥ बरवै ॥

मेघनाद अवलोको लछिमन बाज।

झपटै तुमहिं लवा करि समर साज ॥ ५८४ ॥

॥ द्वितीयहेतुवर्णन-दोहा ॥

वस्तु एकही अङ्ग जहँ, हेतु सकारज सङ्ग।

हेतु अलङ्कृत दूसरो, भेद बरनि शुभरङ्ग ॥ ५८५ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

भानवशभूषन कलशराजहंसन के परम प्रकाशमान राम जलधरके। बरसत बारहों महीने दानधारा वेस हीरालाल मोती गज रथ गिरिवरके ॥ लछिराम हेरत न लागे देर काहू समै गरलपटाय दीन मण्डल निधरके। पारस पुरन्दर धुरन्धर धरमवन्त चाऱ्यो फल फलत कलपतरवरके ॥ ५८६ ॥

॥ पुन ॥

कौशल कलस चारु चोदहों भुवनपति आरत कलपतरु ऐसो कत पाऊं मैं। मैथिली लखन हनूमान अङ्गदादि सोहैं लछिराम दूजो क्यों सभासद गनाऊं मैं ॥ असहन पीरके गँभीर ग्रह दोपनमें बारन उबारन बिरद गोहराऊं मैं। दानी दीनबन्धु रावरेसों कौन रामचन्द्र जाके दरबार दौरि दरद सुनाऊं मैं ॥ ५८७ ॥

॥ पुनः ॥

जन्म भूमि रतन सिंहासन कनक भौन मन्दिर महन्त महीपाउन धनीकेहै। सीता राम लखन भरत शत्रुहन जस लछिराम रामायन वानर अनीके हैं ॥ राम गङ्गतीर परमानंद प्रमोदवन जामें तरु येलि अमरावती धनीके है । दरशन

सन्त श्रीअवध अनुरागिनते अब हम जानी कै हमारे भाग नीके हैं ॥ ५८८ ॥

॥ पुनः ॥

नाग नर देव देवराज आभरन ऐसो पारस पहार दरबार कत जाँचों मैं। लछिराम लखन भरत शत्रुहन सोहैं बिरद-बितान मैथिलीके रङ्गराचों मैं ॥ दानी दीनबन्धु बरदानि या गिरीश गौरि चौदहौं भुवनपै लकीर यह खांचों मैं। शिरताज राज महाराज रामचन्द्रबीर कोशलकलस है कलपतरु सांचों मैं ॥ ५८९ ॥

॥ बरवै ॥

लखत नैन रघुनाथहि होत सनाथ ।
रङ्क राव बनि विहरत शुभगुनगाथ ॥ ५९० ॥

॥ अथ शब्दालङ्कारवर्णन–दोहा ॥

शुभस्वर चित्र विचित्रकी, रचनाबरनन वेश ।
इमि शब्दालङ्कार फिरि, बरनत चित्रप्रवेश ॥ ५९१ ॥
गत शब्दालङ्कारमें, छेकादिक अनुप्रास ।
पर प्राचीन नवीन मत, या विधि कियो प्रकास ॥ ५९२ ॥
आवृत्ति जहँ अक्षरनकी, आदि अन्त सह मेल ।
अनुप्रास द्वै विधि रचे, छेकावृत्ता फेल ॥ ५९३ ॥

॥ अथ छेकावृत्ति अनुप्रासवर्णन–दोहा ॥

बार अनेकन कीजिये, आवृति द्वै द्वै वर्न ।
गुनि छेकानुप्रास तहँ, आदि अन्त यकठर्न ॥ ५९४ ॥

॥ आदि वर्ण आवृत्तिछेकानुप्रासवर्णन ॥ यथा कवित्त ॥

चोर चारु भूधर भरत क्षितिपाल छत्र शत्रुहन सासुहें

शरासन सुवेलेको। सुमन सुकण्ठ हनूमान हाथ मनिमञ्जु व्यजन बिभीषन बिलास बगरेलेको ॥ रङ्गराज मैथिली महीप रामचन्द्र राजें शासन सुमन्त लछिराम लहरेलेको । परम प्रकाशन विलासन मलित सज्यो शुभग सिंहासन अवध अलबेलेको ॥ ५९५ ॥

॥ बरवै ॥

मणि मुकताहल बरसत बारिद बेश।
शुभग सिंहासन सिय सँग रामनरेश ॥ ५९६ ॥

॥ अन्तवर्णावृत्ति छेकानुप्रासवर्णन–यथाकवित्त ॥

मदन सदन गुनगन परमाने ज्ञाने सरसनि हँसनि सँवारे अवतारों में । लछिराम धूम धाम लोचन सकोचन सु भौंहनके सौंहँन धनुष रुख टारों में ॥ मैथिली अमन्द रामचन्द्र यों सिंहासन विलासन बगर ओघनगर निहारों में । सौज श्रीमनोज कर भूपर अमङ्गलीक मङ्गलीक मौजपर जलधर वारों में ॥ ५९७ ॥

॥ अथ वृत्यानुप्रासवर्णन–दोहा ॥

कहुँ सरि बरन अनेककी, कतहुँ अनेकन वार।
कहुँ आवृति एकईकी, बरने बोय प्रकार ॥ ५९८ ॥

॥ अथ वृत्यानुप्रास आदिवर्ण अनेककी अनेकबार आवृत्ति ॥

॥ यथा कवित्त ॥

पारस पुरन्दर परमहंस परबीन, धरम धुरन्धर धनी त्यों धीर कल में । लछिराम ललित लहेने लाज लाहनमें, बिरद बिशाल बगरेले बौद्दबलमें ॥ अवध अमर अमरावती अमन्द ओज, कामदकला है कमनीय करतलमें । मगलीक

मैथिलीलों मोहिनी न मण्डलमें राव रामचन्द्रसों न राजा रसातलमैं ॥ ५९९ ॥

॥ अथ आदिवर्ण एककी अनेकबार आवृत्ति-यथा सवैया ॥

मानस मानमहेश मराल मिल्यो महावीर मनोरथ राजहै ।
मंगल मूरति मैथिली राम महातम मौलि मुनीन समाज है ॥
मोहनमंत्र-मई मुसकानि मनोहर माधुरी मौज सलाज है ।
मोद मच्यो मणि मन्दिर मौलि महीपति मण्डलको महाराज है

॥ अथ अन्तवर्ण अनेककी अनेकबार आवृत्ति यथा कवित्त ॥

खेले खर दूषन सिकार बगरेले जंग, झेले कुम्भकरन कुलेले अनरथके । लछिराम लेकर कमान अगरेले छेले मान मेघनाद महिरावन समथके ॥ मेले बान रावन सुहेलेके भुजन फेले, रेले रंग रुधिर प्रकाश लङ्कपथके । कौनको पछेले तैं न समर झमेले बीच, बाँकुरे बघेले अलबेले दशरथके॥ ६०१॥

॥ अथ वृत्तिभेदवर्णन-दोहा ॥

अक्षर माधूरज मिले, उपनागरिका साज ।
परुषा ओज प्रसादस्यो, सरल कोमलाराज ॥ ६०२ ॥

॥ अथ उपनागरिका-यथा कवित्त ॥

भानुबंश भूषनके भारी भुजदण्डनपै औरे आब छावै जमा जौहर जँजीरकी । चाखै चरबीनको चमकि चपलासी राखै चाह अलबेली गजराजनके भीरकी ॥ कवि लछिराम ज्वालमालासी ज्वलित वार कीने पार जाति गढ़ी गजब गँभीर की। रुधिर तरंग छोही म्यानते बिछोही जोही रणरंग जालिम सरोही रघुबीरकी ॥ ६०३ ॥

॥ पुनः ॥

कोशलकुमारके सिकारमें अजब धूम, वारपार फैलत अतङ्क भटभीर को। लछिराम सोंजैसे सहमि घन बन बीच, मन्दर दरीन दुरें परिहरि धीर को॥ अरना बराह बाघ चीते अधफारे परे, हरिन हजारे भरे गरद गैंभीरको। भेजा भाल रेजालों गिरत गज भूमें जब चलत मजेजदार नेजा रघुबीर को॥ ६०४॥

॥ पुन ॥

बाजि अलबेले राम रघुबंश भूपन के,कहर कुलेलेंमें समीरे अभिरत हैं। लछिराम जोहरी इसारे के असर पर बेस बिज्जुरी लों दल बादरे तिरत हैं॥ शिखर मरोर लफ कोर कलँगीकी तैसी मण्डलित मोरमें कबूतरे पिरत है। फरकीले फेन मुख माण्डित मजेजदार छेला भने बागन सुरेलासे फिरत हैं ६०५॥

॥ पुन ॥

लखन सुदाहिने भरत बाम भागसोंहैं शत्रुहन साथुहैं सिंगार गुनगथ के। कबि लछिराम राम श्याम घन रङ्गपर वारौं-भोज आगर अनङ्ग समरथ के॥ बोलत नकीब नौल बिरद झमेले दलवेले बालरबिलों प्रकाश राजपथके। सङ्ग लह-रेले रघुबंशिनके मेले सौंझ बिहरत औध अलबेले दशरथ के॥६०६॥

॥ पुन ॥

फतेंरें करेजेके हरीनके कहर बचें बिथरन मन्दर बराह बस दबके। लछिराम रग में कुरगन कतलबाज बीजुरीलों बेधक

अदान में गरब के ॥ करत कुतूहलै किरातिनै कलान हेरि वारैं कामकैवर सिकार मैं सजब के। राव रामचन्द्रके लह-रवारे वानन ते गज मतवारे गिरैं मारे से गजब के ॥ ६०७॥

॥ पुनः ॥

करत कुरंगन की चौकड़ी चपल मन्द रंगदार वाजी वीर कौशल कुँवर को। लछिराम संग त्यों वकैती बरछैतन की, आनँदअपार मैं सिकार भराभरको ॥ अरना बराह बाघ फारे अधफारे परे, फरकैं महेश हेरि लोहूकी लहर को। कतरैं करेजा आँतरीनके लरेजा फोरि मनमथनेजालों बरेजा रघुवर को ॥ ६०८॥

॥ पुनः॥

सहज सिकारमें सवार होत वाजीपर, सङ्गमें लखन रघुबं-शिन झमेला के। वारैं भीर भामिनी हरान गज गौहरके कन्द मूल फूल फल दल वागमेला को॥ लछिराम गैंडा मृग रायमृग मारेपर, बिँहसैं किरात गाय गुन लहरेला को। हह-लत भूतन अचल रजरेला जब चौनला चलत रामचन्द्र अलबेला को ॥ ६०९ ॥

॥ पुनः॥

वारन बराह बाघ चीते चकचौंधे गिरैं अधफारे गैडनपै झमक झमेले की। कवि लछिराम धूम धामकी धमक धरा, अजब अतङ्क भारी भटनके मेले की॥ घन बन मन्दर शि-खर चकचूर होत, धूरि तैं अंधेरी औरैं वासरके बेले की ।

धीधिन धगर फुफकारसी फनाली जब दगत धुनाली रामचन्द्र अलबेले की ॥ ६१० ॥

॥ अथ परुषावृत्ति वर्णन—यथा कवित्त ॥

घनकत घण्टा घोर ठकिले मतंग मारू धौंसे की धमकसों धरातल त्यों धस कैं । गब्बर गनीमनके गढ़देस पारदसे कठिन करेजे धरपारनके कस कैं ॥ पट्टन असुर बीर बन विछलाने डरैं गजवके मारे गिरैं कन्दराहू धस कैं । राव रामचन्द्र चतुरङ्गिनी चमूके चलें डमाडोल मन्दर धराह डाढ़ मसकैं ॥ ६११ ॥

॥ पुनः ॥

धौंसे की धमक मारू ठकिले मतगन तें, कडाकड कमठ कठोर पीठ फूटे ना । लछिराम धसक मसक यों भयकर में भंग ते वृषभ की छटा लों छिति छूटेना ॥ हल चल होड़में सहसफन चूर ह्वैके, धनराय आपने हलाहलहि घूटे ना । राव रामचन्द्र रावरेके दलभार कहु टकराय दिग्गज बराह—रद टूटे ना ॥ ६१२ ॥

॥ पुनः ॥

उछरत उमाह रामचन्द्रके शिकार बीच क्रुद्ध वे तुरङ्ग जऊ बागें बरजत हैं । लछिराम रोर्डेपे कमानके चढ़त बान घन बन मन्दर आतङ्क तरजत हैं ॥ मृगनपे मृग मृगराजनपे मृगराज सूकरपे सूकर छतीले छरजत हैं । अधकटे गैंडनपे अधफटे गजराज गरद लपेटे ऑंतफेटे रजरत हैं ॥ ६१३ ॥

॥ पुनः ॥

करत कलोल क्रुद्ध कोटिन करौल सङ्ग बोलत नकीब बानी बिरद गँभीर की। उत ते लखन रिपुसूदन भरत बीर खोपरी बिदारैं मृगराजनके भीर की॥ छलबली चपल तुरङ्ग लछिराम तैसो, लहरैं बिगोरैं मृगमण्डलके धीर की। कुण्डलित कोरैं लहरेठी रङ्गदार फिरैं, फेंटी आँतवारन बरेठी रघुबीर की॥ ६१४॥

॥ पुनः ॥

मण्डलित छत्र नीचे कुण्डलित मोरवारी अजब अटेरन सिंगार भट भीर के। मृग मृगराज पै परत परवाज सम बड़पन राखैं रोष सागर गँभीर के॥ लक्कासे लगामते छलकि लछिराम हेरैं मन्दर शिखर मौजैं सुमन समीर के। ललकैं छटासे पटे बाजके पटासे फिरैं, नटके बटासे बाजि राम रघुबीर के॥ ६१५॥

॥ अमृतध्वनि ॥

सेना जब चतुरङ्गिनी महाराज रघुबीर।
असुरसमर हित सजतबर सँगरत धनु धर बीर॥
सँगरत धनुधर बीर बिरद गम्भीरध्घलकत।
गरजग्गजनि गँभीरज्जलधि जजीरच्छलकत॥
टुट्टत बिपिन सुकुट्टत अरिगढ़ जुट्टत जेना।
फुट्टत गिरिवर छुट्टत खलमद लुट्टत सेना॥ ६१६॥

॥ पुन ॥

सजत चारु चतुरङ्गिनी रामचन्द्र भूपाल ।
खल भल फैलत असुरपुर छुट्टतगढ़ विकराल ॥
छुट्टतगढ़ विकरालदश दिगपालहलकत ।
फुट्टत खलदल भालगज मतवालछलकत ॥
सगरसुखन समीर लसन गम्भीरगरजत ।
बजत नवल निसानसुभट कृपानसजत ॥ ६१७ ॥

॥ अथ कोमलाबासिवर्णन । यथा कवित्त ॥

देव दशरथ रामचन्द्रकी छठीके दिन, कविनपै कीने मौज हलके हजारे से । लछिराम लालित रतन हीर हौदे झूल भरके भशुण्डरद मौलि विकरारेसे ॥ भननात भौंर झनकारे लोह लङ्गरके धरन गणेश भालचन्दन सँवारेसे । गर गजरारे वे गयन्द गजरथ धारे, गुजरत गैल विन्ध्य परवत वारेसे ॥ ६१८ ॥

॥ पुनः ॥

तन मन वारि त्रिभुवनको सिंगार मानि, लोचन मलिन्द मैथिलीके हेरि फरके । शारद सुरेश अलकेश अमरेश भाल, भूपन तिलक जा पराग से निभरके ॥ लछिराम राव रामचन्द्र के चरन चारु, मञ्जलीक मोजमान आनँद समर के । सौरभ तरङ्ग सङ्ग जुगल भसीले राजें, रङ्गदार वारिज महान मानसर के ॥ ६१९ ॥

॥ पुनः ॥

सातौ सिन्धु सातों पुरी सातों रसातल स्वर्ग, सातों मुनि सातों द्वीप सातों स्वर गाजे हैं। लछिराम दीनबन्धु अधम उधारन त्यों, साँकरे उबारनके बिरद बिराजे हैं॥ बङ्का गढ़ लंका बलि रावन गरब गारि, आरत सुकण्ठ बिभीषन से निवाजे हैं। राव रामचन्द्र अवतारके अतङ्कहीमें, चार्यों युग डंका रघुबंशहीके बाजे हैं॥ ६२०॥

॥ पुनः ॥

मिलित महावर महीन मेंहदीके बुन्द बेषित नखनपर जोतिनभलीके हैं। कवि लछिराम आँगुरीन पै अजब ओज, सङ्ग सौज मोजमान चम्पक कलीके हैं। भानुबंश भूषन महीप रामचन्द्र चख' सीरे होत हेरि मनमोहन थलीके हैं। पल्लव बधूक कोकनद मद गारे ठारे, जुगल जसीले पद जनकललीके हैं ६२१

॥ पुनः ॥

सङ्ग शुभ तरल तरङ्ग गङ्ग रङ्ग पीवें, सन्त सुर सुजस सुधाके सरबत सो। लछिराम जालिम जसीले भुजदण्ड हेरि, असुर बिलात घनबन डरपत सो॥ वारों अमरेश रावरे पै राव रामचन्द्र, समता सँवारों कौन मँन तरपत सो॥ मालाकार मन्दर महान देव मण्डलमें, मङ्गलीक मौलि तू सुमेरु परवत सो॥ ६२२॥

॥ पुनः ॥

दशरथ देव देवि कौशिला सुकेकई त्यों सुमुखि सुमित्रा शारदाके समतानकी। लछिराम जामवन्त अङ्गद सुखेन आदि लङ्केश्वर सूरजसों विनय विधानकी॥ चारौं करजोरें गाय जस अघतश ओघ अरमान मनमें अभय वरदान की। श्रीगुरु सुमन्त त्यों भरत शत्रुहन मौलि, रामचन्द्र मैथिली लखन हनुमान की॥ ६२३॥

॥ पुनः ॥

मुनि मख राखि रूप गौतमी सँवारि तोरे, शम्भुधनु व्याही सिय सूरज अखारों में। मालि खर दूषन विधंस हेत रावनके, रामेश्वर थापि सेत सागर प्रचारों में॥ लछिराम तैंहीं महाराज रामचन्द्र धीर, त्रिभुवन मौलि छत्रपाल अवतारों में। दानी देव मन्दर पुरन्दर महीको ऐसो, धरम धुरन्धर न दूसरो निहारों में॥ ६२४॥

॥ पुनः ॥

सम्वत ससुनि वेद अंक विधु माघो मास, सित गुरु दशमी में पूरन प्रभासी को। सन्दीपन वंश रामहंस मानसिंह द्वार, विरद गवैया मन सब सविलासी को॥ राजा राव राने मरदाने सममाने और, चरित अपार ब्रह्म पावन प्रकासी को। रामचन्द्र भूषन अवध अभिराम रच्यो, लछिराम राव रामचन्द्र जसराशी को॥ ६२५॥

॥ दोहा ॥

सतकवि सन्त गुनीनसों, विनय करत लछिराम।
बिगरो बरन सुधारि हैं, चरित समुझि सियराम॥६२६॥

रामचन्द्र भूषन पढ़ैं, जो सप्रेम करि गौर।
अलङ्कार समुझैं द्रवैं, रामचन्द्र शिरमौर॥ ६२७ ॥

सुकवि रीझि हैं करि कृपा, तौ कविता लछिराम।
नतरु व्याजसों मैं रच्यो, श्री सियवर को नाम॥ ६२८ ॥

इति श्रीरामचन्द्रभूषण काव्ये लछिरामकविविरचिते
अर्थ शब्दालङ्कार व्याख्या सम्पूर्णम् शुभम्।

